105HN21

by Cde Anu

Submission date: 18-Jul-2025 11:52PM (UTC+0530)
Submission ID: 2716910737
File name: 105HN21.pdf (16.89M)
Word count: 44278
Character count: 173490

SPECIAL STUDY OF AN AUTHOR - PREMCHAND

M.A. Hindi, Semester-I , Paper-V

Complied by

DR. M. MANJULA
M.A., M.Phil. Ph.D.,
Lecturer in Hindi
Ramakrishna Hindu High School
Amaravathi, Guntur

Director

Dr.Nagaraju Battu
M.H.R.M., M.B.A., L.L.M., M.A. (Psy), M.A., (Soc), M.Ed., M.Phil., Ph.D.
Centre for Distance Education
Acharya Nagarjuna University
Nagarjuna Nagar-522510

Phone No.0863-2346208, 0863-2346222, Cell No.9848477441
0863-2346259 (Study Material)
Website: www.anucde.info
e-mail: anucdedirector@gmail.com

M.A. (Hindi): SPECIAL STUDY OF AN AUTHOR -PREMCHAND

First Edition: 2021

Reprint : 2022

No. of Copies

© Acharya Nagarjuna University

This book is exclusively prepared for the use of students of M.A. (Hindi) Centre for Distance Education, Acharya Nagarjuna University and this book is mean for limited circulation only

Published by

Dr.Nagaraju Battu

Director

Centre for Distance Education

Acharya Nagarjuna University

Nagarjuna Nagar-522510

Printed at

FOREWORD

Since its establishment in 1976, Acharya Nagarjuna University has been forging ahead in the path of progress and dynamism, offering a variety of courses and research contributions. I am extremely happy that by gaining 'A' grade from the NAAC in the year 2016, Acharya Nagarjuna University is offering educational opportunities at the UG, PG levels apart from research degrees to students from over 443 affiliated colleges spread over the two districts of Guntur and Prakasam.

The University has also started the Centre for Distance Education in 2003-04 with the aim of taking higher education to the door step of all the sectors of the society. The centre will be a great help to those who cannot join in colleges, those who cannot afford the exorbitant fees as regular students, and even to housewives desirous of pursuing higher studies. Acharya Nagarjuna University has started offering B.A., and B.Com courses at the Degree level and M.A., M.Com., M.Sc., M.B.A., and L.L.M., courses at the PG level from the academic year 2003-2004 onwards.

To facilitate easier understanding by students studying through the distance mode, these self-instruction materials have been prepared by eminent and experienced teachers. The lessons have been drafted with great care and expertise in the stipulated time by these teachers. Constructive ideas and scholarly suggestions are welcome from students and teachers involved respectively. Such ideas will be incorporated for the greater efficacy of this distance mode of education. For clarification of doubts and feedback, weekly classes and contact classes will be arranged at the UG and PG levels respectively.

It is my aim that students getting higher education through the Centre for Distance Education should improve their qualification, have better employment opportunities and in turn be part of country's progress. It is my fond desire that in the years to come, the Centre for Distance Education will go from strength to strength in the form of new courses and by catering to larger number of people. My congratulations to all the Directors, Academic Coordinators, Editors and Lesson- writers of the Centre who have helped in these endeavours.

Prof. P. Raja Sekhar
Vice-Chancellor
Acharya Nagarjuna University

SEMESTER - I
PAPER - V : SPECIAL STUDY OF AN AUTHOR
PREMCHAND

105HN21 **विशेष अध्ययन - प्रेमचन्द**

पाठ्य पुस्तकें :

1. उपन्यास : गोदान, सेवासदन, रंगभूमि ।
2. कहानियाँ : मानसरोवर भाग -1, (1-10 कहानियाँ मात्र) ।

1. कलम का सिपाही - प्रेमचंद - अमृतराय, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद ।
2. प्रेमचंद जीवनी और कृतित्व - हंसराज रहबर, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली ।
3. समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचंद - महेन्द्र भटनागर, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी ।

पाठ्यांश :

1. गोदान, सेवासदन, रंगभूमि ।

1. पृष्ठभूमिः हिन्दी उपन्यासों का उद्‌भव और विकास - प्रेमचंद तक, प्रेमचंद का उपन्यास साहित्य : एक विहांगावलोकन, रचनाशीलता के प्रेरणास्रोत, हिन्दी प्रदेश के समाज की संरचना और समस्याएँ, प्रेमचंद के उपन्यासों की केन्द्रीय वस्तु और विचारधारा ।
2. प्रेमचंद के उपन्यासों का विस्तृत अध्ययन :

सहायक ग्रंथ :

1. प्रेमचंद चिंतन और कला - इन्द्रनाथ मदान, सरस्वती प्रेस, बनारस ।
2. प्रेमचंद और गोदान : नव मूल्यांकन - कृष्णदेव झरी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी ।
3. प्रेमचंद आलोचनात्मक अध्ययन - राजनाथ शर्मा, विनोद पुस्तक मंदिर, आग्रा ।
4. प्रेमचंद : एक अध्ययन - राजेश्वर गुरू - एस. चन्द्र अण्ड को, दिल्ली ।
5. प्रेमचंद की कहानियाँ - एक अध्ययन ।

CONTENTS

	Pg. No
1.'सेवासदन' उपन्यास	1.1-1.15
2.'सेवा सदन' उपन्यास में 'गजाधर' के	2.1-2.4
3. 'विट्ठलदास' का चरित्र - चित्रण कीजिए।	3.1-3.3
4. पद्मसहिं के चरित्र-चित्रण पर प्रका डालिए	4.1-4.4
5. सदन के चरित्र पर उसकी निर्बलताओं पर प्रकाश डालते हुए अपने विचार प्रकट कीजिये।	5.1-5.3
6. 'सेवासदन' उपन्यास की समस्याओं एवं समाधान प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।	6.1-6.12
1. 'रंगभूमि' उपन्यास	1.1-1.4
2.'रंगभूमि' उपन्यास की कथावस्तु की प्रमुख विशेषताओं की समीक्षा कीजिए।	2.1-2.4
3.'रंगभूमि' में व्यक्त कथा-शिल्प तथा कला-सौष्ठव का मूल्यांकन कीजिए।	3.1-3.4
4.'रंगभूमि' में व्यक्त तत्कालीन भारतीय समाज का चित्रण प्रस्तुत कीजिए।	4.1-4.3
5.आधुनिक परिप्रेक्ष्य में 'रंगभूमि' उपन्यास में दर्शित समस्याओं का मूल्यांकन कीजिए।	5.1-5.3
6. 'रंगभूमि' उपन्यास में व्यक्त 'आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद' का मूल्यांकन कीजिए।	6.1-6.3
7. 'रंगभूमि' के 'सूरदास' का संक्षिप्त परिचय दीजिए।	7.1-7.1
8. प्रेमचन्द की उपन्यास-कला का मूल्यांकन कीजिए।	8.1-8.5
9. प्रेमचन्द के कृतित्व एवं उपन्यासकार के रूप में उनका मूल्यांकन कीजिये।	9.1-9.6
1. पुस्तक का नाम 'गोदान'	1.1-1.4
2. 'गोदान' उपन्यास में 'होरी' का चरित्र चित्रण कीजिए।	2.1-2.7
3. 'गोदान' उपन्यास में 'धनिया' का चरित्र-चित्रण कीजिए।	3.1-3.6
4. गोदान उपन्यास में गोबर का चरित्र चित्रण कीजिए।	4.1-4.6
5. गोदान उपन्यास के डॉ. मेहता का चरित्र चित्रण कीजिए।	5.1-5.4
6. रायसाहब का चरित्र-चित्रण कीजिए।	6.1-6.4
7. 'गोदान' उपन्यास में 'मिस मालती' का चरित्र - चित्रण कीजिए।	7.1-7.4

सेवासदन - प्रेमचन्द

अनुक्रमणिका :-

1. 'सेवासादन' उपन्यास के 'सुमन' का चरित्र - चित्रण कीजिए।
2. 'सेवासदन' उपन्यास में 'गजाधर' के चरित्र का विश्लेषण कीजिए।
3. 'विट्ठलदास' का चरित्र-चित्रण कीजिए।
4. 'पद्मसिंह' के चरित्र-चित्रण पर प्रकाश डालिए।
5. सदन के चरित्र पर और उसकी दुर्बलताओं पर प्रकाश डालते हुए अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
6. 'सेवासदन' उपन्यास की समस्याओं एवं समाधान प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।

'सेवासदन' उपन्यास

1. 'सेवासदन' उपन्यास के 'सुमन' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

रूपरेखा :-

1. प्रस्तावना
2. अनुपम सौन्दर्य की प्रतिमा
3. विलासिता के प्रति आकर्षित
4. रूपगर्विता
5. सुशिक्षित एवं चतुर नारी
6. संघर्षमय जीवन
7. निर्लिप्त जीवन
8. स्वाभिमान तथा बुद्धिमत्ता
9. धार्मिक – पथ
10. उपसंहार

1. प्रस्तावना :-

सुमन 'सेवासदन' उपन्यास की नायिका है। उपन्यास की वह सर्वाधिक शक्तिशलिनी है। अतुलित सौन्दर्य एवं सेवाभाव के समन्वय पात्र के रूप में वह उपन्यास में प्रस्तुत होती है। चंचल होते हुए भी वह चित्त की दुर्बलताओं को दूर करने की क्षमता रखती है। मांसल सौन्दर्य के साथ वह अत्यन्त अन्तर्दृष्टि रखती है।

2. अनुपम सौन्दर्य की प्रतिमा :-

सुमन मुग्ध मनोहरकारिणी अनुपम सौन्दर्य की प्रतिमा है। उस का सौन्दर्य चंचल स्वाभिमान युक्त होता है। लम्बे-लम्बे केश, कुन्दन का दमकता हुआ मुखचन्द्र, चंचल, सजीव मुस्कराती हुई आँखें, कोमल चपल गात, ईंगुर-सा भरा हुआ शरीर, अरुण वर्ण कपोल आदि से शोभित अतुलित सौन्दर्य की राशि के रूप में सुमन प्रस्तुत होती है। सुमन के लावण्यमय सौन्दर्य पर भोली बाई भी चकित होकर कहती है, ''अब तक सेठ बलभद्रदासजी मुझ से कन्नी काटते

फिरते थे, इस लावण्यमयी सुन्दरी पर भ्रमर की भाँति मण्डराएँगे। सुमन का सौन्दर्य 'सेवासदन' उपन्यास में आकर्षण का एक केन्द्र - बिन्दु है। सारी घटनाएँ तथा अन्यपात्र सुमन से प्रभावित हैं।''

3. विलासिता के प्रत आकर्षित :-

सुमन में भोग - विलास के प्रति अद्भुत ललक दिखाई देती है। भोग-विलास को वह सम्मान समझती है। भोलीबाई के ऐश्वर्य से प्रभावित होकर वह पति गजाधर से कहती है, ''वह चाहे तो हम - जैसों को नौकर रखले।'' इस सम्बन्ध में उपन्यासकार प्रेमचन्द स्वयं कहते हैं,''उसने गृहिणी बनने की नहीं, इन्द्रियों के आनन्द - भोग की शिक्षा पायी थी।''

सुमन में कुशल गृहिणी के लक्षण नहीं है। इसी कारण वह पति गजाधर के अल्पवेतन को वह खोमचे वालों की वस्तुओं को अकेले ही खा कर समय से पहले समाप्त कर देती है। पति गजाधर सुमन के रूपलावण्य पर मुग्ध हो वह सदा पत्नी को प्रसन्न रखना चाहता था। घर का सरारा काम वह स्वयं करता था। लेकिन सुमन ने गृहिणी बनने की नहीं, इन्द्रियों के आनन्द-भोग की शिक्षा पायी थी। सुमन की मोहिनी सूरत ने पति को वशीभूत कर लिया था। किन्तु सुमन जिह्वा-रस भोगने के लिए पति से कपट करती रहती है। उसके सौन्दर्य की चर्चा मुहल्ले में भी फैल जाती है। पडोसियों के बीच सुमन सौन्दर्य की रानी मानी जाती है।

पति गजाधर द्वारा सुमन घर से निकाल दी जाती है, तो विपत्ति के समय उसकी मनोवृत्तियाँ और भी प्रबल हो उठती हैं। वेश्या बनना वह अपना सौभाग्य समझती है। सुमनबाई बनने पर उसका आत्मकथन है - '' मेरा तो यह अनुभव है कि जितना आदर मेरा आज हो रहा है, उसका शतांश भी नहीं होता था। एक बार मैं सेठ चिम्मन लाल के ठाकुर द्वार पर झूला देखने गयी थी, सारी रात बाहर खडी भी गती रही, किसीने भीतर न जाने दिया, लेकिन कल उसी ठाकुर द्वार में मेरा गाना हुआ तो ऐसा जान पडता था, मानो मेरे चरणों से मन्दिर पवित्र हो गया। ''

विट्ठलदास के द्वारा दिये गये ज्ञान से प्रभावित हो वह वेश्या मार्ग को हेय समझकर कहती है, - ''आप सोचते होंगे कि भोग विलास की लालसा से कुमार्ग में आयी हूँ, पर वास्तव में ऐसा नहीं है। मैं ऐसी अन्धी नहीं कि भले - बुरे को पहचान न कर सकूँ। मैं जानती हूँ कि मैंने - अत्यन्त निकृष्ट कर्म किया है। लेकिन मैं विवश थी, इस के सिवा मेरे और कोई रास्ता न था।''

सुमन का यह आत्म-कथन नारी की दयनीय दशा का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। प्राय: तत्कालीन समाज में अपनी रक्षा का अन्य मार्ग न देख कर इन विचारों के अन्तर्द्वन्द्व में स्त्रियाँ वेश्या बन जाने के लिए बाध्य हो जाया करती थीं। गजाधर का यह कथन इसकी पुष्टि करती है- ''मेरी असज्जनता और निर्दयता सुमन की चंचलता और विलास लालस ने मिलकर हम दोनों का सर्वनाश कर दिया।''

कथानक की चरम परिणति में अपनी दुर्दशा का श्रेय विलास - प्रवृत्ति को त्याग देते हुए समुन कहती - ''नहीं, मैं किसी को दोष नहीं दे सकती, बुरे कर्म तो मैंने किए हैं, उनका फल कौन भोगेगा? विलास - लालसा ने मेरी यह दुर्गति की। मैं कैसी अन्धी हो गई थी, केवल इन्द्रियों के सुख-भोग के लिए अपनी आत्मा का नाश कर बैठी।'' प्रेमचन्द लिखते हैं - यह सुमन है या उसका शव, अथवा उसकी निर्जीव मूर्ति? उस वर्णहीन मुख पर विरक्ति, संयम तथा आत्म-त्याग की निर्मल शान्तिदायिनी ज्योति झलक रही थी।

4. रूपगर्विता :-

सुमन का चंचल स्वभाव उसे अस्थिर करता है और उसके गृहिणी स्वरूप को भी विकृत कर देता है। वह अपने इसी स्वभाव को समस्त आपत्तियों का कारण मानती है। सुमन अपने अन्तस से कहती है - ''हाँ! प्रभो! तुम सुन्दरता देकर मन को क्यों चंचल बना देते हो? मैंने सुन्दर स्त्रियों को प्राय: चंचल ही पाया। कदाचित, ईश्वर इस युक्ति से हमारी आत्मा की परीक्षा करते हैं, अथवा जीवन-मार्ग में सुन्दरता रूपी बाधा आग में डाल कर उसे चमकाना चाहते हैं, पर हाँ। अज्ञानवश हमें कुछ नहीं सूझता, यह आग हमें जला डालती हैं, वह बाधा हमें विचलित कर देती है।''

इस प्रकार सुमन अपने आत्मकथन द्वारा व्यक्त कर देती है कि स्त्री का गौरव, सौन्दर्य एवं महत्त्व स्थिरता में है।

5. सुशिक्षित एवं चतुर नारी :-

सुमन सुशिक्षित, विदुषी एवं चतुर नारी है। वह समय - समय पर धार्मिक पुस्तकों, रामायण आदि का अध्ययन करती रहती है। उसमें किसी बात को समझाये जाने पर अच्छे और बुरे का अन्तर करने की अद्‌भुत क्षमता है। वेश्या बन जाने पर रातों में वह सदैव ज्ञान - चक्षु, खोल कर इस तथ्यपर मनन करती है - 'जो शान्तिमय सुख सुमन को प्राप्त है, क्या वह मुझे मिल सकता है? असम्भव! जहाँ तृष्णा-सागर है, वहाँ शान्ति - सुख कहाँ है?

आदर एवं निर्लज्जता के सम्बन्ध में कहे गये कथन भी उसके सांसारिक ज्ञान के परिचायक हैं – आज चाहे समझते हों कि आदर और सम्मान की भूख बडे आदियों को ही होती है, किन्तु दीन दशावाले प्राणियों को उसकी भूख और भी अधिक होती है, क्यों कि उनके पास इन को प्राप्त करने का कोई साधन नहीं है। वह इनके लिए चोरी, छल–कपट, सब कुछ कर बैठते हैं। आदर में वह सन्तोष है जो धन और भोग – विलास में नहीं है।'

''यहाँ आकर मुझे मालूम हो गया है कि निर्लज्जता सब कष्टों से दुस्सह है और कष्टों से शरीर को कष्ट होता है, इस कष्ट से आत्मा का संहार हो जाता है।''

सुमन के प्रति विट्ठल दास का कथन है – ''सुमन, तुम वास्तव में विदुषी हो।''

6. संघर्षमय जीवन :-

'सेवासदन' उपन्यास में सुमन ऐसी नारी का प्रतिनिधित्व करती है जो समस्त आपत्तियों का सामना स्वयं करती है। अपने द्वारा किये गये अच्छे या बुरे कर्मों का फल भोगने के लिए स्वयं तैयार है।

''मैं सहानुभूति की भूखी थी, वह मुझे मिल गयी। अब मैं अपने जीवन का भार आप लोगों पर नहीं डालूँगी आप केवल मेरे रहने का प्रबन्ध कर दें जहाँ मैं विघ्न– बाधा से बची रह सकूँ।''

''मैं परिश्रम करूँगी। अपनी निर्लज्जता का कर आप से न लूँगी।''

7. निर्लिप्त जीवन :-

सुमन सब कुछ क्रीडापूर्वक करती है और बडे ही विनोदपूर्ण ढंग से परिस्थितियों के साथ स्वयं आनन्दित रहती है। दालमण्डी छोडते समय वह अपने प्रेमियों को बिदा करती है। उस समय प्रकृति हास्य से परिपूर्ण दृष्टिगोचर होती है।

वह सिगरेट की एक डिबिया मँगवाती है और वारनिश का एक बोतल मँगाकर ताक पर रख देती है और एक कुर्सी का एक पाया तोड कर कुर्सी छज्जे पर दीवार के सहारे रखदेती है। पाँच बजते – बजते मुंशी अनुलवफा को आते है। इधर–उधर की बातें करने के पश्चात सुमन बोलती है – ''आइए, आज आप को वह सिगरेट पिलाऊँ कि आप भी याद करें।'' सुमन सलाई रगडकर अबुलवफा की दाढ़ी का सर्वनाश कर देती तो हँसी उसके ओठों पर आ जाती है। इस प्रकार विनोद क्रीडा में वह सब कुछ भूल कर हास्य का आनन्द लेती है।

8. स्वाभिमान तथा बुद्धिमत्ता :-

सुमन बडी स्वाभिमानिनी है। वह किसी के सामने अपने को ही मानकर नहीं आती, पडोसियों ने उसके सौन्दर्य रीति, व्यवहार और गुणों पर मुग्ध हो कर उसका नेतृत्व स्वीकार कर लिया था। अपने इस गुण के कारण ही वह प्रत्येक क्षेत्र में अपना वर्चस्व चाहती है। पडोसियों के मध्य वेश्या बन जाने पर दालमण्डी में इसी प्रवृत्ति के कारण आधिपत्य स्थापित कर पाती है। आश्रम में सेवाधर्म का पालन करके पति के घर सारे कष्ट झेल कर भी रानी बन कर सम्मान से रहने वाली महत्त्वाकांक्षी प्रवृत्ति का प्रदर्शन करती है। वह मानिनी सगर्वा नारी के रूप में विलसित चरित्रवाली है।

सुमन चंचल प्रकृति की नायिका है, जिसके कारण उसकी बुद्धि आच्छन्न हो गई थी और वह भोली के आश्रय तक आ पहुँचती थी, किन्तु उसके बौद्धिक रूप का जागरण भी उपन्यास के घटनाक्रम में बुद्धिमत्ता की ओर इंगित करता है। विट्ठलदास की धार्मिक बातों से उसके उच्छृंखल बौद्धिक विचारों में परिवर्तन आता है। वह अपने झोंपडे में सन्तुष्ट रहती है। अन्त में प्रत्युपकार करने की भावना भी उस में जागरित होती है।

9. धार्मिक पथ :-

सुमन वेश्या जीवन के कारण समाज में तिरस्कृत होती है। चंचलता और तृष्णा से विरक्त हो वह धार्मिक पथ का अनुसरण करती है। धन की अपेक्षा वह सेवा - निरत हो जीवन को परिवर्तित कर देती है। उसका त्यागमय जीवन और सेवा-भाव उसे अत्यन्त ऊँचे स्थान पर बैठा देते हैं।

10. उपसंहार :-

अन्त में गजानन्द सुमन की प्रशंसा में कहता है, ''मैं ने तुम्हें आश्रम में देखा, सदन के घर में देखा, तुम सेवाव्रत में मग्न थीं, तुम्हारे लिए ईश्वर से यही प्रार्थना करता था। तुम्हारे हृदय में दया है, ऐम है, सहानुभूति है और सेवा - धर्म के यही साधन हैं, तुम्हारे लिए उसका द्वार खुला है।''

अपनी इसी भावना के द्वारा सुमन 'सेवासदन' को आदर्शमय तथा उन्नत अवस्था पर पहुँचा देती है। निस्स्वार्थ त्याग वृत्ति से उसका चरित्र प्रकाशित होता है।

उपन्यास में सुमन एक सुन्दर, चंचल और अभिमानिनी के रूप में दर्शाती है। अन्त में आकर केशहीना, आभूषण हीना और रूप लावण्य के स्थान पर पवित्रता की ज्योति के रूप में दिखाई देती है।

Lesson Writer

डॉ. शेख मौला अली

2. 'सेवा सदन' उपन्यास में 'गजाधर' के चरित्र का विश्लेषण कीजिए।

रुपरेखा :-

1. प्रस्तावना
2. क्रोधी प्रवृत्ति
3. निर्धनता
4. अव्यवस्थित चित्त
5. सामाजिक व्यंग्य
6. आत्मोद्धार का मार्ग
7. उपसंहार

1. प्रस्तावना :-

'सेवासदन' नायिका प्रधान उपन्यास है। नायक निश्चित करना कठिन है, परन्तु उपन्यासकार की विचारधारा को अभिव्यक्त करने वाला पात्र गजाधर होने के कारण उसी को इस उपन्यास का नायक कहना उचित होगा। जीवन पर्यन्त दुखों को भोगते हुए कथानक की चरमसीमा के समय सुखद और त्यागमय जीवनकी ओर वह अग्रसर होता है। नायिका भी आजीवन अलग मार्ग पर चलकर अन्त में नायक के उपदेशों से प्रभावित होकर उसी का अनुसरण करती है। इसके अलावा कथानक में स्थान - स्थान पर गजाधर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अत: वही नायक होने का आदर पात्र है।

2. क्रोधी प्रवृत्ति :-

गजाधर वस्तुत: क्रोधी स्वभाव वाला है। पत्नी सुमन के गृह-निर्वाह में कुशल न होने केकारण और अत्यन्त शंकालु स्वभाववाला होने के कारण उसका क्रोध व्यक्त होता रहता है। छोटी - छोटी बातों पर वह सुमन पर क्रोध प्रकट करता है, जैसे - ''रूपये तो तुमने खर्च कर दिये, अब बताओं कहाँ से आये? ...... तो मैं डाका तो नहीं मार सकता।'' आदि छोटी - छोटी बातों पर उसका क्रोधी स्वभाव प्रकट होता जाता है। उसके क्रोध का प्रधान कारण गृहस्थी में आर्थिक संकट है।

सुमन भोली बाई के घर जाकर देर से लौटती गजाधर और उत्तेजित होता है। वह सुमन को डाँटता है और सुमन भी अपना समाधान देती जाती है।

गजाधर :- तुम इतनी रात तक वहाँ बैठी क्या कर रही थी ? क्या लाज - शर्म बिलकुल घोलकर पी ली है ?

सुमन :- उसने कई बार बुलाया तो चली गयी। कपडे उतारो, अभी खाना तैयार हुआ जाता है। आज तुम और दिनों से जल्दी आये हो।

गजाधर :- पहले यह बताओ कि तुम वहाँ मुझ से पूछे बिना गयी क्यों? क्या तुमने मुझे बिलकुल मिट्टी का लोंदा ही समझ लिया है ?

सुमन :- सारे दिन अकेले इस कुप्पी में बैठे भी तो नहीं रहा जाता।

गजाधर :- तो इसलिए अब वेश्याओं से मेल - जोल करोगी ? तुम्हें अपनी इज्जत-अबरू का भी कुछ विचार है ?

सुमन :- क्यों, भोली के घर जाने में कोई हानि है ? उसके घर तो बडे-बडे लोग आते हैं, मेरी क्या गिनती है !

गजाधर :- बडे-बडे भले ही आवें, लेकिन तुम्हारा वहाँ जाना बडी लज्जा की बात है।

छोरी सी बात पर भी इस प्रकार गजाधर अवांछित गति से उग्र रूप धारण कर सुमन पर टूट पडता है। धर्म का महत्त्व वह धन से कहीं बडा मानता है।

एक दिन गजाधर नियमानुसार रातनौ बजे धर आता है। किवाड बन्द था। पता लगा सुमन सुभद्रा के धर गयी है। दस बज गये तो उसने खाना परसा। लेकिन क्रोध में कुछ खाया न गया। उसने सारी रसोई उठाकर बाहर फेंक दी और भीतर विवाड बन्द करके सो रहा। किन्तु नीन्द न लगी तो वह द्वार पर स्वयं बैठता है। सुमन एक बजे घर पहुँचती है तो गजाधर उसे उसी वक्त बाहर कर देता है।

गजाधर स्वभावतः

कृपण है। जलपान की जलेबियाँ उसे विष के समान लगती हैं। दाल में घी देख कर उसके हृदय में शूल होने लगता है। दरवाजे पर दाल-चावल फेंका देख कर शरीर में ज्वाला सी लग जाती है। खाने - पीने में भी अधिक व्यय हो जाने पर गजाधर को कष्ट का अनुभव होता है। सुमन की अनुपस्थिति में उसका संशयशील हृदय खा - पीकर बराबर की गर्व दशा में बहुत दु:खी रहता है।

3. निर्धनता :-

गजाधर निर्धन है। उसकी आर्थिक कमजोरी सुमन के लिए शाप बन जाती है। फल स्वरूप प्रत्येक परिस्थिति में घटित होने वाली घटना को वह इसका मूल कारण मानती है। इस दशा पर सुमन की उक्तियों से गजाधर का हृदय धक - धक करता है।

''इतने रूपयों में बरकत थोडे ही हो जायेगी।''

× × ×

''वह चाहे तो हम जैसों को नौकर रख लें।''

ये उक्तियाँ निर्धन चरित्र का सफल और यथार्थ चित्रण देती है। स्वयं गजानन्द का कथन भी उसकी निर्धनता को द्योतित करता है - ''निर्धन था, इसीलिए आवश्यक था कि मैं धन के अभाव को अपने प्रेम और भक्ति से पूरा करता। मैं ने इसके विपरीत उस से निर्दयता का व्यवहार किया। उसे वस्त्र और भोजन का कष्ट दिया।''

4. अव्यवस्थित चित्त :-

गजाधर अव्यवस्थित -चित्त का व्यक्ति है। परिणाम के बारे में सोचे बिना ही वह कार्य करता है। पत्नी सुमन के प्रति वह दुर्व्यवहार करता है - ''अपने गहने-कपडे लेती जा, यहाँ कोई काम नहीं है।'' कहते हुए वह पत्नी को घर से निकाल देता है।

5. सामाजिक व्यंग्य :-

गजाधर सामाजिक व्यंग्य भी करता है। वेश्या -नाच की माँग किए जाने पर वह जन समूह को सम्बोधित करता है, ''देखिए - चलो मैं नाचदिखाऊँ'' - ''चलो मैं नाच दिखाऊँ। देवताओं का नाच देखना चाहते हो? देखो, सामने वृक्ष की पत्तियों पर निर्मल चन्द्र की किरणें कैसी नाच रही हैं। देखो, तालाब में कमल के फूल पर पानी की बूँदे कैसी नाच रही हैं। जंगल में जाकर देखो, मोर पर - फैलाये कैसे नाच रहा है। क्यों यह देवताओं का नाच पसन्द नहीं है? अच्छा चलो, पिशाचों का नाच दिखाऊँ - तुम्हारा पड़ोसी दरिद्र किसान जमींदार के जूते खाकर कैसा नाच रहा है। तुम्हारे भाइयों के अनाथ बालक क्षुधा से बावले होकर कैसे नाच रहे हैं। अपने घर में देखो, विधवा भावज की आँखों में शोक और वेदना के आँसू कैसे नाच रहे हैं। क्या यह नाच देखना पसन्द नहीं? तो अपने मन को देखो, कपट और छल कैसा नाच रहा है। सारा संसार नृत्यशाला है। उसमें लोग अपना - अपना नाचु नाच रहे हैं।

क्या यह देखने के लिए तुम्हारी आँखें नहीं हैं? आओ, मैं तुम्हें शंकर का तांडव नृत्य दिखाऊँ। किन्तु तुम वह नृत्य देखने योग्य नहीं हो। तुम्हारी काम - तृष्णा को इस नाच का क्या आनन्द मिलेगा। हाँ! अज्ञान की मूर्तियो! विषयभोग के सेवको! तुम्हें नाच का नाम लेते हुए लज्जा नहीं आती! अपना कल्याण चाहते हो तो इस रीति को मिटाओ। कुवासना को तजो, वेश्या - प्रेम का त्याग करो।''

गजाधर के इस उपदेश में जो शक्ति है, वास्तव में वही उसे इस उपन्यास के नायक पद पर प्रतिष्ठित करने वाली है। उसका लोगों को वेश्या का नृत्य देखने से वर्जित करने का ढंग कितना सुन्दर है। दूसरी भाषा में उसके द्वारा लोगों को कुप्रवृत्ति से अलग करना उसके श्रेष्ठ चरित्र का परिचायक है।

6. आत्मोद्धार का मार्ग :-

सुमन को निकालने के पश्चात् अकस्मात् उसके स्वभाव में कुछ परिवर्तन आता है और वह पहले की अपेक्षा कुछ अधिक उदार प्रकृति वाला हो जाता है। गत जीवन का स्मरण कर वह सेवा - धर्म स्वीकार कर लेता है। निर्वाण मार्ग पर चलने के लिये सेवा - धर्म ही श्रेष्ठ है। यह सिद्ध करने वाला गजानन्द का कथन - ''अज्ञान अविद्या के अन्धकार में पड़े हुए मेरे पास अपना उद्धार करने का साधन न रहा, न ज्ञान था, न विद्या थी, न भक्ति की सामर्थ्य थी। मैंने अपने बन्धुओं की सेवा करने का निश्चय किया। यही मार्ग मेरे लिए सबसे सरल था। तब से मैं यथाशक्ति इसी मार्ग पर चल रहा हूँ और अब मुझे अनुभव हो रहा है आत्मोद्धार के मार्गों में केवल नाम का अन्तर है। मुझे इस मार्ग पर चलकर शान्ति मिली है और मैं तुम्हारे लिये भी यह मार्ग सबसे उत्तम समझता हूँ।'' अक्षरश: सत्य प्रतीत होता है। नि:स्वार्थ भावना का महत्त्व समझाते हुए नायिका को भी इस मार्ग के लिए प्रेरित करना उसके नायकत्व की पुष्टि करता है।

उपन्यासकार ने 'उन्होंने निर्धनों की कन्याओं का उद्धार करने के निमित अपना जीवन अर्पण कर दिया, इस अन्तिम परिच्छेद में यह लिखकर उसके त्यागमय व्यक्तित्व पर पूर्ण रूप से प्रकाश डाल दिया है।

7. उपसंहार :-

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि गजाधर के चरित्र में मानवीय कमजोरियाँ भी उसकी चारित्रिक श्रेष्ठता को प्रभावित नहीं करतीं। एक साधारण सामाजिक दरिद्र मनुष्य के रूप में उसके स्वभाव का जो रूप होना चाहिए, वह प्रेमचन्द ने बड़े ही शान्तिपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है। यह उपन्यासकार की अद्‌भुत वर्णनात्मक क्षमता तो है ही, गजाधर के चरित्र को ऊँचा भी उठाती है।

Lesson Writer

डॉ. शेख मौला अली

3. 'विट्ठलदास' का चरित्र - चित्रण कीजिए।

रूपरेखा :-

1. प्रस्तावना
2. समाज सुधारक
3. हिन्दू जाति के प्रति अनुराग
4. देश भक्त
5. न्यायप्रिय
6. नारी सहृदयता

1. प्रस्तावना :-

'सेवासदन' उपन्यास में विट्ठलदास एक आदर्श चरित्रवान के रूप में प्रस्तुत होते हैं। उनका आदर्श उनके पुरुषार्थ, जाति-सेवा, समाज-सेवा, देश-प्रेम, निस्सायों की सहायता करने, सुधारक तथा सेवा संस्थाएँ स्थापित करने, न्यायप्रियता, स्त्रियों के प्रति आदर भाव में व्यक्त होता है। उच्च शिक्षा न पाकर भी वह समाज में सर्वमान्य बनते हैं। पद्मसिंह के वे घने मित्र है।

2. समाज - सुधारक :-

विट्ठलदास अपने शुरू किए हुए कार्य को पूरी लगन एवं पुरुषार्थ से पूरा करते हैं। अनाथालयों के लिए चन्दा जना करने एवं विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति का प्रबन्ध करने में वह अपना सुख और स्वार्थ भी भूल जाते थे। वह सत्य के मार्ग पर पूरी ईमानदारी से चलने वाले पात्र हैं। वह नि:स्वार्थ सेवा के प्रतीक हैं। पद, मान आदि का उन्हें लोभ नहीं है। उनके विषय में उपन्यासकार कहता है -

''वह चाहते थे कि महाशयजी को म्युनिसिपैलिटी में कोई अधिकार दे, पर विट्ठलदासजी राजी नहीं होते। वह नि:स्वार्थ कर्म की प्रतिज्ञा को नहीं तोड़ना चाहते । उनका विचार है कि अधिकारी बनकर वह इतना हित नहीं कर सकते जितना पृथक् रहकर कर सकते हैं।''

3. हिन्दू जाति के प्रति अनुराग :-

हिन्दुओं के प्रति विट्ठलदासजी के हृदय में एक विशेष अनुराग है। वह हिन्दू जाति में फैली बुराइयों को दूर करने के लिए प्रयत्नशील जागरूक नागरिक की भाँति सदेव संलग्न दिखाई देते हैं। हिन्दू जाति की मर्यादा को बचाने के लिए विट्ठलदास का कथन देखिये – ''सुमन तुम सच कहती हो, बेशक हिन्दू-जाति अधोगति को पहुँच गयी और अब तक वह कभी भी नष्ट हो गयी होती, पर हिन्दू-स्त्रियों ही न अभी तक उसकी मर्यादा की रक्षा की है। उन्हीं के सत्य और सुकीर्ति ने उसे बचाया है। केवल हिन्दुओं की लाज रखने के लिए लाखों स्त्रियाँ नाना प्रकार के कष्ट भोगकर, अपमान और निरादर सहकर पुरुषों की अमानुषीय क्रूरताओं को चित्त में न लाकर हिन्दू जाति का मुख उज्जवल करती थीं। यह साधारण स्त्रियों का गुण था और ब्राह्मणियों का तो पूछना ही क्या? पर शोक है कि यही देवियाँ अब इस भाँति मर्यादा का त्याग करने लगीं। सुमन मैं स्वीकार करता हूँ कि तुमको घर पर बहुत कष्ट था। माना कि तुम्हारा पति दरिद्र था, क्रोधी, चरित्रहीन था, माना कि उसने तुम्हें घर से निकाल दिया था, लेकिन ब्राह्मणी अपनी जाति और कुल के नाम पर यह सब दुःख झेलती है। आपत्तियों को झेलना और दुरावस्था में स्थिर रहना, यही सच्ची ब्राह्मणियों का धर्म है, पर तुमने वह किया जो नीच जाति की कुलटाएँ किया करती हैं। सुमन, तुम्हारे इस कर्म ने ब्राह्मण जाति ही का नहीं, समस्त हिन्दू-जाति का मस्तक नीचा कर दिया।'' उनके हिन्दू-जाति के सच्चे संरक्षक होने एवं ब्राह्मणों के प्रति विशेष आदर भाव को सूचित करता है।

4. देशभक्त :-

विट्ठलदास देश के उत्थान के लिए अपने कर्त्तव्यों के प्रति पूरी तरह सजग हैं। आदर्श एवं सच्चे देशभक्त के रूप में उनका चरित्र अनुकरणीय है। देश की उन्नति के लिए किये गये प्रयासों में यह दृष्टव्य है –

''मेरा पहला उद्देश्य है, वेश्याओं को सार्वजनिक स्थान से हटाना और दूसरा वेश्याओं के नाचने – गाने की रस्म को मिटाना।''

''कृषकों की सहायता के लिए एक कोष स्थापित करना एवं बीज और रुपये नाम मात्र सूद पर उधार देना।'' ''विवाह में इतने रुपये आपने पानी में डाल दिये। किसी शुभ कार्य में लगा देते तो कितना उपकार होता।'' इसके अतिरिक्त अकाल के समय सिर पर आटे का गट्ठर लादकर गाँव-गाँव घूमना तथा अपनी सारी सम्पत्ति देश को अर्पण करना उनके सच्चे देश-प्रेमी होने का सूचक है।

5. न्यायप्रिय :-

विट्ठलदास न्याय के पथ से हटने वाले का साथ छोड़ देते थे। चाहे वह उनका मित्र ही क्यों न हो। वह न्याय-पथ पर अटल रहते थे। उनकी न्यायप्रियता पर प्रकाश डालते हुए उपन्यासकार का कहना है, ''अब सारे शहर में उनका कोई मित्र न था।'' अर्थात् सारे मित्र न्याय-पथ से बिचलित हो गये थे। सुमन के सम्बन्ध में संस्था को न बताने पर वह अपने बारे में कहते हैं - ''मेरे उद्देश्य चाहे कितना ही प्रशंसनीय हो, पर उसे गुप्त रखना सर्वथा अनुचित था।'' यह स्वकथन उनकी कर्त्तव्यनिष्ठा को भी द्योतित कर रहा है।

6. नारी सहृदयता :-

विट्ठलदास स्त्रियों के प्रति अत्यन्त सहृदय हैं। उनके प्रति आदर-सम्मान की भावना से वह पूरी तरह पूर्ण हैं। उपन्यास में नारी जब-जब दयनीय दशा को पहुँचती है, यह तब-तब उसके उन्मूलन के लिए सुझावों को देते हुए कार्यान्वित करते हैं। सुमन की पतित दशा को देखकर निकले उनके उद्गार - ''स्त्रियों को अगर ईश्वर सुन्दरता दे तो धन से वंचित न रखे। धन-हीन सुन्दर चतुर स्त्री पर दुर्व्यसन का मन्त्र शीघ्र ही चल जाता है।'' सत्य के कितने निकट है, यह समझने की बात है। स्त्रियों की दुरावस्था का कारण वह उनकी निर्धन स्थिति को मानते हैं।

विवाहित शान्ता को लाने के लिए वह पद्मसिंह से कहते हैं -

विट्ठलदास :- शान्ता को बुला लाइए।

पद्मसिंह :- सारे घर से नाता टूट जायेगा।

विट्ठलदास :- टूट जाय, कर्त्तव्य के सामने किसी का भय?

पद्मसिंह :- भैया को अप्रसन्न करने का साहस एवं सामर्थ्य मुझमें नहीं।

विट्ठलदास :- अपने यहाँ न रखिए, विधवाश्रम में रख दीजिए, यह तो कठिन नहीं, स्त्रियों का उद्धार करना वह एक धर्म - कार्य मानते थे।''

उपन्यासकार विट्ठलदास को आदर्श चरित्रवान व्यक्ति के रूप में प्रतिनिष्ठित करने में पूरी तरह सफल हुआ है।

Lesson Writer

डॉ. शेख़ मौला अली

4. पद्मसिहं के चरित्र-चित्रण पर प्रका डालिए।

1. प्रस्तावना :-

पद्मसिंह एक आचारवान् और विचारवान् व्यक्ति हैं। सत्यता एवं उदारता जैसे गुणों का उनमें स्वभाव से ही अंकर जमा हुआ है और वह अंकुर एक लहलहाते पौधे के रूप में प्रस्फुटित भी हुआ है। इसी कारण वह उपन्यास के मुख्य पात्रों में एक विशेष स्थान भी रखते हैं, परन्तु अपने कोमल और उदार हृदय के कारण वह अपनी आदर्शवादी विचारधारा के प्रति ऐसे अवसरों पर निर्बल दिखाई देते हैं, जहाँ उन्हें ऐसा नहीं होना चाहिए था। यही कारण है कि वह मित्रों की व्यंग्योक्ति के भय से मुजरे का प्रबन्ध करते हुए दिखाई देते हैं और लोकापवाद के भय से सुमन को आश्रय नहीं दे पाते। पद्मसिंह के घर में घटित होने वाली यही घटना उपन्यास के कथानक का केन्द्र-बिन्दु बन जाती है। इसके परिणामों एवं दुष्परिणामों से पद्मसिंह का चरित्र पूर्णयता प्रभावति है। इसलिए उपन्यास के अंत तक घटना से उत्पन्न दोषों के लिए वह स्वयं को अपराधी भी ठहराते हैं।

इसी परिप्रेक्ष्य में हमें उनके चरित्र का मूल्यांकन करना भी उचित होगा। वह सत्यवादी हैं, परन्तु आत्मग्लानिपूर्ण उनका सुमन के लिए पश्चाताप निश्चय ही उनकी भूरुता से लड़ने की जैसे वास्तविक भूमिका है। वेश्याओं के नाच के विषय में पूछे जाने पर वह अपने को दोषी मानते हुए कहते हैं – ''अब क्या एक घर जलाकर वही खेल खेलता रहूँगा? उन दिनों मुझे न जाने क्या हो गया था, मुझे अब यह निश्चय हो गया है कि मेरे उसी जलसे ने सुमन को घर से निकाला।''

2. गरीबों के प्रति उदार भावना :-

गरीबों के प्रति पद्मसिंह के हृदय में अतुलित सहानुभूति पाई जाती है। उनके इस कथन – ''जो धन गरीब बाजे वाले, फुलवारी बनाने वाले, आतिशबादी वाले पाते है वह 'मुरे कम्पनी' के हाथों में पहुँच गया। मैं इसे किफायत नहीं कहता, यह अन्याय है।'' यहाँ अन्याय शब्द से तात्पर्य गरीबों को पर्याप्त न मिलने से है। विवाह के अवसर पर अन्य वस्तुओं पर धन खर्च करने को वह इसीलिए न्यायसंगत मानते हैं, क्योंकि वह व्यय गरीबों के लिए सहायक सिद्ध होता है। इसलिए सदन के विवाह के समय वेश्या-नृत्य की जगह दीन-दरिद्रों में कम्बल बाँटने एवं कुआँ बनवाने में रुपया खर्च करते हैं।

3. आदर्शवादी :-

पद्मसिंह समाज के प्रति अपरने उत्तरदायित्व को समझने वाले व्यक्ति हैं। अतः वह समाज के हर एक वर्ग के साथ खड़े दिखाई देते हैं। जो समाज के किसी व्यक्ति के अन्याय का शिकार है, चाहे

वह घर से निकाली गयी सुमन हो या दालमण्डी की वेश्याएँ या शांता इन सबको वह अपना मानते हैं। वेश्याओं को नगर से दूर रखने के लिए दिये गये उनके प्रस्ताव सराहनीय हैं। मदनसिंह द्वारा वेश्या-नाच पर जोर देने पर पद्मसिंह ने अफना मन्तव्य इस प्रकार दिया - ''एक ओर भाई की अप्रसन्नता थी, दूसरी ओर सिद्धान्त और न्याय का बलिदान। एक ओर अँधेरी घाटी थी, दूसरी ओर सीधी चट्टान मिलने का कोई मार्ग न था। अन्त में उन्होंने डरते-डरते कहा - ''भाईसाहब, आपने मेरी भूलें कितनी बार क्षमा की हैं। मेरी एक बात और क्षमा कीजिए। आप जब नाच के रिवाज को दूषित समझते हैं तो उस पर इतना जोर क्यों देते हैं?''

''पद्मसिंह'' :- यह तो विचार कीजिए कि कन्या की क्या गति होगी? उसने क्या अपराध किया है?

मदनसिंह :- तुम हो निरे मूर्ख! संसार में व्यवहार में वकालत से काम नहीं चलता।

पद्मसिंह :- लेकिन शोक है कि इस कन्या का जीवन नष्ट हो जायगा।

उपर्युक्त सम्वाद से पद्मसिंह की उच्च आदर्शवादिता पर पर्याप्त प्रकाश पड़ रहा है।

4. सहृदयता :-

गाँव-घर की बात करते समय कोई कुर्मी, कहार, लोहार, चमार ऐसा न बचा जिसके सम्बन्ध में पद्मसिंह ने कुछ न कुछ न पूछा हो। छोटे-बड़े सब के प्रति उनके सम भाव ही दिखाई दे रहे हैं। बड़े भाई के बेटे को पुत्र-तुल्य मानने वाले पद्मसिंह सुभद्रा की व्यंग्यपूर्ण वार्ता सुनकर कहते हैं - ''तुम क्या चाहती हो कि सदन के लिए मास्टर न रखा जाय और वह यों ही अपना जीवन नष्ट करे। चाहिए तो यह था कि तुम मेरी सहायता करतीं, उल्टे और जी जला रही हो। सदन मेरे उसी भाई का लड़का है जो अपने सिर पर आटे-दाल की गठरी लादकर मुझे स्कूल में दाखिल कराने आये थे। मुझे वह दिन भूले नहीं हैं। उनके उस प्रेम को स्मरण करता हूँ तो जी चाहता है कि उनके चरणों पर गिर कर घंटों रोऊँ।''

उनके विचारों के सम्बन्ध में उपन्यासकार का कथन हैं - ''हमारे मन के विचार कर्म के पथप्रदर्शक होते हैं. पद्मसिंह ने झिझक और संकोच को त्यागकर कर्मक्षेत्र में पैर रखा। वही पद्मसिंह, जो सुमन के सामने भाग खड़े हुए थे, आज दिन में दोपहर में दालमण्डी के कोठों पर बैठे दिखायी देने लगे। उन्हें अब लोकनिन्दा का भय न था, मुझे लोग क्या कहेंगे इसकी चिन्ता न थी, उनकी आत्मा बलवान् हो गयी थी, हृदय में सच्ची सेवा का भाव जाग्रत हो गया था। कच्चा फल पत्थर मारने से भी नहीं गिरता, किन्तु पककर आप धरती की ओरआकर्षित हो जाता है। पद्मसिंह के अन्तकरण में सेवा

का, प्रेम का भाव परिपक्व हो गया था। अर्थात् कर्मक्षेत्र में उन्होंने अपनी चारित्रिक दृढ़ता पर स्वयं विश्वास करने लगे हैं।''

5. उदारता :-

पद्मसिंह म्यूनिसिपैलिटी के मेम्बर बनने पर प्रीतिभोज करना चाहते हैं, जबकि उनके कई मित्र मुजरे पर जोर देते हैं। इस सन्दर्भ में उपन्यासकार ने उनके श्रेष्ठ आचरण पर प्रकाश डाला है- ''यद्यपि वे स्वयं बड़े आचारवान् मनुष्य थे, तथापि कुछ अपने सरल स्वभाव से, कुछ कुसौहार्द्र से और कुछ मित्रों की व्यंग्योक्ति के भय से वह अपने पक्ष पर अड़ न सकते थे।'' यही बात ऐसी थी जो यह दर्शाती है कि वह प्रारम्भ में अपने कर्म-क्षेत्र के आदर्श पक्ष पर मन से खड़े जरूर थे, परन्तु सामाजिक स्नेह और प्रारम्भ में अपने झुकाव के कारण उसे कर्म-क्षेत्र के साथ दृढ़ रूप से संयोजित नहीं कर पाये थे। परन्तु आदर्शवाद की ओर उनका हृदय स्पष्ट रूप से बड़ी ईमानदारी से झुका हुआ था।

पद्मसिंह का यह पत्र उनके श्रेष्ठ आचरण एवम् उच्च विचारधारी पर अच्छा प्रकाश डालता है - ''आपको यह सुनकर असीम आनन्द होगा कि सुमन अब दालमण्डी में एक कोठे पर विराजमान है। आपको स्मरण होगा कि होली के दिन वह अपने पति के भय से मेरे घर पर चली आयी थी और मैंने सरल रीति से उसे इतने दिनों तक आश्रय देना उचित समझा, जब तक उसके पति का क्रोध न शान्त हो जाय। पर इसी बीच में मेरे कई मित्रों ने, जो मेरे स्वभाव से सर्वथा परिचित थे, मेरी उपेक्षा तथा निंदा करनी आरम्भ की। यहाँ तक कि मैं उस अभागिन अबला को अपने घर से निकालने पर विवश हुआ और अन्त में वह उसी पापकुण्ड में गिरी, जिसका मुझे भय था। अब आपको भली-भाँति ज्ञात हो जायेगा कि इस दुर्घटना का उत्तरदाता कौन है। और मेरा उसे आश्रय देना उचित था या अनुचित।'' इस पत्र से मालूम होता है कि वह अपने किये पर किस प्रकार स्वयं कष्ट अनुभव कर रहे थे। यह पत्र उन्होंने अपने उसी मित्र को लिखा था, जिसने सुमन के प्रतिष्ठित करना अपना कर्तव्य समझते हैं।

6. उपसंहार :-

पद्मसिंह-जैसे मनुष्य एक क्षण में ही उस खेल से नहीं निकल पाते, जिसमें रहकर उन्होंने सम्मान पाया हो, लोक में अपना स्थान बनाया हो। उनके मन का आदर्शवाद, यथार्थ कुरूपता को मिटाने का संकल्प, उदारता और मित्रों के साथ जुड़ी भावना के प्रवाह में यदि कभी वह गया तो हमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए। वह अपने इसगलत प्रवाह के प्रति सचेत हो गये, यह उनके चरित्र की महानता का द्योतक है कि अन्त तक अपने आदर्शों का निर्वाह करने के लिये अडिग होकर खड़े हो गये।

उच्च विचारधारा का रूप बड़ा स्पष्ट है। वह एक स्थल पर कहते हैं – ''जिन आत्माओं को हम उपदेश से, प्रेम से, शिक्षा से उद्धार कर सकते हैं, वे सदा के लिए हमारे हाथ से निकल जायेंगी। हम लोग स्वयं माया – मोह के अंधकार में पड़े हुए हैं, उन्हें दण्ड देने का कोई अधिकार नहीं रखते।'' पद्मसिंह की क्षमा और दया में दिखाई देता है।

Lesson Writer

डॉ. शेख मौला अली

5. सदन के चरित्र पर उसकी निर्बलताओं पर प्रकाश डालते हुए अपने विचार प्रकट कीजिये।

1. प्रस्तावना :-

'सेवासदन' में नवयुवक के रूप में सदन के चरित्र का विकास होता है। परिस्थितियों के अनुसार अपने चरित्र में सुधार करने वाला यह एक गतिशील चरित्र के रूप में उमड़ता है। अपने चाचा पद्मसिंह की फैशन की सामग्रियों से प्रभावित होकर यह गाँव छोड़कर शहर जाता है। गाँव को छोड़कर शहर की तरफ दौड़ना उसके फैशन के प्रति होने वाली सहज लालसा वाले गुण को दिखा रहा है, जो एक नवयुवक में होना स्वाभाविक है। उसके चरित्र के माध्यम से उपन्यासकार ने वेश्या - प्रेम और नये प्रेम (अर्थात् विवाह के पश्चात् होने वाले प्रेम की) सुन्दर व्याख्या प्रस्तुत की है। साथ ही धार्मिक एवं सामाजिक प्रथाओं का सूक्ष्म निरूपण किया है। उसके चरित्र की कतिपय विशिष्टताओं को निम्न शीर्षकों द्वारा भली-भाँति प्रकट किया जा सकता है-

2. स्वच्छन्द व्यवहार :-

यौवन-काल की चंचलता और स्वच्छन्दता को सदन के चरित्र-अवलोकन मात्र से ही देखा जा सकता है। उपन्यासकार का यह कथन- "धीरे-धीरे सदन के चित्त की चंचलता यहाँ तक बढ़ी कि पढ़ना-लिखना सब छूट गया। मास्टर आते और पढ़ाकर चले जाते। लेकिन सदन को उनका मन हर घड़ी बाजार की ओर लगा रहता, वही दृश्य आँखों में फिरा करते, रमणियों के हाव-भाव और मृदु मुस्कान के स्मरण में मग्न रहता।" सदन की चंचल प्रकृति को स्पष्ट करता है।

3. स्वभाव में परिवर्तन :-

सदन के विचार मर्यादा के क्षेत्र के प्रति पूर्णरूपेण उपेक्षापूर्ण हैं, परन्तु घटनाएँ उसकी उस उपेक्षा को दूर करती हैं। वह सामाजिक मर्यादाओं को आदर देने के प्रति ही नहीं, अपितु, अपने विगत जीवन को एक नया मोड़ देने की ओर भी झुकता है। एक समय कभी वह जिस सुमन पर आसक्त था, उसी से यह कहता है - "बाईजी, आपने पहले ही मेरा मुँह बन्द कर दिया है, इसलिए मैं कैसे कहूँ कि जो कुछ किया मेरे बड़ों ने किया, मैं उनके सिर दोष रखकर अपना गला नहीं छुड़ाना चाहता। उस समय लोक-लज्जा से भी डरता था। इतना तो आप भी मानेंगी कि संसार में रहकर संसार की चाल चलनी पड़ती हैं. मैं इस अन्याय को स्वीकार करता हूँ, लेकिन यह अन्याय हमने नहीं किया, वरन् उस समाज ने किया है, जिसमें हम लोग रहते हैं।" इस कथन द्वारा हमें उसकी संकुचित विचारधारा का परिचय मिल जाता है।

मर्यादा का क्षेत्र जब विस्तृत अर्थात् उदार हो जाता है तो बदलते हुए विचार स्वत: ही व्यापक हो जाते हैं, तब यह सुधारवादी दृष्टिकोण कर्तव्यपरायणता का रूप धारण कर लेता है। इन्हीं परिवर्तित विचारों का सुन्दर समागम सदन के गतिशील चरित्र में दृष्टव्य है – ''सदन को ऐसी ग्लानि हो रही थी मानो उसने कोई बड़ा पाप किया हो. वह बार–बार अपने शब्दों पर विचार करता है और यही निश्चय करता है कि मैं बड़ा निर्दयी हूँ। मुझे संसार का इतना भय क्यों है? संसार मुझे क्या देता है? क्या केवल झूठी बदनामी के भय से मैं उस रत्न को त्याग दूँ, जो मालूम नहीं मेरे पूर्वजन्म की कितनी तपस्याओं का फल है? अगर अपने धर्म का पालन करने के लिए मेरे बन्धुगण मुझे छोड़ दें तो क्या हानि है? लोकनिन्दा का भय इसलिए है कि वह हमें बुरे कामों से बचाती है। अगर वह कर्त्तव्य–मार्ग में बाधक हो तो उससे डरना कायरता है....... लोक–निन्दा का भय मुझसे यह अधर्म नहीं करा सकता, मैं उसे मँझधार में न डूबने दूँगा। संसार जो चाहे कहे, मुझसे यह अन्याय न होगा।''

4. मनोदशा की पवित्र विचारधारा :-

स्थान–स्थान पर आये हुए अन्तर्द्वन्द्व, सदन की कतिपय चारित्रिक विशेषताओं का प्रकटीकरण कर देते हैं। उदाहरणस्वरूप – ''हाय! मैं कैसा कठोर पाषाण–हृदय हूँ। वह रमणी जो किसी रनिवास की शोभा बन सकती है, मेरे सम्मुख एक दीन, दया–प्रार्थी के समान खड़ी रहे और मैं जरा भी न पसीजूँ? वह ऐसा अवसर था कि मैं उसके चरणों पर सिर झुका देता और हाथ जोड़कर कहता, देवि! मेरे अपराध क्षमा करो!'' गंगा से जल लाता और उसके पैरों पर चढ़ाता जैसे कोई उपासक अपनी इष्ट देवी को चढ़ाता है। पर मैं पत्थर की मूर्ति के सदृश खड़ा अपनी कुल–मर्यादा का बेसुरा राग अलापता रहा। हाँ, मंद बुद्धि! मेरी बातों से उसका कोमल हृदय कितना दु:खी हुआ होगा। यह उसके मान करने से ही प्रकट होता है, उसने मुझे शुष्क, प्रेम–विहीन, घमंडी और धूर्त्त समझा होगा, मेरी ओर आँख उठाकर देखा तक नहीं। वास्तव में मैं इसी योग्य हूँ। यह अन्तर्द्वन्द्व सदन के प्रत्युत्पन्न मति न होने पर प्रकाश डाल रहा है।

5. उपदेशों को धारण करने की दृढ़ता :-

साधारणत: लोग उपदेश सुनते हैं और उन्हें वह जहाँ सुनते हैं वहीं छोड़ भी आते हैं, क्योंकि उन्हें धारण करने की क्षमता नहीं होती। ऐसा कोई विरला ही होता है जो उन्हें धारणा करे, सदन का हृदय और व्यवहार–परिवर्तन उसे उनमें से ही एक बना देता है।

आदर्श समाज के उत्सव एवं विभिन्न व्याख्यानों को सुनने से उसके तार्किक शक्ति का प्रादुर्भाव होता है और वह सत्यासत्य का निर्णय लेने की अद्भुत क्षमता आ जाती है। उपन्यासकार का यह कथन – ''अपनी अवस्था के अनुकूल उसकी समालोचना पक्षपात से भरी हुई और तीव्र होती थी उसमें इनती उदारता न थी कि वह विपक्षियों की नेकनीयती को स्वीकार करो।'' उसकी समालोचक दृष्टि को व्यक्त करता है।

6. सौन्दर्याकर्षण :-

यौवन के वेग में बहे हुए मनुष्य के स्वाभाविक चरित्र और व्यवहार से वह अछूता नहीं है। वह सुमन के प्रति आकर्षित होता है, क्योंकि सौन्दर्य के प्रति आकर्षण उसकी ही नहीं बल्कि उसकी उम्र के हर युवक की कमजोरी हो सकती है। हृदय-परिवर्तन के बाद वह शान्ता के सौन्दर्य का अभिनन्दन करता है। सुमन की मनोहारिणी मूर्ति उसके कल्पना लोक में सुसज्जित हो जाती है। वह इस सरल सौन्दर्य-मूर्ति को अपना प्रेम अर्पण करने का परम अभिलाषी है। सुमन के प्रति उसके आसक्त होने का कारण भी उसका सौन्दर्य था और था उसका युवक हृदय।

7. उपसंहार :-

अपने जीवन में दृढ़ निष्ठा रखने की पक्की लगन से वह ओत-प्रोत है। प्रारम्भ में एक नाव लेकर अन्त में पाँच नावें लेकर स्टीमर लेने की योजना एवं गंगा के किनारे झोंपड़े में व्यवसाय बढ़ाने के लिये रहना उसकी पक्की लगन का द्योतक है।

उसके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए प्रेमचन्द लिखते हैं – ''वह अत्यन्त रूपवान, सुगठित, बलिष्ठ युवक था। देहात में रहा, न पढ़ना, न लिखना, न मास्टर का भय न परीक्षा की चिन्ता, सेरों दूध पीता था, उस पर कसरत का शौक। शरीर बहुत सुडौल निकल आया था। चेहरे पर गम्भीरता और कोमलता के स्थान पर वीरता और उद्दंडता झलकती थी। आँखे मतवाली, सतेज और चंचल थीं। उसने रंग-रूप, ठाट-बाट पर बूढ़े-जवान सबकी आँखे उठ जातीं। युवक उसे ईर्ष्या से देखते, बूढ़े स्नेह से। लोग राह चलते – चलते उस एक आँख देखने के लिए ठिठक जाते। दुकानन्दर समझते किसी रईस का लड़का है।''

Lesson Writer

डॉ. शेख मौला अली

6. 'सेवासदन' उपन्यास की समस्याओं एवं समाधान प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।

1. प्रस्तावना :-

सेवासदन उपन्यास में दहेज की समस्या, समाज की झूठी नैतिकता, रूढ़िवादिता आदि विविध प्रश्न उभरे है। विधवाओं और विशेष-रूप से वेश्याओं के सुधार और आर्थिक निर्वाह की समस्या पर विस्तार के साथ चर्चा की गई है।

प्रस्तुत उपन्यास की कहानी कृष्णाचन्द्र दरोगा की दो पुत्रियों-सुमन और शान्ता की कहानी है। उनकी पत्नी का नाम गंगाजली है। कृष्णाचन्द्र सीधे-साधे आदमी थे। वह घूँस (रिश्वत) नहीं लेते थे। गृहस्थी चलाने तथा अपनी लड़कियों की हर इच्छा को पूरा करने में उनका पूरा वेतन खर्च हो जाता था। वे कुछ बचा नहीं पाये और जब सुमन विवाह लायक हो गयी, तो उनके सामने दहेज की समस्या उत्पन्न हो गयी। परिस्थितियों से विवश होकर उन्हें महन्त रामदास से तीन हजार रुपये घूँस के रूप में लेने पड़े। परन्तु उनकी कलई खुल गई और उन्हें चार वर्ष के कारावास का दण्ड मिला। आर्थिक कठिनाई के कारण सुमन का विवाह विधुर गजाधर प्रसाद नामक पन्द्रह रुपये मासिक पाने वाले क्लर्क से करना पड़ा, जो सुमन से आयु में कहीं बड़ा था। सुमन की चटोरी जीभ और सबसे बढ़-चढ़कर दिखावे की भावनाओं के कारण सुमन और गजाधर का वैवाहिक जीवन शीघ्र ही विपमय हो गया।

2. पति परित्यक्त नारी :-

सुमन को पति ने घर से निकाल दिया। वह हारकर पद्मसिंह वकील के घर, जिनकी पत्नी से संयोगवश उसका मेलजोल हो गया था, पहुँचती है। पर वे भी लोकापवाद के भय के कारण उसे अपने यहाँ अधिक समय तक शरण न दे सके। सुमन के घर के सामने भोली नामक एक वेश्या रहती थी। वह शायद उसके प्रति किसी सुषुप्त आकर्षणश वहीं पहुँचती है। भोली को उसने सभ्य समाज में, यहाँ तक कि स्वयं पद्मसिंह की महफिल में भी अपार सम्मान पाते देखा था। अभी तक वह वेश्याओं के सम्बन्ध में यही सुनती आई थी कि उनका जीवन गर्हित होता है, उन्हें ठोकरें खानी पड़ती हैं, पर यहाँ आकर भोली का जीवन और उसे मिलने वाले सुखों को देखकर उसके संस्कार डाँवाडोल होने लगे थे। भोली ने उसकी इस मन:स्थिति का पूरा लाभ उठाया और फलस्वरूप सुमन शीघ्र ही वेश्या बन गयी। पद्मसिंह का भतीजा सदनसिंह सुमन के पास बहुत आने-जाने लगा। सुमन नहीं जानती थी कि वह पद्मसिंह का भतीजा है, जिस दिन उसे सच्चाई का ज्ञान हुआ उसने सदनसिंह को प्रोत्साहन देना बन्द कर दिया।

सदनसिंह ने सोचा वेश्याएँ उपहारों से प्रसन्न रहती हैं, इसलिए वह अपनी चाची का हार चुराकर लाता है और सुमन को उपहार देता है, जिसे वह दूसरे ही दिन पद्मसिंह के यहाँ लौटा आती है।

विट्ठलदास नामक समाज-सुधारक को सुमन के वेश्या बन जाने से बड़ा दुःख पहुँचता है। वह सुमन को समझा - बुझाकर उस जीवन से बाहर निकालना चाहता है, लेकिन सुमन अपने जीवन की दयनीयता, और नारी जीवन की विवशताओं को ऐसे तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करती है कि विट्ठलदास निरुत्तर हो जाता है। समाज-सुधारकों की सहायता से विधवाश्रम नामक संस्था चल रही थी। सोच-विचार के बाद तय हुआ कि सुमन वेश्यलय छोड़कर विधवाश्रय में जायगी। उधर उसकी छोटी बहिन शान्ता का विवाह सदनसिंह से तय हो जाता है, बारात आती है, पर विरोधियों ने सुमन को लेकर ऐसा प्रचार किया कि बारात लौट गयी और शान्ता का विवाह न हो सका। बनारस में दालमण्डी (विश्याओं के बाजार) को शहर से बाहर ले जाने की बात चल रही थी। वहीं आकर एक दिन क्वीन्स पार्क में सदनसिंह ने वेश्या-सुधार सम्बन्धी एक भाषण सुना, जिससे उसका मन बदलजाता है। वह सुमन की याद को भुला नहीं पाता, पर अपनी कुत्सित वृत्तियों पर विजय पा लेता है। एक दिन वह सुमन को गंगा - स्नान करते देखता है, पर उसके मुर्झाए हुए चेहरे को देखकर उससे मिलने का उसे साहस नहीं होता और वह बिना मिल ही लौट आता है। जेल से छूटकर आने के बाद कृष्णचन्द्र को सुमन और शान्ता के बारे में ज्ञात होने पर बड़ा आघात पहुँचता है। वे आधी रात को घर छोड़कर निकल जाते हैं। रास्ते में उनकी भेंट सुमन के पति से होती है जो आत्मग्लानि से अभिभूत होकर साधू हो गया था। वह कृष्णचन्द्र से सारी सत्य बातें बताता है और सुमन के पतित होने के पीछे अपने को ही दोषी बताता है। इससे कृष्णचन्द्र के दिल का बोझ कुछ कम होता है, किन्तु वे जीवन के प्रति एक प्रकार से निराश हो चले थे। गजाधर के सो जाने के बाद वे चुपके से उठे और गंगा में छलांग लगाकर डूब गये।

पद्मसिंह का मन भी जीवन के राग-रंग से बड़ा उचट गया था। उन्होंने वकालत को छोड़कर अपना सारा समय समज-सुधार एवं धर्म-सम्बन्धी कार्यों में देना प्रारम्भ कर दिया। उन्हें एक दिन शान्ता का पत्र मिला, जिसमें उसने उन्हें धर्मपिता कहकर सम्बोधित किया था और अपनी शरण में ले-लेने की विनती की थी। विट्ठलदास के परामर्श से शान्ता बुलाई जाती है और सुमन के साथ विधवाश्रम में रख दी जाती है। एक दिन शान्ता को सदन ने ग्रहण कर लिया। सुमन एक अनाथालय की शिक्षिका बन जाती है, जिसे स्वंय गजाधर ने खोला था और उसकी देखरेख करते थे।

3. समस्या :-

इस उपन्यास की प्रमुख समस्या के सम्बन्ध में मतभेद है। प्राय: यह समझा जाता है कि 'सेवासदन' में वेश्या की समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। एक सुविज्ञ का कहना है कि 'सेवासदन' उपन्यास में यद्यपि अप्रत्यक्ष रूप से दहेज की समस्या, समाज की झूठी नैतिकता का पाखण्ड, रूढ़िवादिता आदि अनेक प्रश्न आये हैं, परन्तु जिस प्रश्न को लेकर प्रेमचन्दजी ने प्रत्यक्ष रूप से और विस्तार के साथ विचार किया है, वह है - विधवाओं और विशेषत: वेश्याओं के सुधार और आर्थिक निर्वाह का प्रश्न। एक-दूसरे जानकार का कहना है कि उन्होंने इस उपन्यास में अबला स्त्री और मध्य वर्ग की समस्या को लेकर समाज के लगभग समस्त पहलुओं पर प्रकाश डाला है। उपन्यास मूलत: सुधारवादी है, लेकिन प्रेमचन्द न समाज में फैली हुई बुराइयों का यथार्थ कारण ढूँढ़ निकाला है और उसके लिए व्यक्तियों को दोषी न ठहराकर वर्तमान सामाजिक पद्धति को जिम्मेदार ठहराया है।

कथावस्तु का विस्तृत विश्लेषण करने पर प्रतीत होता है कि प्रेमचन्द के हृदय में समाज के उस अंग के प्रति भी सम्मानित स्थान है, जिसे हेय दृष्टि से देखा जाता था। वेश्याओं का समुदाय और अछूतों का जीवन उनके निकट त्याज्य नहीं है। दूसरे शब्दों में, प्रेमचन्दजी भारतीय आदर्शों के अनुकूल आत्मा की अनवरत परिशुद्धि में विश्वास रखते हैं। 'सेवासदन' इसी मंगल आदर्श को सम्मुख रखता है। सुमन जो 'सेवासदन' की मुख्य पात्री है, और जिसका जीवन उपन्यास की समस्त घटनाओं का केन्द्र है, यद्यपि बीच में पथ से विचलित हो जाती है, पर अन्त में वेश्याओं की छोटी लड़कियों के सुकुमार हृदयों का संस्कार करने के लिए अपने जीवन का उत्सर्ग कर देती है। वस्तुत: 'सेवासदन' में मध्यवर्गीय समाज की एक ज्वलन्त समस्या - नारी-जीवन की समस्या पर आलोक डाला गया है। समाज की जिन जीर्ण मान्यताओं के कारण मध्यवर्गीय परिवारों का भयानक पतन होता है, वे ही समस्याएँ इस उपन्यास का केन्द्र हैं। दहेज प्रथा, असंगत विवाह, वेश्या-वृत्ति आदि का इसमें सुधारात्मक निरूपणा है। नारी की आर्थिक पराधीनता इन प्रश्नों के मूल में है। सामाजिक परिस्थितियों से विवश होकर अनेक नारियों को वेश्या-वृत्ति के विगर्हित मार्ग का अवलम्बन करना पड़ता है। 'सेवासदन' में प्रेमचन्द ने वेश्या-समस्या को उठाकर उसके माध्य से नारी जीवन की यातनाओं का चित्रण किया है।

इस उपन्यास की प्रधान समस्या है, अर्थात् भारतीय समाज में स्त्री कितनी पराधीन थी, तथा उस समय वह कितना दयनीय, परवश और निराश्रित जीवन व्यतीत कर रही थी, उसकी पराधीनता, उसकी निस्सहायता से समाज में पशुओं-जैसे स्थिति हो गयी थी, परन्तु सुमन को वेश्या जीवन तक पहुँचाकर तथा बाद में उसे वेश्याओं के सुधार-कार्य में प्रवृत्त करके उपन्यासकार वेश्या-समस्या पर विशेष ध्यान

केन्द्रित करता-सा लगता है। हालांकि सुमन वेश्याओं की प्रतिनिधि नहीं है, वह पीड़ित नारी है जो परिस्थितिवश वेश्या बनी है, परन्तु सुमन स्वयं वेश्याओं का प्रतिनिधित्व भी करती है। वैसे प्रेमचन्द ने इस बात को स्पष्टता के साथ कहा है कि उनका ध्यान वेश्या - समस्या पर ही मुख्यतया केन्द्रित नहीं रहा है। वे चाहते थे कि लड़कियों की शिक्षा सद्गृहणियों के निर्माण के दृष्टिकोण से होनी चाहिए। सुमन ने गृहणी बनने की नहीं, इन्द्रियों के आनन्दभोग की शिक्षा, पाई थी। यह प्रेमचन्द को असह्य था। सुमन का हाल यह था कि महीने के दस दिन बाकी रहते थे, किन्तु वह सब रुपये खर्च कर देती थी। वही सुमन अन्त में कहती है, ''हमारा कर्त्तव्य इन कन्याओं को चतुर गृहणी बनाने का होना चाहिए।'' यही वस्तुत: पेमचन्दजी चाहते थे।

पुलिस के चरित्र पर भी प्रेमचन्द ने दारोगा कृष्णचन्द्र के माध्यम से प्रकाश डाला है। पुलिस विभाग कितना भ्रष्ट है और किसी ईमानदार व्यक्ति की वहाँ कितनी दुर्गति हो सकती है, अर्थात् पुलिस विभाग में रिश्वत के लिए बिना कोई व्यक्ति आर्थिक - रूप से सुखी नहीं रह सकता। हमारे समाज का जो परम्परागत वर्ग, धर्माचारी, मठाधीश, धनपति और समाज-सुधार तथा देशानुराग सम्बन्धी लम्बी-लम्बी बातें करने वालों का था, वे कितने खोखले, चरित्रहीन हैं, इसका एक यथार्थ चित्र खींचकर प्रेमचन्द ने समाज पर तीखा व्यंग्य किया है। भोली वेश्या धनपतियों के यहाँ और मठाधीशों के यहाँ जाती है, वहाँ सम्मान पाती है, पर वही लोग व्यक्तिगत-रूप से वेश्यावृत्ति की आलोचना करते हैं। समाज में कितना दम्भ है, मिथ्या गर्व है। इस उपन्यास में उन्होंने अनमेल विवाह की समस्या पर भी प्रकाश डाला है। सुमन का विवाह किसी अच्छे घर में हो सकता था, पर सुमन के पिता धनी न थे। शान्ता के विवाह के लिए भी कृष्णचन्द्र के साले उमानाथ को बराबर चिन्ता बनी रहती है। सुमन का गजाधर के साथ अनमेल विवाह हुआ था। दोनों की आयु में काफी अन्तर था। सुमन आराम से रहना करती थी। उसकी उमंगें यौवन की ओर उन्मुख थीं, पर गजाधर तीस वर्ष का अधेड़ है, इसलिए दोनों में तनाव हो जाता है।

हिन्दू समाज की कैसी कुप्रवृत्ति है। सुमन ने विट्ठलदास से केवल पचास रुपये प्रतिमाह की माँग की थी, जिसके लिए समाज के हर तबके के लोगों के पास बेचारा विट्ठलदास जाता है, पर सफल नहीं हो पाता। पद्मसिंह अवश्य घोड़ागाड़ी को बेचकर रुपये देने को तैयार हो जाता है, नहीं तो किसी में इतना नैतिक साहस न था। साम्प्रदायिकता से कोई समस्या हल नहीं हो सकती, प्रेमचन्द ने यह चित्रित करने का प्रयत्न किया है।

इस प्रकार नारी समस्या, वेश्या समस्या, पुलिस विभाग की रिश्वत, समाज का खोखलापन, साम्प्रदायिक संकीर्णता, नैतिकता का ह्रास, साहस एवं आत्मविश्वास की कमी, निर्धनता, सूझ-बूझ एवं दूरदर्शिता का अभाव तथा कृषक समस्या आदि समस्याओं की प्रेमचन्द ने इस उपन्यास में विवेचना की है। यह वस्तुत: उनका पहला उपन्यास है जिसमें प्रेमचन्द ने इतना व्यापक दृष्टिकोण प्रदर्शित किया है।

4. सुधारवाद :-

प्रेमचन्द के साहित्य को पढ़ने से स्पष्ट होता है, उनकी प्रवृत्ति सुधारवादी थी, अत: उपन्यास भी लेखक की उस प्रवृत्ति की देन है। वैसे भी लेखक सुधारवादी युग का था। राजनीति के क्षेत्र में नेतागण, समाज में सुधारक-समूह तथा साहित्य-जगत् में लेखक-वर्ग विभिन्न सामाजिक कुप्रथाओं का निवारण करने के लिए प्रयत्नशील थे। 'सेवासदन' में प्रेमचन्द जी क्रान्तिकारी के रूप में नहीं, सुधारक के रूप में हमारे सम्मुख आते हैं। वेश्या-समस्या का समाधान भी उन्होंने प्रस्तुत किया है। अपनी आदर्शवादी जीवन्-दृष्टि के अनुसार उन्होंने नगर के बाहर उनके निवास का आयोजन कर और स्वस्थ एवं संयमित जीवन-यापन की इच्छुक आत्माओं के लिए आश्रम की स्थापना कर वेश्या - समस्या को सुलझाने का उपाय किया है। प्रेमचन्द ने 'निर्मला' या 'गोदान' में यह दृष्टिकोण नहीं अपनाया था। वस्तुत: वे जीवन के व्याख्याता कम, द्रष्टा अधिक थे। उसी दृष्टि से उन्होंने साहित्य का सृजन किया है। इसमें प्रधान कथा दरोगा कृष्णचन्द्र के परिवार से सम्बन्धित है, जिसकी दो शाखाएँ हैं - एक शाखा का सम्बन्ध सुमन से है, दूसरी का सम्बन्ध शान्ता से है। इन दो के अतिरिक्त तीसरा महत्त्वपूर्ण अंश म्युनिसिपैलिटी से सम्बन्धित है। इन तीनों अंशों में सुमन और शान्ता का सम्बन्ध प्रेमचन्द ने अच्छी तरह से निभाया है और तीनों में अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है परम्युनिसिपैलिटी वाला अंश अनावश्याक-सा प्रतीत होता है। यदि वह न भी होता, तो मुख्य कथा पर कुछ पहुँचता।

इस कथानक में सुमन के गृहत्याग तक का अंश तो बहुत सुव्यवस्थित है। इसमें तीव्रता भी है, सुसंगठित रूप में आगे भी बढ़ता है, किन्तु उसके बाद भी तो कथानक के सूत्र जैसे बिखर गये हैं। इसीलिए कथानक में सुमन के गृहत्याग के बाद शिथिलता आ गयी है।

प्रेमचन्द ने सुमन को दालमण्डी (वेश्याओं के बाजार) में पहुँचा दिया है, पर वहाँ के उसके जीवन को भली भाँति उभार नहीं पाए हैं। सम्भवत: प्रेमचन्द को सुमन का दालमण्डी में रहना रुचिकर नहीं प्रतीत होता और कदाचित् उनकी सुधार-वृत्ति यहाँ अधिक तीव्र हो गयी है, इसीलिए यहाँ वह स्थान रिक्त - सा प्रतीत होता है। कला की दृष्टि से यह दोष ही है। इसके बाद सुमन की कथा की गति समान रूप से प्रवाहित होती हुई दृष्टिगोचर नहीं होती। सुमन के गृहत्याग की गति पहाड़ी नदी की तरह

उछलती - कूदती-सी प्रतीत होती है, पर उसके बाद लगता है कि वे सुमन की गति को जबरदस्ती घसीटते से प्रतीत होते है। उपन्यास के अन्त में वेश्याओं की तकरीरें निरर्थक है। गजाधर जिस प्रकार साधू के वेश में बीच-बीच में आवश्यकतानुसार आ जाता है, वह भी प्रेमचन्द की उपन्यास-कला का दुर्बल पक्ष प्रस्तुत करता है, हम यह तो जान जाते हैं कि वह गजानन्द है, पर बार-बार वह कहाँ से आ टपकता है, इसे प्रेमचन्द स्पष्ट नहीं कर पाते। यह उनकी कला की दृष्टि से बहुत अच्छी बात नहीं है। उनकी कला में देव-संयोग से घटित होने की आश्यकता पर प्रेमचन्द ने असंतुलित ढंग से बल दिया है। प्रेमचन्द ने अपने अन्य सामाजिक उपन्यासों की भाँति इस उपन्यास में भी हास्य-प्रसंगों की सृष्टि की है।

5. पात्रों का वैविध्या :-

प्रस्तुत उपन्यास में पात्रों की भीड़-भाड़ बहुत अधिक है। यह उपन्यास चरित्र-प्रधान नहीं है। इस उपन्यास की नायिका सुमन के चरित्र-चित्रण में प्रेमचन्द ने अपनी सूक्ष्म पर्यवेक्षण दृष्टि और नारी-मनोविज्ञान का परिचय दिया है। सुमन के चरित्र में उसके मानसिक संघर्ष का चित्रण भी उन्होंने सफलतापूर्वक किया है।

सामन्त वर्ग का प्रतिनिधित्व कुँवर अनिरुद्धसिंह करते हैं। वे उच्च शिक्षा-प्राप्त तथा उदार विचारों के व्यक्ति हैं। उन्होंने अपनी कूपमण्डूकता छोड़कर कुछ प्रगतिशीलता को आत्मसात किया है। वे साहित्य-प्रेमी हैं, भाषा-प्रेमी हैं और भारत की दरिद्र जनता के प्रति सहानुभूति रखते हैं। उनके विचार अवश्य उन्नत और उदार हैं, लेकिन अपने उन्नत विचारों को व्यंग्य रूप में कहने के अभ्यस्त हैं, जिसके कारण लोग प्राय: उन्हें गलत समझ जाते हैं। वे बस बातों में तेज हैं, व्यावहारिक रूप में कोई काम नहीं कर सकते। डॉ.श्यामाचरण सरकार द्वारा मनोनीय सदस्य हैं, इसलिए प्रत्येक समस्या पर यही कहते हैं कि पहले सरकार से मशविरा कर लूँ, तब अपनी सदस्य हैं, इसलिए प्रत्येक समस्या पर यही कहते हैं कि पहले सरकार से मशविरा कर लूँ, तब अपनी राय दूँ, वे भी बातों के तेज हैं। वे कुछ पश्चिमी संस्कारों से प्रभावित मालूम होते हैं। भगतराम ठेकेदार हैं। उन्हें अपने रुपये से मतलब है, वेश्या सुधार से उन्हें कोई मतलब नहीं है। वह ग्रामोफोन का रिकॉर्ड है, पैसे को लोभी है, इसीलिए सेठ चिम्मनलाल के विरुद्ध कभी नहीं जाता। वह जाति, समाज या देश के प्रति कर्त्तव्यच्युत रहता है। चिम्मनलाल अपने हृदय की दुर्बलताओं को विनोदशीलता के आवरण में छिपाकर बच जाना चाहता है। वह राजनीति में भाग नहीं लेना चाहता। वह विट्ठलनाथ के विधवाश्रम को तभी तक सहायता देना चाहता है, जब तक कि राजनीति से दूर है। सेठ बलभद्रप्रसाद उस कहावत को चरितार्थ करता है कि हाथी के दाँत खाने के और तथा दिखाने के और होते हैं। वह समाज-सुधार के सम्बन्ध में बढ़-चढ़कर बातें तो करता है, पर

जब उसका व्यावहारिक पक्ष सामने आ जाता है, तो वह उसमें सहयोग नहीं देता। वह बड़ा निर्भीक और राजनीतिकुशल है। इसी कारण वह जहाँ पद्मसिंह और विट्ठलदास का मुकाबला करता है, वहीं जनता में लोकप्रिय भी रहता है।

गजाधर कृपण और संशयशील है। एक ओर वह निर्धन है, दूसरी ओर सुमन की सब खा-पीकर बराबर कर देने की नीति से परेशान भी रहता है। इसी कारण उसका चित स्थिर नहीं रहता। वह अपने परिश्रम और प्रेम से सुमन के हृदय पर अधिकार प्राप्त करना चाहता है और उसमें असफल होने पर सुमन पर शासनाधिकार करना चाहता है। सुमन की चंचल प्रवृत्ति, इन्द्रियलिप्सा और मुहल्ले की कुछ ऐसी स्त्रियों के साथ उठाना-बैठना देखकर जो उसकी दृष्टि में बुरी थीं, सुमन के चरित्र पर गजाधर को शंका और अविश्वास होने लगता है, यद्यपि इस अविश्वास का कोई आधार नहीं है। यही वस्तुत: गजाधर की गलती थी। धीरे-धीरे संघर्ष बढ़ता है और अन्त में सम्बन्ध-विच्छेद हो जाता है। सुमन को घर से निकालने के पश्चात् गजाधर ने थोड़े दिन तक पद्मसिंह की निन्दा की, पर अन्त में वह साधू हो जाता है और गजाधर से गजानन्द बन जाता है। जब वह आवेशरहित होकर ठंडे दिल से अपने पारिवारिक जीवन पर विचार करता है, तो उसे सर्वत्र अपना ही दोष दिखायी पड़ता है। उधर सुमन भी अपना ही दोष देख पाती है। यह वस्तुत: स्वाभाविक भी था। दिल का गुबार निकल जाने के पश्चात् हृदय में इतनी उदारता तो आ जाती है और वह सारे अपराधों की जड़ अपने आपको ही समझने लगता है। गजाधर का साधू-रूप उसका प्रायश्चित ही है। यहाँ पर प्रेमचन्द क्रमश: गजाधर के आत्मबल को विकसित करते हैं। उसने अपनी अदूरदर्शिता से एक नारी के जीवन को नष्ट कर दिया था, इसीलिए पतिता नारियों के लिए वह सेवासदन में जुट गया। उसका अन्तिम रूप प्रभावशाली है।

पण्डित पद्मसिंह शर्मा में तुरन्त किसी निर्णय पर पहुँचने की शक्ति नहीं है और निर्णय पर पहुँच भी जाते हैं, तो उसे व्यावहारिक रूप देने में भी उन्हें काफी समय लग जाता है, जिससे सारा काम बिगड़ जाता है। वे आचारवान् व्यक्ति हैं, पर उनमें अपने सिद्धान्तों पर जमे रहने की दृढ़ता नहीं है। वे जिस बात को उचित समझते हैं, उसे भी व्यावहारिक रूप से करने की उनमें दक्षता नहीं है।

विट्ठलदास पद्मसिंह के मित्र हैं और उनकी कमजोरियों का निराकरण करने में विट्ठलदास का बहुत बड़ा हाथ है। यही कारण है कि शान्ता के विवाह में वे कुछ दृढ़ता दिखाते हैं, और जब शहर में वेश्या-सुधार सम्बन्धी आन्दोलन छिड़ता है, तो उसमें दृढ़तापूर्वक अपने विचार रखते हैं। जो पद्मसिंह शर्मा अन्तिम निर्णय बड़ी मुश्किल से कर पाते हैं, वह नारी जाति की दुर्गति देखकर आत्मग्लानि और चिन्ता की मूर्ति बन जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप कर्त्तव्यनिष्ठा के साथ वे कर्मक्षेत्र में कूद पड़ते हैं।

उनकी शिथिलता यद्यपि जाती नहीं, और कहीं-न-कहीं प्रकट हो जाती है। (विशेष रूप से सदनसिंह के सामने), पर अब वे विचारों में अधिक दृढ़ हो जाते हैं।

पद्मसिंह की पत्नी सुभद्रा उनकी अपेक्षा कहीं अधिक व्यवहारकुशल है। वे स्वयं घर का काम-काज सँभालने में बहुत अधिक दक्ष नहीं हैं। वे पत्नी का कहना बहुत अधिक मानते हैं, पर सदनसिंह के मामले में वे पत्नी की बात भी नहीं मानते, सुभद्रा उन्हें बराबर चेताती है कि सदन पर कुछ नियंत्रण रखना चाहिए। अन्त में प्रेमचन्द ने उनकी आत्मा को बलवान् बनाते हुए कहता है - ''उन्होंने (पद्मसिंह ने) अपनी आत्मा को बलवान् बनाकर हृदय में सेवा का सच्चा भाव जगा लिया है।'' यह सब अनेक संघर्षों के बाद होता है।

विट्ठलदास की सहायता नगर की प्रत्येक संस्था को अवश्य होती थी। केवल इसीलिए नहीं कि वह सद्भावना एवं कल्याण की भावना से प्रेरित व्यक्ति है, बल्कि इसीलिए कि उनमें पुरुषार्थ है। वह प्रत्येक कार्य को प्रसन्नचित्त होकर करता है।

उनमें न्यायप्रियता कूट-कूटकर भरी हुई है। विट्ठलदास ही वह शक्ति है, जो पद्मसिंह को आत्मबल प्रदान करती है।

पद्मसिंह के भाई मदनसिंह में परिवार-प्रेम और परिवार की मान-मर्यादा की भावना कूट-कूटकर भरी हुई है। इन्होंने परिवार की मान-मर्यादा रखने के लिए पद्मसिंह का जीवन बना दिया था, लेकिन कभी-कभी मदनसिंह में झूठी मान-मर्यादा के प्रति आवश्यकता से अधिक मोह मिलता है। वे परम्परा एवं रूढ़वादिता के मोह में पड़कर अपने परिवार की झूठी मर्यादा बनाये रखने के लिए भी उत्सुक प्रतीत होते हैं। मदनसिंह में वात्सल्य का बाहुल्य है। जिस समय सदनसिंह शान्ता और सुमन को अपने घर ले जाता है, तो मनदसिंह से रहा नहीं जाता और थोड़े दिनों के पश्चात् सदनसिंह के सम्बन्ध में जो विचार वे प्रकट करते हैं, उनमें आक्रोश अवश्य है, पर उस आक्रोश के पीछे भी वात्सल्य छिपा हुआ। वे पुत्र-स्नेह और झूठी मान-मर्यादा के मध्य में डूबते - उतराते रहते हैं और नाती का जन्म होने पर उनसे रुका नहीं जाता और वे सदनसिंह के यहाँ पहुँच जाते हैं, उनका मिथ्याभिमान, झूठी मान-मर्यादा के प्रति मोह सभी कुछ पौत्र-स्नेह के सामने घुटने टेक देता है। उनका चरित्र बड़ा सीधा-सादा और सरल है। अपनी पीढ़ी के व्यक्तियों के वे एक प्रकार से यथार्थ चित्र हैं।

पद्मसिंह का भतीजा और मदनसिंह का पुत्र है - सदनसिंह। बड़े लाड़-प्यार से उसे पाला गया है। बचपन में वह बड़ा ढीठ और लड़ाकू था। वयस्क होने पर वह क्रोधी, आलसी और उद्दण्ड हो जाता

है। वह अधिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर सका, इसमें उसकी माँ का बहुत बड़ा हाथ था। जब उसका गाँव में जी ऊब जाता है तो वह चाचा के यहाँ आता है। यहाँ आकर आनन्दोपभोग करने और इन्द्रिय-सुख भोगने की उसकी इच्छा तीव्र हो जाती है। पद्मसिंह उसे पढ़ाने की कोशिश करते हैं, पर उसका मन नहीं लगता। पद्मसिंह उसे अच्छे मार्ग पर ले चलने का प्रयास तो करते हैं, पर सफलता नहीं मिल पाती, क्योंकि वे सदनसिंह के ऊपर कोई अनुचित दबाव भी नहीं डालना चाहते, इसीलिए उसकी चंचलता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती है। धीरे-धीरे वह स्वयं सुमन के यहाँ पहुँच जाता है। पहले वह सुमन के सामने प्रेमाभिनय करता है और नियंत्रणहीन रसिक बन जाता है। चाची के कंगन चुराता है और बाप से रुपये माँगता है, जो ऐसी परिस्थिति में स्वाभाविक है। वास्तव में प्रेमचन्द ने इस नवयुवक को पतन की ओर से बचाने के लिए सुमन के आश्रय में रखा। सुमन के दालमण्डी छोड़ने के बाद सदनसिंह में परिवर्तन हो जाता है। प्रेमचन्द कहते हैं कि वह अब उच्छृंखल प्रेम के स्थान पर वैवाहिक जीवन के प्रेम को अधिक महत्त्व देने लगा।

सुमन के लिए उसके मन में एक अतृप्त लालसा बनी रहती है, किन्तु सुमन के सम्बन्ध में अब वह पहली-जैसी भावना रखते हुए स्वयं लज्जित होता है और धीरे-धीरे शान्ता की ओर बढ़ता है। अभी तक प्रेमचन्द ने उसके कुपक्ष का ही चित्रण किया था, किन्तु उत्तरार्द्ध में वे धीरे-धीरे उसके चरित्र के सुपक्ष का चित्रण करने लगे हैं। एक बार उसने प्रो. रमेशदत्त का व्याख्यान सुना, जिससे वह बिल्कुल बदल जाता है। उसे अब वेश्याएँ हलाहल विष के समान प्रतीत होती हैं। प्रेमचन्द यहाँ और आगे बढ़ जाते हैं और उसको पूर्णत: आदर्शवादी धरातल पर प्रतिष्ठित कर देते हैं। अब उसमें शुद्ध और पवित्र भावों का उदय होता है। वह आत्म-सुधार की लहर में डूबने लगता है। अब वह परिश्रम करता है। अब वह परिश्रम करता है। अपने यहाँ सुमन को रखता है और उसकी प्रेरणा से शान्ता को भी साहसपूर्वक ग्रहण कर लेता है तथा अन्त में अपने परिवार और समाज का उपयोगी अंग बन जाता है। उसका अन्तिम रूप हमें चाहे जितना ही आकर्षिक प्रतीत हो, वह बहुत प्रभावपूर्ण नहीं प्रतीत हो, वह बहुत प्रभावपूर्ण नहीं प्रतीत होता, यह स्मरण रखना चाहिए। उसमें न तो स्वाभाविकता ही रहती है और न यथार्थता रहती है। ऐसा प्रतीत होता है, जैसे वह अपने आन्तरिक पक्ष से प्रेरित होकर कोई कार्य ही नहीं करता और यदि आन्तरिक पक्ष से प्रेरणा ग्रहण करता भी है तो बाद के अंशों में वह उसका आन्तरिक पक्ष नहीं रहता, वरन प्रेमचन्द द्वारा उसके अपने आन्तरिक पक्ष को बदलकर रखा गया दूसरा ही आन्तरिक पक्ष होता है, उसका चरित्र यथार्थवाद से आदर्शवाद की ओर स्वाभाविकता से अविश्वसनीयता, सप्राणता से निर्जीविता, फलस्वरूप असत् से सत् की ओर प्रयाण करने का प्रेमचन्द का यांत्रिक प्रयास मात्र है।

सुमन उपन्यास की नायिका है। बचपन से ही विलास और इन्द्रियसुख की प्रवृत्ति से युक्त साधन न होने पर भी वह अधिकाधिक सुख और वैभव की भावना की ओर बढ़ती है। धीरे-धीरे उसकी लज्जा-शक्ति भी शिथिल पड़ जाती है और वह अपनी अतृप्त आकांक्षाओं की पूर्ति में लग जाती है और यहीं से उसके चरित्र का पतन प्रारम्भ हो जाता है। सुमन का जो कुछ भी चरित्र है, वह यही है। उसके चरित्र की गतिशीलता उसके पतन तक ही है। उनके पश्चात् वह सीधे मार्ग पर चलती है, किन्तु उसमें गतिशीलता कम रहती है। वह सुन्दर है चंचल है, साथ ही अभिमानी भी है। कोई भी बात हो, वह सबसे बढ-चढ़कर रहना चाहती है। ऐसी लड़की का विवाह जब गजाधर जैसे व्यक्ति के साथ हो तो उसकी वही गति स्वभाविक रूप से होनी चाहिए जो सुमन की हुई। अतः परिणाम यह होता है कि वह कपटाचरण करने लगती है। अपनी चटोरी जीभ को तृप्त करने के लिए वह अपने पति से छिपकर चाट उड़ाने लगती है। अपनी इसी सगर्वा प्रकृति के कारण वह दिखावापसन्द नारी के रूप में हमारे सम्मुख आती है, वह जब दूसरों कोगहने बनवाते देखती है, तो उसके मन में असंतोष की भावना अधिकाधिक गहरी होती जाती है जो पति की कमाई है, उसे तो वह खा-पीकर खत्म कर देती है। पति के प्रेमपूर्ण शब्दों की अपेक्षा उसे चाट के पत्ते और मिठाई के दोने अच्छे लगते हैं।

अपने सौन्दर्य को साधन बनाकर वह अप्रत्यक्ष रूप से दूसरों पर विजय प्राप्त करना चाहती है। दूसरा कारण उसका कुसंग था। उसका पड़ौस वेश्याओं का है, और पड़ौस ही नहीं, अपितु वह देखती है कि भोली वेश्या का समाज-सुधारकों, धर्म के ठेकेदारों और पूँजीपतियों के यहाँ बड़ा मान और सम्मान है, जिसकी उसने कभी कल्पना भी न की थी। पद्मसिंह – जैसे व्यक्ति के घर में भोली का सम्मान देखकर उसकी यह धारणा और भी पुष्ट हो जाती है और वह सीमा से बाहर हो जाती है। उसके वेश्या बनने के कारण प्रेमचन्द ने कई स्थानों पर स्पष्ट किये हैं, इसके बाद प्रेमचन्द ने उसे सुधार की ओर प्रवृत्त किया है और बड़े ही धैर्य और संतोष के साथ विट्ठलदास इसका साधन बने है। प्रेमचन्द को भी सुमन का वेश्या बनना अच्छा नहीं लगा और उसे वे दालमण्डी से शीघ्र निकालने को प्रस्तुत दृष्टिगोचर होते हैं। सदनसिंह को देखकर सर्वप्रथम उसके मन में निःस्वार्थ प्रेम की भावना का उदय होता है। वह सदनसिंह के प्रति अपना सर्वस्व लुटा देती है। वेश्या होने पर भी उसके उत्तर संस्कार और सुविचार समूल नष्ट नहीं हो गये थे और सदनसिंह के प्रति जो उसमें उत्तम विचार उत्पन्न हुए वस्तुतः वही उसे पतन के गर्त से निकालने में एक प्रकार से सहायक होते हैं, विट्ठलदास स्थूल साधन है, तो सदनसिंह सूक्ष्म साधन।

सदनसिंह के माध्यम से उसे उस प्रेम का अनुभव होने लगता है, जिसका अनुभव वेश्याएँ कभी नहीं कर पातीं। सुमन की आत्मा का पूर्ण संहार इसी वास्तविक प्रेम के कारण कभी नहीं हो पाता, जैसे कि प्रेमचन्द के चरित्र-चित्रण का सामान्य नियम है। वे किसी चरित्र में केवल अच्छाई या केवल बुराई नहीं हो पाता, जैसे कि प्रेमचन्द के चरित्र-चित्रण का सामान्य नियम है। वे किसी चरित्र में केवल अच्छाई या केवल बुराई नहीं देखना चाहते। यहीं से प्रेमचन्द सुमन के अन्तर्मन के मनुष्यत्व की आभा चमकाने लगते हैं और वह आत्मसुधार द्वारा ऐसी नारी बन जाती है जो किसी भी सभ्य समाज में आदर एवं सम्मान प्राप्त कर सकती है। शान्ता के विवाह के अवसर पर उसी के कारण गड़बड़ी होती है, जिससे उसे बड़ी पीड़ा होती है। इसी प्रकार का कोई अन्य अवसर भी जब आता है तो उसे बड़ा खेद होता है और अपने किये पर बड़ा पश्चाताप प्रकट करती है। कई बार उसने डूबने की चेष्टा की, उसका चरित्र एक संघर्ष के रूप में है और वह संघर्ष भी अपने मन से है। वह सेवा-मार्ग को अपनाती है। सेवा के द्वारा वह आत्मोद्धार की चेष्टा भी करती है। प्रेम की पवित्रता को वह समझने लगती है। प्रेम की ऐसी पवित्रता, जो दूसरों को भी उद्धार कर सकती है। विपत्तियों की आग में तपकर व्यक्ति शुद्ध हो जाता है, शान्ता का चरित्र इस बात का द्योतक है, वह पर-कातर हो जाता है और उसमें दुःखी जनों के प्रति सहानुभूति की भावना आ जाती है। वह दारोगा कृष्णचन्द्र की छोटी लड़की है। प्रेमचन्द प्रारम्भ में किसी पात्र के सम्बन्ध में जो विशेषता हमें बता देते हैं, उसी का विकास शेष भाग में करते हैं। इसी प्रकार शान्ता के सम्बन्ध में भी उन्होंने उसकी चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख प्रारम्भ किया है। वह प्रारम्भ के सम्बन्ध में भी उन्होंने उसकी चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख प्रारम्भ किया है। वह प्रारम्भ में ही गम्भीरस गुणी और संतोषी है। अपने मामा के यहाँ अपनी माँ गंगाजली की मृत्यु हो जाने से और निराश्रित हो जाने के बावजूद उसकी आत्मिक शक्ति दिन-प्रतिदिन बलवती होती गई। उसमें प्रारम्भ से ही जो सहनशीलता दृष्टिगोचर होती है, वह निरन्तर विद्यमान रहती है। जब सुमन के कारण उसका विवाह नहीं होता, तो भी उसमें शोक, मनोमालिन्य या क्रोध का आभास तक नहीं मिलता और वह उस समय भी गम्भीर ही रहती है। उसकी आँखों में एक निर्मल ज्योति उत्पन्न हो जाती है। उसने अपने जीवन में यह गम्भीर आघात सहन किया, जिससे उसमें एक स्वर्गीय आभा का प्रस्फुटीकरण होता है। प्रेमचन्द ने उसके हृदय में सदनसिंह के प्रति स्नेह को उभारकर उसके प्रेम को और भी दिव्य रूप में प्रकट किया है। यह प्रेम ही उसे ऊपर उठा देता है। मामी के दुर्व्यवहार के बावजूद उसके प्रति हृदय में क्रोध या विद्वेष उत्पन्न नहीं होता। उसके हृदय में नयी स्फूर्ति उत्पन्न हो जाती है और जब तक पद्मसिंह और विट्ठलदास उसे आकर नहीं ले जाते, वह मामा के यहाँ गम्भीरता और सन्तोष के साथ रहती है।

शान्ता की सबसे बड़ी विशेषता है – कर्मण्यता और सहिष्णुता। उसका चरित्र भारतीय नारी का चरित्र है। प्रेमचन्द ने इसमें सुमन और शान्ता दोनों के चरित्रों के रूप में नारी-शिक्षा के दो चित्र हमारे सामने प्रस्तुत किये हैं। बारात के लौट जाने पर भी वह अपने को सदन की ही विवाहित समझती है। वह इस आशा में परिपूर्ण थी कि वह किसी दिन अपने पति की सेवा करने की अधिकारिणी बनेगी। वह जिन्दगी में केवल रोना ही नहीं जानती, जागरूक भी है और साहस एवं आत्मविश्वास से विषमताओं का सामना करना भी जानती है। अपना भला किसमें है, वह खूब जानती है। यही प्रवृत्ति उसे आगे चलकर सफलता प्रदान करती है।

पद्मसिंह की पत्नी का नाम सुभद्रा है। वह पति की अपेक्षा अधिक व्यवहारकुश्ल, विनम्र, दयापूर्ण और सहानुभूतिपूर्ण है। वास्तव में प्रेमचन्द और 'जयशंकर प्रसाद' के नारी – दुष्टिकोणों में समता है। दोनों ममता, स्नेह, करुणा एवं त्याग को नारी के आवश्यक गुण स्वीकार करते है। सुभद्रा का व्यवहारकुशल रूप मदनसिंह के सन्दर्भ में प्रकट होता है। पद्मसिंह की-सी कमजोरी सुभद्रा में नहीं है। सदनसिंह को लेकर दोनों में तनाव हो जाता है, पर इसे लेकर दोनों में मनमुटाव नहीं होता। सुभद्रा अभद्रता की सीमा तक नहीं जाना चाहती। वह अपनी पति-भक्ति में कोई भी अन्तर नहीं आने देती। वह एक विचारशील नारी है। उसका हृदय उदार और उच्च विचारों से पूर्ण है। वह गाली का उत्तर गाली से दिये जाने में विश्वास नहीं रखती। वह हर एक मनुष्य को मनुष्य के रूप में ही मानना चाहती है, देवता के रूप में नहीं मानना चाहती। कभी भी उसने सुमन के प्रति घृणा-भाव प्रकट नहीं किया। उसका वेश्या हो जाना सुभद्रा के लिए पीड़ादायक अवश्य था, पर वह यह भी विश्वास करती थी कि सुमन का नैतिक विकास एक दिन अवश्य होगा।

वेश्या के रूप में भोली का चरित्र धन को महत्त्व देने वाला है। गंगालजी सती-साध्वी स्त्री है और अपने पति कृष्णचन्द्र को कुमार्ग पर जाने से बचाती है तथा धन-संचय की शिक्षा देती है। वह अधिक व्यवहारकुशल है। जाह्नवी बड़ी कर्कशा, तेज-मिजाज और शुष्क स्वभाव की है। उसमें उदारता नाममात्र को नहीं है। भामा में वात्सल्य भी ऐसा है जो सदनसिंह को ले डूबने वाला है। मिस कान्ति पश्चिमी भावना से ओत-प्रोत लड़की है।

प्रेमचन्द ने अपनी उन बहुत-सी त्रुटियों का परिमार्जन इस उपन्यास में कर दिया है, जो उनके पिछले उपन्यास में लक्षित होती थीं। इसकी भाषा अधिक सव्यवस्थित, प्रभावमय और स्वाभाविक है।

Lesson Writer

डॉ. शेख़ मौला अली

'रंगभूमि' उपन्यास - प्रेमचन्द

अनुक्रमणिका :-

1. 'रंगभूमि' उपन्यास के कथानक पर प्रकाश डालिए।
2. 'रंगभूमि' उपन्यास की कथावस्तु की प्रमुख विशेषताओं की समीक्षा कीजिए।
3. 'रंगभूमि' में व्यक्त कथा-शिल्प तथा कला-सौष्ठव का मूल्यांकन कीजिए।
4. 'रंगभूमि' में व्यक्त तत्कालीन भारतीय समाज का चित्रण प्रस्तुत कीजिए।
5. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में 'रंगभूमि' उपन्यास में दर्शित समस्याओं का मूल्यांकन कीजिए।
6. 'रंगभूमि' उपन्यास में व्यक्त 'आदशोन्मुखी यथार्थवाद' का मूल्यांकन कीजिए।
7. 'रंगभूमि' में सूरदास का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
8. प्रेमचन्द की उपन्यास -कला का मूल्यांकन कीजिए।

'रंगभूमि' उपन्यास

- प्रेमचन्द

प्रश्न :-

1. 'रंगभूमि' उपन्यास के कथानक पर प्रकाश डालिए।

रूपरेखा :-

1. प्रस्तावना
2. उपन्यास का प्रमुख उद्‌देश्य
3. कथाक्रम
4. राष्ट्रीय दृष्टिकोण
5. 'रंगभूमि' जीवन का प्रतीक
6. गाँधीजी का प्रभाव

1. प्रस्तावना :-

'रंगभूमि' उपन्यास का कथानक दो सूत्रों में चलता है। एक ओर कारी के कुँवर भरतसिंह और रानी जा ह्नवी, जौन सेवक और मिसेज सेवक, राजा महेन्द्रसिंह और इन्दु नामक परिवारों और ताहिर अली और कुल्सूम के परिवार की समाज और राजनीति सापेक्ष कथा है। दूसरी ओर काशी के निकट पाँडेपुर के सूरदास, जगधर, बजरंगी, नायकराम पण्डा, ठाकुरदीन, भैरो और उसकी पत्नी सुभागी की कहानी है उपन्यासकार प्रेमचन्द ने दोनों कथा - सूत्रों का समन्तय उपस्थित किया है।

2. उपन्यास का मुख उद्‌देश्य :-

नौकर शाही और पूँजीवाद तथा देशी राज्यों के साथ जनवाद का संघर्ष चित्रित करना उपन्यास का मुख्य उद्देश्य है।

कुँवर भरतसिंह की पुत्री इन्दु और पुत्र विनय है। जौन सेवक की पुत्री सोफिया और पुत्र प्रभु सेवक है। इन्दु राजा महेन्दुसिंह की पत्नी है। जैनब और रकिया ताहिर अली की विमाताएँ है। ताहिर अली अपने सौतेले भाई माहिर अली की शिक्षा और परिवार पालन के लिए आर्थिक कष्ट सहन करते-करते अन्त में गबन करता है और उसका मालिक जौन सेवक उसकी सजा कर देता है।

3. कथाक्रम :-

'रंगभूमि' उपन्यास में ताहिर अली और उसके परिवार की कथा एक प्रकार से स्वतन्त कथा है। शेष कथा में सेवा-समिति की देश -सेवाओं, जसवंत नगर के माध्यम द्वारा देशी रियासतों की शोचनीय दशा, पाँडेपुर में पूँजीवाद के भयंकर परिणामों, सूरदास की जमीन, झोंपडी और अन्त में पाँडेपुर का जौन सेवक द्वारा अपने कारखाने के लिए हथिया लिया जाना, विनय और सोफिया के प्रेम माध्यम द्वारा धार्मिक स्वतन्त्रता, मिसेज सेवक के अभारतीय दृष्टिकोण द्वारा धार्मिक संकीर्णता, कुँवर भरतसिंह का संपत्तिपर प्रेम, जौन सेवक की धन-लोलुपता, इन्दु और राजा महेन्द्रसिंह का संघर्ष और अन्त में राजा साहब का सूरदास की मूर्ति के नीचे दब कर मरना सूरदास की सत्यनिष्ठा और अन्त में गोली खाकर मृत्यु की गोद में जाना और ग्रामीण जीवन से सम्बन्धित पात्रों द्वारा ग्रामीण जीवन की अनेक समस्याओं- मद्यपान, निराश्रिता नारी आदि का विवरण हुआ है।

4. राष्ट्रीय दृष्टिकोण :-

उपर्युक्त सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक समस्याएँ माध्यम मात्र है। प्रेमचन्द का दृष्टिकोण वास्तव में राष्ट्रीयता से और व्यापक जीवन से सम्बन्धित है। उपन्यासकार का राष्ट्रीय दृष्टिकोण तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार है। उनकी आकांक्षा है कि भारतवासी सभी व्यक्तिगत कामनाओं और आकांक्षाओं से ऊपर उठकर नि:स्वार्थ भाव से देश की सेवा में निमग्न हों। उस समय देश को सब प्रकार से जागरण करने की आवश्यकता थी। देश की नवीन आवश्यकताओं, आशाओं और आकांक्षाओं की प्रतिमूर्ति विनय की माता रानी जाह्नवी है। प्रेमचन्द को स्वदेशानुरागी संन्यासियों की आवश्यकता थी। गार्हस्थ्य जीवन संकीर्णता और वासना पर आधारित न होकर निरन्तर प्रसारोन्मुख हो। जीवन स्वार्थ में लिप्त न होकर विनय और सोफी प्रेम की रानी जाह्नवी उस समय तक शंका की दृष्टि से देखती रही, जब तक उसे यह विश्वास न हो गया कि उनका प्रेम वासना पर आधारित नही है। वह प्रेम विनय के स्वदेशानुराग में बाधक बनेगा।

5. 'रंगभूमि' जीवन का प्रतीक :-

'रंगभूमि' उपन्यास में जीवन के प्रति प्रेमचन्द का दृष्टिकोण अत्यन्त उदात्त है। उपन्यास के नामकरण में ही उनका दृष्टिकोण निहित है। जीवन क्रीडा क्षेत्र है, रंगभूमि है। वहाँ हर एक व्यक्ति खेल खेलने आया है। किन्तु खेल खेलते समय "क्यों धरम-नीति को तोडे ?" संसार में प्राय: लोग खेल खेल की तरह नहीं खेलते, घाँधली करते हैं। प्रेमचन्द का कहना है कि भले ही दृष्टि जीव पर रहे, पर हार

से कोई घबराये नहीं, ईमान नहीं छोडे। वही सच्चा मार्ग है और कीर्तिपय है। सूरदास और जौन सेवक दोनों ने अपना-अपना पात्र निभाया। सूरदास ने सच्चे अर्थ में जीवन को रंगभूमि समझा। भौतिक जगत में हारकर भी आत्मिक दृष्टि वह सुखी था। उसके मन में कभी मलिनता न आयी। जीत और हार दोनों को उसने प्रसन्नता के साथ स्वीकार किया। खेल में सदैव नीति का पालन किया। प्रतिद्वन्द्वी पर कभी छिपकर उसने चोट नहीं की। दीन-हीन होने पर कभी छिपकर उसमें आत्मबल था, हृदय क्षमा, माँस न होने पर भी हृदय में विनय, शील और सहानुभूति भूरपर थी।

जॉन सेवक के अनुसार जीवन और संसार संग्राम क्षेत्र है, समर-भूमि है। इसी कारण उसने छल, कपट कपट, गुप्त आघात आदि सभी अवगुणों का आश्रय लिया। भौतिक रूप से विजयी होने पर भी आत्मग्लानि से वह पीडित ही रहा।

6. गाँधीजी का प्रभाव :-

'रंगभूमि' उपन्यास में निहित प्रेमचन्द के दृष्टिकोण पर गाँधीजी का प्रभाव स्पष्टतया लक्षित है। यदि मनुष्य अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए, सत्य का अवलंबन ग्रहण करते हुए, आत्म-सम्मान को दृष्टि-पथ पर रखते हुए निष्काम कर्म में प्रवृत्त होने पर वह कदापि दु:खी न होता पशुधर्म पर आत्मधर्म की विजय अवश्य होती है। सूरदास की मृत्यु से जनसत्तावादियों में एक नयी संगठन-शक्ति उत्पन्न हुई। तत्कालीन वातावरण में यह विजय कम नहीं।

Lesson Writer

ऐनम्पूडि कविता एम.ए.

प्रश्न :-

2. 'रंगभूमि' उपन्यास की कथावस्तु की प्रमुख विशेषताओं की समीक्षा कीजिए।

रुपरेखा :-

1. प्रस्तावना
2. कथा का विकास क्रम
3. भविष्य वाणी - कथा का विकास
4. वस्तु विन्यास
5. अन्तर कथाएँ
6. दोष
7. निष्कर्ष

1. प्रस्तावना :-

काशी के बाहरी भाग में बसे पांडेपुर गाँव को 'रंगभूमि' का कथा-मंच बनाया गया है। ग्वाले, मजदूर, गाडीवान और खोमचे वालों की उस गरीब बस्ती में सूरदास नामक एक गरीब और अन्धा चमार रहता है। वह तो है भिखारी किन्तु पुरखों की 10 बीघा धरती भी उसके पास है, जिसमें गाँव के ढ़ोर चरते -विचरते हैं। सामने ही एक खाल का गोदाम है। उसका आढ़ती है एक ईसाई - जॉन सेवक। वह सिगरा मुहल्ले का निवासी है। 'रंगभूमि' की मुख्य कथा के साथ जुडने वाली उपकथा है - सोफिया और विनय के परस्पर प्रेम का।

जॉन सेवक के परिवार से या का श्री गणेश करने के साथ-साथ सूरदास, सोफिया, जॉन सेवक आदि का सामान्य परिचय उपन्यास के पाठक का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है। कथा के भावी विकास के लिए सामग्री जुटने लगती है और उस में विश्वसनीयता भी आजाती है।

2. कथा का विकासक्रम :-

रंगभूमि में कथा के विकास के लिए संकेत विधि को भी उपन्यासकार प्रेमचन्द ने अपना या है। कथोपकथन द्वारा भावी वे भावी घटनाओं का संकेत देते हैं जैसे- मिसेज सेवक तथा जान सेवक के वार्तालाप द्वारा सूरदास की जमीन लेने की भावी घटना का संकेत मिल जाता है। द्वितीय, संकल्प एवं

प्रतिज्ञा द्वारा भी भावी घटनाओं का संकेत देते हुए कथा का विकास होता है, यथा- सूरदास ताहिर अली के सामने अपना संकल्प बतादेता है, ''मेरे जीते - जी तो जमीन न मिलेगी, हाँ मर जाऊँ तो भले ही मिल जाए।'' यहाँ जमीन के लिए अवश्यंभावी संघर्ष का प्रतीक है। इसी प्रकार सोफिया के संकल्प से उसके घर से निकलने की सूचना मिल जाती है, ''अब इस घर में रहना नरकवास के समान है। इस बेहयाई की रोटियाँ खाने से भूखों मर जाना अच्छा बला से लोग हँसेंगे, आजाद तो हो जाऊँगी। किसी के ताने तो न सुनने पडेंगे।''

3. भविष्यवाणी - कथा का विकास :-

'रंगभूमि' उपन्यास में भविष्यवाणी द्वारा भी कथा का विकास हुआ है। यह भविष्यवाणी कहीं शाप के रूप में प्रकट होती है, तो कहीं आशंका के रूप में। उदाहरण के लिए जेलर की भूढ़ी माँ अपने बेटे की हत्या से दु:खी होकर सोफिया को शाप देती है - ''जैसा तूने किया वैसा तेरे आगे आएगा। मेरी भाँति तेरे दिन भी रोते बीतें।'' फलत:, सोफिया और विनय सचमुच विवाह का सुख नहीं भोग पाते अपितु दोनों को आत्महत्या के लिए विवश होना पडता है। इन्दु भी विनय और सोफिया के प्रेमभाव पर अमंगल की आशंका करते हुए कहती है - ''यह आग सारे घर को जला देगी, विनय के ऊँचे-ऊँचे मंसूबे, माता की बडी-बडी अभिलाषाएँ, पिता के बडे-बडे अनुष्ठान सब विध्वांस हो जायेंगे।'' इन्दु की आशंका सत्य-सिद्ध निकलती है।

'रंगभूमि' उपन्यास के कथानक में कुछ उलझने तथा बाधाएँ होने पर भी कथाक्रम में कहीं रुकावट नहीं आती। औद्योगीकरण की समस्या का विशद चित्रण करके भी कथानक को आगे बढ़ाया गया है। सामन्ववादी समस्या भी इस में सम्मिलित हो गया है। एक ओर जॉन सेवक के हथकण्डे चलते हैं, तो दूसरी और सूरदास का संकल्प अउजाता है। आँद्योगीकरण की विजय के साथ-संघर्ष समाप्त हो जाता है।

3. नाटकीय संरचना :-

कथानक को रोचक और उत्सुकता पूर्ण बनाने के लिए 'रंगभूमि' में नाटकीय प्रसंगों और कौतूहलपूर्ण घटनाओं का समावेश हुआ है। सोफिया का घर से निकल पडना, जलती हुई आग में कूद पडना, विनय को आग से बचाना, वीरपाल का जेल में सेंध लगाना, सोफिया के पत्थर लग जाने पर विनय का गोली चला देना, सोफिया का गायब होना, भीलों की बस्ती में सोफिया और विनय का साल भर रहना आदि घटनाएँ रोचकता एवं कौतूहल उत्पन्न करती हैं।

4. वस्तु-विन्यास :-

'रंगभूमि' उपन्यास की कथा का वृत्तान्त मूलत: तत्कालीन भारतीय समाज है। उपन्यासकार प्रेमचन्द ने जीवन के प्राय: सभी रूपों का पूर्णतया आभव्यक्त करने का प्रयत्न किया। धार्मिक, सामाजिक तथा मानवीय वर्गों का चित्रण हुआ है। औद्योगीकरण में उत्पन्न विविध समस्याओं का विशद चित्र अंकित किया गया है। उपन्यासकार प्रेमचन्द ने व्यापकता के निर्वाह के लिए कथा के तीन केन्द्र रखे हैं - (1) पहला केन्द्र पांडेपुर। आधिकारिक कथा का केन्द्र सूरदास इसका नायक है। (2) दूसरा केन्द्र काशी है। यहाँ से जॉनसेवक, सोफिया, विनय, राजा महेन्द्रकुमार तथा इन्द्र से सम्बन्धित कथा का पल्लवन होता है। (3) तीसरा केन्द्र उदयपुर की रियासत है। इसके सूत्रधार विनयकुमार हैं।

इन कथाओं के अतिरिक्त अनेक उपकथाएं समानान्तर चलती रहती हैं। - जैसे भैरों-सुभागी, ताहिर अली और उसका परिवार आदि की उपकथाएँ।

रंगभूमि की कथा को प्रेमचन्द ने दु:खान्त में परिवर्तित किया है। वह प्राय: पात्रों की मृत्यु, हत्या अथवा आत्महत्या द्वारा होता है। उपन्यास में इन्द्रदत्त की मृत्यु गोली लगने से होती है, विनय आत्महत्या करलेता है, सोफिया गंगा में डूब कर प्राण खो देती है, सूरदास अस्पताल में मर जाता है, और राजा महेन्द्र कुमार सिंह सूरदास की प्रस्तर प्रतिमा के नीचे दबकर प्राण खो देते हैं। इस प्रकार 'रंगभूमि' उपन्यास की कथा दुखान्त होती है।

5. अन्तर कथाएँ :-

कथानक की आधारशिला पांडेपुर में रखी गई है। काशी का घटनाक्रम उस में आकर जुड जाता है और दोनों कथाएँ साथ-साथ चलती हैं। 'रंगभूमि' उपन्यास का आधार औद्योकीकरण है। औद्योगीकरण की आरम्भिक परिस्थितियों को प्रकट करने के लिए उपन्यासकार ने दो कथाओं की योजना प्रस्तुत की है। दोनों कथाएँ आपस में गुँथ गये हैं। उदयपुर रियासत से सम्बन्धित अनेक घटनाएँ अप्रासंगिक हो गई है। किन्तु, रानी जाह्नवी की विनय के प्रति महत्वाकांक्षा इस कथा का मूल स्रोत है। वह विनय को वीर, कर्मनिष्ठ, आत्म-त्यागी और समाज सेवक के रूप में देखना चाहती है। सोफिया के प्रति उसकी अनुराग-वृद्धि को रोकने तथा इस प्रेम को अशरीरी बनाने के लिए लेखक कुछ समय के लिए उसे मुख्य रंगभूमि से हटाकर जसवन्तनगर भेज देता है।

कथा-शिल्प की दृष्टि से ताहिर अली की कथा भी आलोच्य है। ताहिरअली के और उसके समस्त परिवार की कथा में उपन्यासकार का विशेष उद्देश्य है। इस के द्वारा मध्यम वर्गीय परिवार की

समस्याओं का चित्रण हुआ है। दस बीधे भूमि की रक्षा-हित की गई स्वार्थमूलक व्यक्ति परक लडाई न होकर, भारतीय ग्रामीण जीवन तथा निम्न-मध्य वर्ग के अधिकारों की लडाई बन जाती है।

6. दोष :-

वस्तु-शिल्प की दृष्टि से 'रंगभूमि' के कथाक्रम में कुछ दोष भी आ ही गये हैं। पहला दोष है कि उपन्यासकार बीच-बीच में आकर बार-बार टीका-टिप्पणी करने लगता है। फलत: कथाकीगति मंद पड जाती है। दूसरा दोष है - कथाक्रम में कुछ घटनाओं का आकस्मिक, अस्वाभाविक एवं अप्रासंगिक रूप में समावेश कई जगह अपने आदर्शों के लिए उपन्यासकार प्रेमचन्द ने कथा को तोडा है। कथानक में उक्त दोष होते हुए थी। 'रंगभूमि' उपन्यास तत्कालीन संपूर्ण समाज को उपन्यासकार अपने कथानक के भीतर समेटे हुए हैं। 'रंगभूमि' में भारतीय समाज की सम्पूर्ण को गाथाबद्ध करने का प्रयास हुआ है।

7. निष्कर्ष :-

'रंगभूमि' उपन्यास में उपन्यासकार का व्यापक दृष्टिकोण और कथा की सुदृढ़ पकड दोनों ही सुन्दर बडे हैं। अनेक आख्यानों एवं घटनाओं का विस्तार में चित्रण हुआ है। मानव जीवन के अखण्ड चित्र को चित्रित करने के महान उद्देश्य पर 'रंगभूमि' की रचना हुई है।

Lesson Writer

ऐेनम्पूडि कविता एम.ए.

प्रश्न :-

3. 'रंगभूमि' में व्यक्त कथा-शिल्प तथा कला-सौष्ठव का मूल्यांकन कीजिए।

रुपरेखा :-

1. प्रस्तावना
2. उद्योग और व्यवसाय की समस्या
3. धार्मिक समस्या
4. देशी रियासतों की समस्या
5. राजनैतिक समस्या
6. कथानक
7. सूरदास - नायक
8. विनय - सोफिया

1. प्रस्तावना :-

प्रेमचन्द ने स्वयं लिखा है जीवन एक 'क्रीडास्थल' है। इसी कारण उपन्यास का शीर्षक 'रंगभूमि' रखा गया है। धर्म को सदा महान माननेवाला सूरदास इस रंगभूमि का प्रधान खिलाडी है। धर्म के क्षेत्र में कोई उसके साथ विश्वास-घात करे बदले में स्वयं विश्वासघात करना वह नहीं चाहता। हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश, में संपूर्ण आस्था रखते हुए वह विश्वास रखता है। कि पराजित व्यक्ति को सन्तुलन नहीं खोना चाहिए। निराशा और कुण्ठ सूरदास जैसे खिलाडी की नीति के विरुद्ध है। वास्तव में प्रेमचन्द का दृष्टिकोण यही है। मनुष्य सच्चामर्गा एवं कीर्ति का मार्ग ग्रहण करते हुए जीवन में दिशोन्मुख हो। सूरदास गीता के उस सिद्धान्त का रूप हैं, जिसे हम निष्काम कर्म और स्थितप्रज्ञता से अभिहित करते हैं।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

सूरदास पर उस समय का भी प्रभाव है। उस पर गाँधी वाद का भी प्रभाव है। गाँधीजी के साधन की पवित्रता, अक्रोध अपरिग्रह में विश्वास हमें सूरदास में मिलते हैं। रंगभूमि उपन्यास का मूल उद्देश्य है कि मानव को निष्काम कर्म में प्रवृत्त होना चाहिए और उसके कर्म-कर्तव्य की भावना पर आधारित होने चाहिए। किसी भी व्यक्ति को आत्म-सम्मान पर जीवन की बलि देने होगी। प्रेमचन्द ने 'गोदान' में भी यही सत्य होरी के माध्यम से व्यक्त किया है।

2. उद्योग और व्यवसाय की समस्या :-

'रंगभूमि' में व्यवसाय की समस्या पर विचार किया गया है। प्रेमचन्द ने पूँजीवाद को अपना लक्ष्य बनाया। पूँजीवाद मनुष्य के जीवन को कुत्सित बना देता है और उसमें बुर्जुआ मनोवृत्ति भर देता है। प्रेमचन्द को विशेष रुचि नहीं था। वे औद्योगी करण में विश्वास नहीं करते। वे एक ओर प्रगतिशील विश्वासों को अपनाते हैं और दूसरी ओर परिवर्तनशीलता पर अनास्या प्रकट करते हैं। उन्होंने औद्योकिक जीवन और सरल जीवन को तुलनात्मक दृष्टि से परख कर सरल जीवन को ही अधिक श्रेयस्कर और भारतीय व्यवस्था में वौछनीय स्वीकार किया है।

3. धार्मिक समस्या :-

उपन्यासकार प्रेमचन्द ने धार्मिकता को भी 'रंगभूमि' में समस्या के रूप में चित्रित किया है। जिस प्रकार प्रसाद जीने अपने नाटकों में राष्ट्रीय उत्साह अभिव्यक्त किया है, उसी प्रकार प्रेमचन्द ने इस उपन्यास में धार्मिक उत्साह प्रकट किया है। मिसेज सेवक की धार्मिक असहिष्णुता का विरोध सोफिया और प्रभु सेवक दोनों करते हैं। सोफिया घुटनाशील वातावरण से निकल कर स्वतन्त्र रूप से जीवन-यापन करना चाहती है। प्रेमचन्द की दृष्टि में धार्मिक बन्धनों से मानवतावाद अधिक महत्त्वपूर्ण है। मानव-प्रेम की तुलना में धार्मिक संकीर्णता पर प्रहार करते हुए कहते है कि आसमान की बादशाहत में अमीरों का कोई हिस्सा नहीं।

4. देशी रियासतों की समस्या :-

इस समस्या पर प्रेमचन्द ने अपने राष्ट्रीय विचार प्रकट किये हैं। जसवन्तनगर में रहते हुए विनयसिंह का जीवन तत्कालीन देशी रियासतों की वास्तविक स्थिति का सजीव चित्रण है। रियासतों का जीवन कितना प्रतिक्रियावादी हो गया था; अन्याय और शोषण किस सीमा तक चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया था और जीवन निर्वाह कितना कठिन हो गया था, जसवन्तनगर की कथा इसका यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करती है।

5. राजनैतिक समस्या :-

मि. क्लार्क, महेन्द्र सिंह और गवर्नर और गवर्नर भारत के राजनैतिक पक्ष को ग्रहण करते हैं। सेवक पक्ष में दो वर्ग हैं - (1) इन्द्रसिंह और विनयसिंह का है, और (2) कुँवर भरतसिंह का है, जो जायदाद-प्रेमी होने के कारण राजनीति में भाग लेना नहीं चाहते। स्वायत्त शासन पर राजा महेन्द्रसिह के माध्यम से प्रेमचन्द ने तीखा व्यंग्य किया है और सम्मिलित परिवार प्रथा पर पर ताहिर अली और

उसके परिवार के माध्यम से प्रहार किया है। उन को सम्मिलित पारिवारिक व्यवस्था का विधान विश्रृंखलित-सा दृष्टिगोचर होता था।

बीच-बीच में सोफिया या इन्दु के माध्यम से प्रेमचन्द ने नारी समस्या पर भी प्रकाश डाला है कि निराश्रित नारी जीवन-निर्वाह कैसा करे! अन्त में राष्ट्रीय सेवा की समस्या को भी उन्होंने उठाने का प्रयत्न किया है। उपन्यासकार का विश्वास है कि मानव को अपनी निजी कामनाओं एवं आकांक्षाओं से ऊपर उठ कर राष्ट्र-सेवा में संलग्न हो। जाति को, समाज को और देश को प्रेमचन्द ने इन सब का लक्ष्य बनाया है विनयसिंह की माता, जाह्नवी को। भारत को कैसी माताएँ और पुत्र चाहिए यह उनके व्यक्तित्व से स्पष्ट होता है। स्वदेश के लिए एक सन्त तथा संन्यासी की आवश्यकता है, जो देश के लिए न्योछावर हो जाए।

रंगभूमि उपन्यास में वर्णित समस्याओं को प्रेमचन्द ने परिवारों की कथा की सीमाओं में ही बाँधा है। व्यक्ति को व्यक्ति के रूप में मानकर समाज के प्रति उसका उत्तरदायित्व अवश्य स्वीकार करते हैं। ताहिर अली जॉनसेवक, कुँवर भरतसिंह और राजा महेन्द्रसिंह के परिवारों की कथाएँ वैसे गुम्फित है। विस्तार पूर्वक कथोपकथनों का प्रचलन हुआ है।

6. कथानक :-

'रंगभूमि' उपन्यास का कथानक उद्योग, व्यवसाय और राजनीति से सम्बन्धित है और यह कथानक प्रेमचन्द की विकसित कला का द्योतक है। कथानक यथार्थवादी होते हुए आशावादी रहा है। हारने परभी, सूरदास की पराजय के पीछे उसकी आत्मशक्ति छिपी हुई है। उसकी मृत्यु के पश्चात भी प्रेमचन्द ने बताया कि जनसत्तावादियों की संगठन शक्ति अधिक शक्तिशाली है।

'रंगभूमि' गाँधीवादी जीवन-दर्शन से ओतप्रोत है। इसका प्रणयन असहयोग आन्दोलन के उपरान्त हुआ। उपन्यास का मूल उद्देश्य पारस्परिक प्रेम एवं सहयोग पर आधारित प्राचीन सामन्ती ग्रत्मीण व्यवस्था और प्रतिद्वन्द्विता एवं व्यावसायिक वृत्ति पर स्थित नवीन पूँजीवादी सभ्यता के बीच मौलिक संघर्ष के साथ औद्योगीकरण का विरोध करना है। प्रगतिशील चेतना के अनुसार प्रेमचन्द ने स्पष्ट किया है व्यक्ति के स्वत्व को उसकी इच्छा के विरुद्ध अपहृत करने का अधिकार किसी भी शासन व्यवस्था को नहीं है। उन्होंने सूरदास को निजी विचारों का प्रतिनिधि तथा आदर्शों का प्रतीक बनाकर उसके मुख से औद्योगीकरण के दूषणों का विरोध किया है। सूरदास की प्रतिभा गाँधीवादी आदर्श के साँचे में ढ़ली हुई है।

7. सूरदास - नायक :-

सूरदास गाँधीजी के सिद्धान्तों का मूर्तमान रूप है। गाँव में रहते हुए उसके चरित्र को प्रस्फुटित होता है, एक जमीन का मामला है और दूसरा सुभागी का मामला, दोनों मामलों में वह दृढ़ता के साथ काम करता है। उसकी धारण है कि किसी न किसी दिन सच्चाई की जीत होगी। गाँधीजी ने कभी भी विपक्षी के हृदय में मालिन्य उत्पन्न होने नहीं दिया। इस प्रकार का व्यवहार सूरदास भैरों के साथ करता है। भैरों की दूकान जलते देख कर, जो कुछ भी वह कर सकता था करता है और भैरों जैसे उद्दण्ड व्यक्ति के हृदय में भी परिवर्तन ला देता है। सूरदास का कथन है - ''सच्चेखिलाडी कभी रोते नहीं, बाजी पर बाजी हारते हैं, चोट-पर-चोट खाते हैं और धक्के - पर धक्के सहते हैं, पर मैदान में डटे रहते हैं।'' मृत्यु शय्या पर पडा हुआ वह कहता है - ''हमारा दम उखड जाता है, हम हाँफने लगते हैं और खिलाडियों को मिला कर नहीं खेलते, आपस में झगडते हैं ...... कोई किसी को नहीं मानता।'' गाँव वालों में ऐक्य, संगठन अथवा परस्पर सहयोग की भावना के अभाव ने पूँजीवादी शक्तियों को उस पर विजयी होने का अवसर दिया है। यह स्थूल रूप से सूरदास की पराजय होने परभी उसकी नैतिक विजय है।

8. विनय - सोफिया :-

गाँधी वाद का प्रभाव विनयसिंह पर भी है। वह धन के प्रति कोई मोह प्रकट नहीं करता। उसका कथन है - हम जायदाद के स्वामी बन कर रहेंगे, उसके दास बनकर नहीं। गाँधी जी के आदर्शों के अनुसार ही वह वर्ग- संघर्ष के स्थान पर समाज में वर्ग-समन्वय की स्थापना करना चाहता है। सेवाभाव, त्याग, देश भक्ति आदि उसके चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ हैं। सोफिया मूल रूप से विनय का नारी संस्करण है। सोफिया के चरित्र के दो रूप हैं - (1) प्रेमिका और (2) क्रान्तिकारिणी। विनय के चरित्र के भी दो रूप देख जाते हैं - (1) सेवा तथा त्याग और (2) प्रेमी।

विनय-सोफिया के पारस्परिक प्रेम से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रेमचन्द को पेरम की नींव त्याग, बलिदान एवं सेवा-भाव पर स्थापित करना अभीष्ट है। उनके उपन्यासों में प्राय: प्रेम का परिणाम विवाह नहीं होता। इसीलिए सोफिया और विनय आदर्श प्रेम की प्राप्ति की ओर प्रयत्नशील रहते हैं। सामाजिक बन्धनों की समस्या का समाधान हो जाने पर भी प्रेमचन्द कीदृष्टि में उनका विवाह के लिए सहमत हो जाना ही उनकी असफलता का सूचक है। अन्त में दोनों का अपना व्यक्तित्व न रह कर प्रेमचन्द द्वारा नियन्त्रित व्यक्तित्व ही प्रतीत होता है।

Lesson Writer

ऐनम्पूडि कविता एम.ए.

प्रश्न :-

4. 'रंगभूमि' में व्यक्त तत्कालीन भारतीय समाज का चित्रण प्रस्तुत कीजिए।

रुपरेखा :-

1. प्रस्तावना
2. स्वाधीनता संग्राम का युग
3. संस्कार युक्त सामाजिक वातावरण
4. क्षेत्रीय सीमाओं का उल्लंघन
5. नगर तथा ग्रामीण वातावरण
6. उपसंहार

1. प्रस्तावना :-

प्रेमचन्द कृत 'रंगभूमि' उपन्यास में देश-काल एवं वातावरण का चित्रण विशेष महत्त्वपूर्ण है। उपन्यासकार ने कथानक के अनुसार वातावरण का सृजन किया है। तत्कालीन समाज के गुण-दोषों को स्पष्ट करने के लिए प्रेमचन्द ने तदनुकूल सामाजिक विचारधारा और परिप्रेक्ष्यानुकूल वातावरण पर कथा को प्रतिष्ठित किया है। फलत: 'रंगभूमि' तत्कालीन भारतीय जीवन का प्रामाणिक स्तर बन गया है। व्यक्ति, परिवार, समाज, धर्म, राजनीति और इतिहास के दर्शन होते हैं।

2. स्वाधीनता संग्राम का युग :-

'रंगभूमि' का समाज भारत के स्वाधीनता स्वाधीनता संग्राम के युग का समाज है। रंगभूमि में भारतीय जीवन-संघर्ष का विवरण उपलब्ध होता है। एक ओर पूँजीवाद के बढ़ते हुए प्रभाव का चित्रण है तो दूसरी ओर पूँवादी से लडते हुए स्वाधीनता की आकांक्षा रखनेवाले भारतीय समाज का यथार्थ रूप अंकित हुआ है। सन् 1900 से 1923 के बीच हुए कृषक आन्दोलन के राजनैतिक इतिहास की झलक रंगभूमि में प्रतिबिंबित है। उपन्यास में सामाजिक जीवन के अनेक पहलू चित्रित हुए हैं।

3. संस्कार युक्त सामाजिक वातावरण :-

रंगभूमि के सोफिया, सुभागी, विनय, सूरदास आदि पात्रों में धर्म और अन्धविश्वास के प्रति विरोध है तथ राजनीतिक एवं सामाजिक चेतना से परिपूर्ण है। गाँव, शहर या कस्बे, जहाँ का भी चित्रण

प्रेमचन्द ने किया है, वहाँ का समूचा जीवन उनके उपन्यासों में स्पष्ट दिखाई देता है। भैरों, बजरंगी और जगधर का पांडेपुर, जानसेवक, कुँवर भरतसिंह और राजा महेन्द्र कुमार सिंह का बनारस तथा सरकारी हुक्कामों की उदयपुर रियासत सभी अपने सम्पूर्ण भूगोल और इतिहास के साथ 'रंगभूमि' के रंगक्षेत्र में उपस्थित हैं। जो स्वाभाविक, सहज रूप से प्रेमचन्द के उपन्यासों का मुख्य आकर्षण बिन्दु है। प्रेमचन्द के उपन्यासों का मुख्य आकर्षण बिन्दु है। प्रेमचन्द स्वयं गाँव के होने के कारण वे उस सामाजिक वातावरण से पूर्णतया परिचित थे। गाँव की धरती सर्वत्र और सदैव उनकी दृष्टि में भारत-भाग्य-विधात्री है।

4. क्षेत्रीय सीमाओं का उल्लंघन :-

प्रेमचन्द के साहित्य में स्थानीय यथार्थवादी चित्रण से प्रारम्भ होकर अन्तर्देशीय बन जाती है। पांडेपुर का वातावरण भारत के प्रत्येक गाँव के वातावरण का दृश्य प्रस्तुत है। देश-प्रदेश, बोल चाल की भाषा, वेष-भूषा, कर्मकांड, दिनचर्या, भाव-विचार आदि सब मिलकर भारतीय सांस्कृतिक स्वरूप है।

वातावरण -चित्रण में प्रेमचन्द ने क्षेत्रीयता को अन्तर्देशीय बनाया है। काल-सीमा को उन्होंने इतिहास के पृष्ठ की भाँति कालातीत बना दिया है। उनके उपन्यासों में समय का थीम 'मिथ' के रूप में आया है। स्वाधीनता के संघर्ष-काल के बीच का समय है वह। प्रेमचन्द ने अपने समय के मनुष्य को अपने उपन्यासों में प्रतिबिम्बित किया है। वह मनुष्य या व्यक्ति भविष्य के मानव का आधार बना है। 'रंगभूमि' के सूरदास, सोफिया, प्रभुसेवक और जॉनसेवक ऐसे व्यक्ति हैं जो अपनी शाश्वत मानव-प्रकृति को लेकर सर्वकालीन बन गये।

5. नगर तथा ग्रामीण वातावरण :-

देशकाल तथा वातावरण पर विचार करने पर स्पष्ट होता है। कि प्रेमचन्द के उपन्यास अनेक रूपों में परस्पर सम्बद्ध हैं। भारतीय ग्रामीण एवं नागरिक समाज का चित्रांकन हुआ है। एक ओर किसानों की समस्याएँ हैं और दूसरी ओर शासन और शासित हैं, शोषक और शोषित हैं। समाज में शोषण और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष का नारा है। सूरदास विकेन्द्रीकरण के अदर्श की रक्षा के लिए, सामाजिक सुविधाओं के लिए तथा भूमि के लिए जीवन पर्यन्त संघर्ष करता रहता है। पूँजीपतियों के उद्योग-धन्धों से गाँवों की आर्थिक स्थिति के दुर्बल हो जाने का वैज्ञानिक तर्क वर्ग-संघर्ष का रूप धारण करता हैं। 'रंगभूमि' तत्कालीन सामाजिक-क्रिया व्यवहारों का दर्पण माना जाता है।

वातावरण की सृष्टि में प्रेमचन्द ने प्राकृतिक स्वरूप का भी सुन्दर चित्रण किया है। सूरदास के भीख माँगते समय प्रकृति का सजीव रूप का चित्रण हुआ है - ''कार्तिक का महीना था। वायु में सुखद

शीलता आ गई थी। संध्या हो चुकी थी। सूरदास अपनी जगह पर मूर्तिवान बैठा हुआ किसी इक्के या बग्धी के आशाप्रद शब्द पर कान लगाये था।''

विनय को बचाने के लिए सोफिया के आग में कूदने के लिए पहले से प्रेरक वातावरण तैयार किया जाता है - ''आत्मसमर्पण और आकर्षण का पवित्र सन्देश विराट आकाश में, नीख गगन में और सोफिया के अशान्त हृदय में गूँजने लगा। उसके रोम-रोम में भी ध्वनि, दीपक से ज्योति के समान निकलने लगी।''

6. उपसंहार :-

सारांश के रूप में कहा जा सकता है कि प्रेमचन्द सहजीवन वातावरण के सफल चित्रकार है। ग्रामीण वातावरण से जूझते हुए कृषक, आन्दोलनों की आँधी में जन समूह का प्रबल आवेग आदि का सजीव वातावरण प्रस्तुत करते हैं जिस से उनके उपन्यास सहज ही आकर्षण का केन्द्र बन जाते हैं।

Lesson Writer

ऐनम्पूडि कविता एम.ए.

प्रश्न :-

5. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में 'रंगभूमि' उपन्यास में दर्शित समस्याओं का मूल्यांकन कीजिए।

रूपरेखा :-

1. प्रस्तावना
2. उद्योग-प्रसार एवं ग्रामीण जीवन
3. पूँजीवाद से उत्पन्न बुराइयों का उल्लेख
4. तत्कालीन रियासतों की दशा
5. उपसंहार

1. प्रस्तावना :-

प्रेमचन्द के उपन्यासों की लोक प्रियता का प्रधान कारण उनकी समस्या-मूलकता ही है उपन्यास-कला के तत्त्वों की दृष्टि से भी वे गणनीय है। 'समस्या-निरूपण' की तुलना में 'तत्त्व-निरूपण' का महत्त्व अनिवार्य होने पर भी गोण माना जाता है। प्रेमचन्द अपने उपन्यासों में समस्या-निरूपण के साथ उस का समाधान भी प्रस्तुत करते हैं। 'रंगभूमि' समस्या मूलक उपन्यास है। इस उपन्यास में मुख्यात: दो समस्याओं का विस्तृत निरूपण हुआ है – (1) औद्योगीकरण की समस्या और (2) भारतीय रियासतों की समस्या इन समस्याओं के साथ-साथ 'रंगभूमि' कालीन ग्राम्य और नागरिक समाज के साथ अनेक उपसमस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं- जैसे - राष्ट्रीय एवं राज नीतिक समस्याएँ सामाजिक एवं पारिवारिक समस्याएँ आदि।

2. उद्योग-प्रसार एवं ग्रामीण जीवन :-

व्यापारियों तथा उद्योग पतियों के निहित स्वार्थों को आधुनिक महाजनों द्वारा सर्वाधिक प्रोत्साहन मिला है, जिस से हमारे देश की प्राचीन-ग्राम्य व्यवस्था छार-छार हो गई है। प्रतियोगिता, लोभ और स्वार्थ पर आधारित औद्योगिकरण प्रधान समस्या बन कर मौलिक संघर्ष का कार मौलिक संघर्ष का कारण सिद्ध हुआ है। 'रंगभूमि' उपन्यास इस मौलिक संघर्ष का 'महाभारत' है। पांडेपुर औद्योगिक शोषण का केन्द्र है। यह पुरानी ग्रामीण व्यवस्था और नई महाजनी शक्तियों के पारस्परिक संघर्ष का केन्द्र है। पुरानी ग्राम्य-व्यवस्था पर पडा हुआ पूँजीवादी सभ्यता का तीव्र प्रभाव उपन्यास की वस्तु का प्रेरक-

स्रोत है। औद्योगीकरण के कारण पुरानी सभ्यता के मूल्य टूटने लगे साथ ही गाँव के सामाजिक तथा आर्थिक सूत्र टूटने लगे। जमीन्दार और किसान के बीच का सम्पर्क अब पूँजीपति और मजदूर का सम्पर्क बनने वाला था।

औद्योगिक व्यवस्था का प्रतिनिधि जॉन सेवक है। वह पूँजीपतियों की हर नस से परिचित है। उसके पास पहुँच है, सिफारिशें हैं, चाप लूसी है, कपट है और औद्योगीकरण की दलीलें हैं। समय के रुख को वह भली – भाँति पहचानता है। धन के बलपर ऐसा जाल बनाता है कि जनता, शासन-तन्त्र और नेता सब उस में उलझ जाते हैं। बिना किसी के दु:ख-दर्द का ख्याल रखते हुए पूँजी पति का एक मात्र लक्ष्य धनोपार्जन होता है। ताहिरअली की धर्म भीरुता को त्रस्त करने के लिए वह बडे तार्किक विधान से वार्तालाप करता है।

पांडेपुर के किसानों पर कारखाने के फायदे का रंग चढ़ जाता है। बजरंगी को दूध, मलाई, मक्खन और उपले बेचने की सुविधा, ठाकुरदीन को पान की चौगुनी बिक्रीकी सुविधा, जगधर को निश्शुल्क पढ़ाई के लिए मदरसे की सुविधा, नायकराम के तीर्थ-यात्रियों के लिए धर्म शाला की सुविधा, का बखान कर जॉनसेवक कारखाने से सब का लाभ-ही-लाभ दिखाता है।

औद्योगीकरण का प्रभाव दिखाने में लेखक ने जॉन सेवक के कथनों के द्वारा दोहरी नीति से कामलिया है। (1) पूँजीवादी सभ्यता किस प्रकार राव-राज्यों से लेकर सामान्य जनता तक प्रलोभन पैदा कर रही है और (2) पूँजीपति कितने चातुर्य से सारे समाज को धोका देकर अपना स्वार्थ सिद्ध करता है। इस प्रकार उपन्यास में औद्योगीकरण के विरुद्ध व्यापक पृष्ठभूमि दिखाई देती है।

3. पूँजीवाद से उत्पन्न बुराइयों का उल्लेख :-

सूरदास की कथा गाँवों के औद्योकीकरण के विरुद्ध एक चुनौती है। मुनाफा और प्रतियोगिता पर आधारित औद्योगिक सभ्यता से पारस्परिकता पर आधारित भारतीय ग्राम्य-सभ्यता की टक्कर होती है। पहली का प्रतिनिधि जॉन सेवक है और दूसरी का सूरदास। सूरदास चट्टान की तरह दृढ़ है। वह किसी की मदद पर निर्भर न होकर अपने आत्मबल पर गाँव में सिगरेट का कारखाना खुलने की असुविधाओं के बारे में समझाता है – ''देहात के किसान अपना काम छोड कर मजदूरी के लालच में दौडेंगे, वहाँ बुरी-बुरी बातें सीखेंगे और अपने बुरे आचरण अपने गाँव में फैलाएँगे।' देहात की लडकियाँ, बहुएँ मजदूरी करने आएँगी और यहाँ पैसे के लोभ में अपना धरम बिगाडेंगी।

इस प्रकार प्रेमचन्द औद्योगीकरण के दुष्परिणामों का बीमत्स चित्र प्रस्तुत करते हैं। अपनी पुरानी सामाजिक व्यवस्था के प्रति अनुराग है। औद्योगीकरण को वे मानव-मूल्यों के गौरव को नष्ट करनेवाला मानते हैं। एक प्रकार से 'रंगभूमि' देहाती - जीवन के नाश की कहानी है। उपन्यासकार ने इस में ग्रामीणों की व्यापक दरिद्रता तथा औद्योगिक क्षेत्रों को केन्द्रित पीडा का विस्तार पूर्वक विवरण प्रस्तुत किया है।

4. तत्कालीन रियासतों की दशा :-

'रंगभूमि' में इस समस्या का सूत्रपात उदयपुर रियासत में जसवंतनगर से होता है। भारतीय रियासतें ब्रिटिश पोलिटिकल एजेंटो की कठपुतली बनकर जी रही थीं। मुख्य राजा- महाराजा शासक नहीं थे, वरन् वे अंग्रेजी रेजीडेंट थे। दोहरे-तेहरे आतंक और क्रूरता के दमन-चक्र में फँसी हुई प्रजा का दम घुट-घुटकर पिस रहा था।

कैदियों को मुक्त कराने के उद्देश्य से विनय जब उदयपुर के महाराज से मिलता है, तो महाराज को धरती खिसकती हुई नजर आती है। उस दशा पर विनय सोचता है - ''इतना नैतिक पतन, इतनी कायरता, यों राज्य करने से डूब मरना अच्छा है।''

क्लार्क उदयपुर का रेजीडेंट है। रियासत पर अपना अधिकार बताते हुए वह सोफिया से कहता है, ''उसका अधिकार सर्वत्र, यहाँ तक कि राजा के महल के अन्दर भी होता है।'' उस समय देशी रियासतों में शासक और शासित-सम्बन्ध शोषक और शोषित से अधिक कुछ भी नहीं थे।

देशी रियासतों का न कोई कानून था, न न्याय, न न्याय, न नैतिकता, न मर्यादा। विलासिता का नग्न नृत्य था, घूस और रिश्वतखोरी थी, जो नशीले बादशाह को प्रसन्न करने का साधन थी।

'रंगभूमि' उपन्यास में शासन की निरंकुशता, रियासतों की पंगुता, अराजकता, अव्यवस्था, अन्याय तथा भ्रष्टाचार का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

5. उपसंहार :-

राजनीतिक आयाम को छूते हुए सामाजिक स्थिति का सही विवरण प्रस्तुत करके 'रंगभूमि' में प्रस्तुत समस्याएँ जन जागरण का संदेश देती है। विधान-सभाओं की निष्क्रियता, नगरपालिकाओं की अधिकारहीनता, न्यायालयों का भ्रष्टाचार, पुलिस और जेल अधिकारियों का भ्रष्टाचार-इन समस्याओं को तीखा बना देता है और इस प्रकार तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक, भारतीय इतिहास सजीव होकर हमारी आँखों के सामने उपस्थित हो जाता है। गाँवों से लेकर नगरों तक की पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक समस्याएँ 'रंगभूमि' उपन्यास की मुख्य विषय-वस्तु बन गई है।

Lesson Writer

डॉ. शेख मौला अली

प्रश्न :-

6. 'रंगभूमि' उपन्यास में व्यक्त 'आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद' का मूल्यांकन कीजिए।

अथवा

'रंगभूमि' उपन्यास में गाँधी वादी विचार-दर्शन पर विचार कीजिए।

रूपरेखा :-

1. प्रस्तावना
2. यथार्थवादी कृति
3. प्रधान समस्या
4. आदर्शवाद
5. सुधारवादी दृष्टिकोण
6. उपसंहार

1. प्रस्तावना :-

गाँधीवादी विचारधारा की गरिमा को प्रकट करना 'रंगभूमि' उपन्यास का आदर्श उद्देश्य है। प्राय: इसी कारण उपन्यास के अन्त में नैतिक विजय निहित की गई है। गाँधी वादी आदर्श के प्रति श्रद्ध-आस्ता का मर्मस्पर्शी समर्पण व्यक्त होता है जिस में शाश्वत विजय की अनन्त आशा और असीम साहस और अनन्त आत्मबल है।

2. यथार्थवादी कृति :-

रंगभूमि उपन्यास के कथानक में वातावरण-निर्माण, चरित्र संयोजन तथा समस्याओं के निरूपण में यथार्थवाद परिलक्षित होता है। रंगभूमि का प्रधान विषय सामाजिक है। वह सामाजिक जीवन ग्राम और नगर दोनों में बिंधा हुआ है। हिन्दू, मुसलमान और ईसाई धर्मों से भी जुडा हुआ है। किशोर, युवक, वृद्ध तीनों अवस्थाओं से और स्त्री-पुरुषदोनों के जीवन की वास्तविकता का उद्घाटन करने में जुरे हुए हैं। भारतीय ग्राम्य जीवन की यथार्थ झलक पांडिपुर, जसवंतनगर की कथा में मिलती है। घूल- धक्कड, टूटी-फूटी सडकें, चुहल-ठठोली, ईर्ष्या-द्वेष, झगडे-टण्टे, भजन-कीर्तन, जादू-टोने, तन्त्र-मन्त्र,

अन्धविश्वास, सरलता-सन्तोष, लूट-खसोट, मारपीट-इन सब को मिलाकर निर्मित होने वाला जीवन सूर की झोंपडी, ठाकुरदीन का मन्दिर, भैरों की ताडी की दूलान, बजरंगी की गाय-भैंस, जगधर की डाह और सुभागी की कलह, भीलनी की जडी है और गंगा की पवित्रता है, बैल हैं, घंटियों की खनक है, खली और भूसे की महक है और आलों में सिकी बाटियों की सोंधी सुगन्ध, ऊबड-खाबड पगडंडियाँ और लुटेरों के अड्डे हैं।

काशी, उदयपुर और जसवन्तनगर के माध्यम से प्रेमचन्दने 'रंगभूमि' में उद्योग पति,राजा-महाराजा, बडे-बडे शानदार महल, घन और मान-सम्पन्न भूख, निर्मम स्वार्थ,थोथे तर्क, क्रूर शासक, लालची व्यापारी जो क्रूर, जटिल, छल-पकट, धोखा, आदि-आदि का चित्रण हुआ है। ये सब मिलकर जोंक की तरह गाँव की जनता से चिपट कर उनका रक्त चूसते हैं, विकास का बहाना कर विनाश के बीज बोते हैं और देश - द्रोह को देशभक्ति की संज्ञा देते हैं।

3. प्रधान समस्या :-

रंगभूमि की प्रधान समस्या औद्योगीकरण है। प्रेमचन्द यह समस्या प्रस्तुत कर सिद्ध किया कि औद्योगीकरण राष्ट्र-हितैषी नहीं है, वरन् व्यक्तिपरक स्वार्थीकरण है, जिसमें व्यक्तिगत स्वार्थ निहित है, समाजगत मानवीय गरिमा नहीं। व्यापारियों की चालें, दाँव-पेच, चाटुकारिता, नैतिक पतन और वाक्पटुता का पूर्णतथा विश्लेषण किया गया है। इस प्रधान समस्या के साथ-साथ देशी रियासतों की समस्या को भी उपन्यासकार ने उठाया है, जिस में राजाओं की पंगुता, कायरता, वैभव-विलास और कुटिलता को प्रकट कर उनके मुखों पर चढ़े हुए झूठी देश भक्ति एवं प्रजा-वत्सलता के चेहरे नोचकर जनता के सामने उनका वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत किया है। उपन्यास में ताहिर अली की कथा तीसरी पृष्ठ भूमि है, जिसके द्वारा मध्यवर्ग की गरीबी, घुटन, शोषण और सम्मिलित परिवार के झगडों का यथार्थ चित्र भी प्रस्तुत हुआ है।

4. आदर्शवाद :-

'रंगभूमि' उपन्यास में नई-नई कथाओं तथा पात्रों का संयोजन हुआ है। उपन्यासकार का उद्देश्य कथा-कहानी कहना मात्र नहीं है, वरन् मानव-जीवन के आदर्श को प्रस्तुत करना है। उपन्यासकार प्रेमचन्द ने अपने मनोनीत आदर्शों तथा सिद्धान्तों के प्रतिपादन के लिए स्थान-स्थान पर कथा को तोडा है, नए चरित्रों को जन्म दिया है और कुछ पात्रों के चरित्र के स्वाभाविक विकास की गति भी रोक दी है।

'रंगभूमि' का मूल कथानक हमारे देश में औद्योगीकरण के आरम्भ के साथ उत्पन्न हुई अनेक समस्याओं से सम्बद्ध है। प्रेमचन्द ने अपने आदर्शवाद को प्रधानता देकर ग्रामीण समाज की कठिनाइयों, इच्छाओं, आशंकाओं तथा नैतिक विचारों को 'रंगभूमि' में प्रकट किया है। जॉन सेवक के द्वारा औद्योगीकरण से समाज और देश के हित की हल्की-सी चर्चा करवाकर उसे चुप कर देते हैं, क्योंकि वह चर्चा उनके आदर्शवादी विचारों तथा उद्देश्य के प्रतिकूल पड़ती हैं। ताहिरअली और उसके समस्त परिवार की कथा उद्देश्यमूलक है। इस कथा के द्वारा प्रेमचन्द मध्यवर्गीय परिवार की प्रमुख समस्याओं तथा नैतिक मान्यताओं को चित्रित करते हैं।

5. सुधारवादी दृष्टिकोण :-

'रंगभूमि' उपन्यास में उपन्यासकार प्रेमचन्द का आधान्त सुधारवादी दृष्टिकोण रहा है। गाँधी वादी प्रभाव पूरे उपन्यास पर व्याप्त हुआ है। सूरदास गाँधीवादी विचारधारा का महान प्रतीक है। उसका समग्र जीवन गाँधीवादी आदर्श का व्यावहारिक रूप है। वह घृणा के बदले प्रेम, द्वेष के बदले सहानुभूति, हिंसा के बदले संतोष दिखा कर सब के हृदय जीत लेता है। भैरों में सद्वृत्तियाँ जाग उठती हैं, उसके घर की कलह मिट जाती है। बजरंगी, नायकराम, जगधर सब के मन शुद्ध होजाते हैं। राजा महेन्द्र कुमार सिंह और जॉनसेवक तक आत्म-ग्लानि का अनुभव करते हैं। हृदय-परिवर्तन का यह आदर्श गाँधीवादी आदर्श ही है। विनज की पथभ्रष्टता सोफिया के द्वारा परिशोधित होती है। वह अपने त्याग और अभिनन्दनीय कार्यों से रानी जाह्नवी का मन भी जीत लेती है। अत: सूरदास, सोफिया, विनय, प्रभुसेवक, इन्द्रदत्त और गांगुली की सर्जना प्रेमचन्द के आदर्शवादी दृष्टिकोण के पात्र हैं।

विनय और सोफिया आदर्श प्रेम के पात्र हैं। उनके प्रेम में कोई वासना नहीं, पवित्रता है; प्राप्ति की आतुरता नहीं, उत्सर्ग की उत्कण्ठ है। त्याग और सेवा-भाव प्रेम के विकास के सम्बल हैं। दोनों एक-दूसरे के लिए आत्मोत्सर्ग करके प्रेम के महान आदर्श की स्थापना करते हैं। वर्तमान युवकों के सामने प्रेमचन्द कर्मठता और लगन का आदर्श भी प्रस्तुत करते हैं।

6. उपसंहार :-

'रंगभूमि' उपन्यास की नींव यथार्थ पर टिकी है और अन्त आदर्शवाद में परिवर्तित हुआ है। सारी विधाओं में 'रंगभूमि' उपन्यास आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद की सफल कृति है।

Lesson Writer

डॉ. शेख मौला अली

प्रश्न :-

7. 'रंगभूमि' के 'सूरदास' का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

सूरदास 'रंगभूमि' उपन्यास का नायक है। निर्भीक, घुन का पक्का, सत्यनिष्ठ, न्यायप्रिय, नि:स्पृह, शान्त, सेवा-त्याग परोपकारिरत आदि उसके लक्षण है। उसकी अन्तर्दृष्टि सदा खुली रहती है। वह क्षीण-काय है। मानवोचित दुर्बलताओं से समन्वित होते हुए भी वह अनुरागपूण हृदयी और सच्चे अर्थों में वैरागी है सत्य, अहिंसा, अस्तेय और अपरिग्रह का वह मूर्तमान रूप है। वह अभागों का शरणदाता, दीन-दुखियों का सहायक, शत्रु-मित्र को समदरशी एवं गीता के निष्कामकर्म योग का व्यावहारिक रूप है। इसी कारण उस के शत्रु और मित्र शबी उसकी साधुता और दार्शनिकता के कायल हैं।

सूरदास का एक-एक शब्द अनेक ग्रन्थों का समाहार है। उसमें प्रतिशोध की भावना नहीं, वैमनस्य नहीं। वह अपना खेल प्रदर्शित करने आया था और सच्चे एवं पवित्र हृदय से खेल कर चला गया। पत्र-पुष्पों से उसकी झपडी बनी है। सूरदास की भौतिक अपजय में भी आत्मिक विजय का गौरव है और सब से बडी विजय है कि उसके मृत्यु के फलस्वरूप जनसत्तावादियों की शक्ति अनुदिन संघटित होती जाती है।

Lesson Writer

डॉ. शेख मौला अली

प्रश्न :-

8. **प्रेमचन्द की उपन्यास-कला का मूल्यांकन कीजिए।**

उत्तर-प्रेमचन्दयुगीन पृष्ठ-भूमि :-

श्री प्रेमचन्द की औपन्यासिक कला को उनकी युगीन पृष्ठभूमि में ही भली -भाँति समझा जा सकता है। युगीन परिवेश में ही उनके उपन्यास शिल्प का उदय और विकास हुआ है। अपने पूर्ववर्ती उपन्यासकारों से निस्सन्देह उन्हें उपन्यास रचना की प्रेरणा मिली, उससे वे असंदिग्ध रूप से युग-प्रवर्तक उपन्यासकार बन गये। अतः नाट्य-कला के क्षेत्र में जिस प्रकार श्री जयशंकर प्रसाद ने एक अभिनव दिशा एवं दृष्टि का पथ प्रशस्त किया, उसी प्रकार श्री प्रेमचन्दजी ने भी कथा - साहित्य को अभिनव प्राणों से स्पन्दित किया और उपन्यास के क्षेत्र में भी उन्होंने युग-स्थापना का कार्य किया।

हिन्दी उपन्यास का वास्तविक स्वरूप श्री प्रेमचन्दजी से ही निकलकर आया। पूर्व-प्रेमचन्द उपन्यासों में केवल दगो प्रवृत्तियाँ विशिष्ट थीं- मनोरंजन और मनोरंजन के साथ-साथ सुधारवादी भावना। मनोरंजन में घटना-वैचित्र्य का प्राधान्य, था तो सुधार भावना में उपदेशपरकता का। ये उपन्यास भारत के परम्परागत कथा साहित्य से प्रभावित थे। भारत में कथा - साहित्य की एक अखण्ड धारा रही है, जिसके अन्तर्गत वेद, ब्राह्मण, रामायण, महाभारत, पुराण, जैन-ग्रन्थ, जातक गाथाएँ, हितोपदेश, पंचतन्त्र, वैताल पंचविंशति आदि का उल्लेख किया जा सकता है। हिन्दी के पूर्व-प्रेमचन्द उपन्यास, पात्रों और उद्देश्यों में यथार्थ को प्रश्रय मिला हो। उपन्यास के पात्र, घटनायें सम्भावित एवं विश्वस्त हों। युग के परिप्रेक्ष्य में प्रेमचन्दजी ने ही सर्वप्रथम इस, प्रकार के उपन्यासों का प्रणयन किया। उनके उपन्यासों में, जिस औपन्यासिक शिल्प के दर्शन हुए, उसका संक्षिप्त पश्चिम इस प्रकार है -

1. **कथानक :-**

प्रेमचन्दजी ने उपन्यास को जीवन का चित्रण माना है। प्रेमचन्दजी के सभी उपन्यासों का कथाधार मानव-जीवन है। जीवन जैसा दिखाई दे रहा है, उसके यथार्थ को लेकर प्रेमचन्द के उपन्यासों का कथा-पट तैयार किया गया है। उनके सामने की जीता-जागता युग उनके उपन्यासों में उतर आया है। एक प्रकार से उनके उपन्यासों का कथानक तात्कालिक सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन का इतिहास है। समाज की अनेक समस्यायें उनमें प्रस्तुत की गई हैं, राजनीति की समस्त गतिविधियों का चित्रण किया गया है। समाजों के अन्धविश्वासों एवं रूढ़ियों की ओर इंगित किया गया है, अर्थजर्जर शोषित वर्ग की करुण कथा सुनाई गई है, मध्यवर्गीय जीवन के चित्र प्रस्तुत किये गये हैं।

कृषकों, जमींदारों, सरकारी अफसरों आदि से सम्बन्धित घटनायें कथानक में प्रस्तुत की गई है। प्रेमचन्दजी ने अपनी अनुभूति की व्यापकता के कारण जीवन के प्रत्येक पहलू और मानव के सभी वर्गों को अपने कथानक में स्थान दिया है। उनके कथानक जीवन के यथार्थ को ग्रहण करते हैं और अन्त में आदर्श की ओर उन्मुख हो जाते हैं। उनके कथानक मानव की इस धारा से सम्बद्ध है, कल्पना के गगन से नहीं। उनके कथानकों की घटनाएं तथा पात्र सभी चिरपरिचित से जान पड़ते हैं। सभी नियोजित घटनाएँ या तो जीवन में घट ही रडी हैं या घटित होने की पूर्ण सम्भावना है।

वस्तुतः प्रेमचन्द के उपन्यासों की कथा-वस्तु जीवन से सम्बद्ध है। उसमें यथार्थ है और स्वाभाविकता है। वह रोचक तथा कौतूहलपूर्ण है। अधिकाधिक कथा में उनके उपन्यासों की अवान्तर कथाओं का पर्यावसान होता है। संक्षेप में आज के बुद्धिवादी युग में जिस तर्कसंगत एवं स्वाभाविक कथानक की अपेक्षा है, प्रेमचन्द के उपन्यास उसके श्रेष्ठ निदर्शन हैं।

2. चरित्र - चित्रण या पात्र :-

प्रेमचन्दजी के उपन्यासों के पात्र इस विशुद्ध धरा-धाम के निवासी हैं, वे धरती-पुत्र हैं। मानवीय गुण-दोषों से वे युक्त हैं। उनके चेहरे चिरपरिचित से मालूम होते हैं। लगता है कि वे हमारे आस-पास मानव की इस ठोस धरा पर ही रहा रहे हैं। उनकी मनोदशा तथा उनके कार्यकलापों से हमारा तादात्म्य होता रहता है। अधिकांश पात्र ग्रामों के शोषित कृषक और पूँजीपतियों द्वारा त्रसित श्रमिक हैं। वस्तुतः उन्होंने मध्यवर्गीय समाज के पात्रोंको अपने उपन्यासों में प्रतिष्ठित किया है। उनकी व्यापक सहानुभूति ने निर्धन-धनी किसी भी वर्ग के पात्र को उपन्यासों में स्थान पाने से नहीं रोका। जमींदार, मिल-मालिक, पूँजीपति, राजा, नवाब, अँग्रेज शासक, भारतीय शासक, भारत की स्वतन्त्रता के संघर्षकर्त्ता, गाँधीजी के अनुयायी, स्त्री-पुरुष, बच्चे सभी प्रकार के पात्र उनकी लेखनी से उतरकर उपन्यासों में स्थान पा गये हैं। वे सब वास्तविक जीवन जीते हैं। उनसे सम्बद्ध घटनाएँ भी यथार्थ का आँचल नहीं छोड़तीं। प्रेमचन्द की सहानुभूति विशेष रूप से दलित एवं शोषित वर्ग के प्रति रही है और शोषक वर्ग की उन्होंने उन्मुक्त हृदय से भर्त्सना की है, किन्तु वर्ग-संघर्ष से वे सर्वथा मुक्त रहे हैं। गाँधीजी के मत के अनुसार उन्होंने पाप से घृणा की है, पापी से नहीं। इस दृष्टि से उन्होंने जमींदारों, पूँजीपतियों, प्रभुता के उन्माद में प्रवृत्त शासकों के अत्याचारों का चित्रण तो किया है, किन्तु उसकी प्रतिक्रिया में वर्ग-संघर्ष नहीं होने दिया। आर्थिक दृष्टि से जर्जर पात्र उन्हें अधिक प्रिय रहे हैं। संक्षेप में प्रेमचन्द वास्तविक के शिल्पी हैं। अतः उन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग के पात्रों की अपने उपन्यासों की विस्तृत भूमि पर अवतारणा की है। वे व्यक्ति भी हैं और वर्ग प्रतिनिध भी। उनके चरित्रों का उद्घाटन सर्वथा मनोवैज्ञानिक एवं

स्वाभाविक है। स्वयं के क्रियाकलापों, दूसरे पात्रों द्वारा तथा स्वयं प्रेमचन्द की लेखनी द्वारा उन चरित्रों का चित्रण हुआ है जो सहज एवं बोधगम्य हैं। वस्तुत: चरित्र-चित्रण की दृष्टि से प्रेमचन्द के उपन्यास औपन्यासिक शिल्प के स्वस्थ उदाहरण हैं।

3. उद्देश्य :-

प्रेमचन्द युग-जीवन की समस्याओं और उनके समाधानों को प्रस्तुत करना चाहते थे। उन्होंने यथार्थ के बीच से आदर्श को झाँककर देखा था। वे एक से एक अच्छे आदर्श स्थापित करना चाहते थे। अत: उनके सभी उपन्यास सोद्देश्य एवं साभिप्राय हैं। ऐसा साहित्य जिससे मानव का कल्याण न हो, उनकी दृष्टि में व्यर्थ था। उन्होंने केवल मनोरंजन के लिए अपने कथा-साहित्य का प्रणयन नहीं किया। वे वास्तविक युग-जीवन को अपने कथा-साहित्य में व्यक्त करने के पक्ष में रहे हैं, किन्तु जीवन के आदर्शों की स्थापना की दिशा में सदा जागरूक रहे हैं। उनके पात्र मानवीय दुर्बलताओं से ग्रस्त तो रहे हैं, किन्तु अन्त में उनका हृदय परिवर्तन हुआ है और वे मानव-संस्कृति के उच्च आदर्शों की ओर उन्मुख हुए हैं। इस प्रकार मानव चरित्र की व्याख्या करने के साथ ही साथ जीवन के उच्च आदर्शों की स्थापना उनका परम उद्देश्य रहा है। अपने काव्य में मानव के शिवत्व का जो उद्देश्य महाकवि तुलसी की दृष्टि में रहा था, जन-कल्याण का वही पावन उद्देश्य प्रेमचन्द के उपन्यास में भी सप्राण है।

दासता पीड़ित राष्ट्र-मानव में अपने राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिए जो उद्वेलन रहा है, उसको वाणी देना प्रेमचन्द का उद्देश्य रहा है। राष्ट्रीय जीवन के सागर में आने वाली हल्की से हल्की तरंग को भी प्रेमचन्द के उपन्यासकार ने अपने कथा-साहित्य में स्थान दिया है। समाज के स्वरूप, राजनीतिक संगठन, आर्थिक व्यवस्था और नैतिक परम्पराओं में बड़ी तेजी के साथ जो परिवर्तन आये हैं, उनको उन्होंने चित्रित किया है। प्रेमचन्द पहले उपन्यासकार हैं, जिन्होंने एक विस्तृत चित्रफलक पर अपने युग का सर्वांग सुन्दर चित्र प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत प्रेमचन्द ने युगीन जीवन के अनुरूप अपने साहित्य में उपयोगितावाद तथा सुधार- इन दो उद्देश्यों की पूर्ति की है। उक्त दोनों उद्देश्यों की पूर्ति में उन्होंने नीति एवं विवेक को साधन के रूप में अपनाया है।

अपने साहित्य-सृजन-विषयक उद्देश्य के सम्बन्ध में उन्होंने स्वयं लिखा है - साहित्य का सबसे ऊँचा आदर्श यह है कि उसकी रचना केवल कला की पूर्ति के लिए की जाये।......... पर कला के लिए कला का समय वह होता है, जब देश सम्पन्न और सुखी हो। जब हम देखते हैं कि मानव भाँति-भाँति के राजनीतिक और सामाजिक बन्धनों में जकड़े हुए हैं, जिधर निगाह उठती है, दु:ख और दरिद्रता के

भीषण दृश्य दिखाई देते हैं, विपत्ति का करुण क्रन्दन सुनाई देता है, तो कैसे सम्भव है कि किसी विचारशील प्राणी का हृदय पिघल न उठे। यही कारण है कि प्रेमचन्द के उपन्यासों में स्वदेश के उद्वार का, सामाजिक जीवन में श्रेष्ठ आदर्शों की स्थापना का, आर्थिक विषमता के निवारण का और नैतिक मूल्यों को जीवन में ग्रहण करने का प्रमुख उद्देश्य रहा है, जिसकी पूर्ति के लिए उनकी सफल एवं सक्षम लेखनी सतत् प्रयत्नशील रही है। इस प्रकार महान् कथा-शिल्पी ने अपने कथा-साहित्य में अपने इस महान् उद्देश्य को पूरा करने की निरन्तर चेष्टा की है।

4. देश-काल एवं वातावरण :-

देश-काल का चित्रण किसी भी उपन्यास का ऐसा प्रमुख एवं अनिवार्य तत्व है, जिसकी अवहेलना किसी भी कथा-शिल्पी के लिए असम्भव है। प्रेमचन्द के उपन्यासों में इस देश-काल का सजीव चित्रण हुआ है। उनके उपन्यास-साहित्य का समस्त कथा-सूत्र, घटनाएँ एवं पात्र देश-काल के रंगमंच पर उतरे हैं जो अत्यन्त स्वाभाविक एवं सजीव हैं। उनके उपन्यासों में उनके युग का राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं नैतिक जीवन चित्रित है। एक प्रकार से प्रेमचन्द-साहित्य अपने युग का विश्वस्त इतिवृत्त है। राष्ट्रीय चेतना से युक्त समस्त भारतीय जीवन उनके साहित्य में चित्रित है। भारतीय परिवर्तित सामाजिक जीवन भी उनके साहित्य में कम नहीं उभरा है। रूढ़ियों एवं गली-सड़ी परम्पराओं का व्यंग्यपूर्ण चित्रण भी उनके साहित्य में विद्यमान है तथा आर्थिक विषमताओं का सांगोपांग चित्रण है। संक्षेप में, देशकाल चित्रण के क्षेत्र में इस कथा-शिल्पी ने जिस कौशल की अभिव्यक्ति की है, वह हिन्दी साहित्य में अभूतपूर्व एवं अद्वितीय है।

5. कथोपकथन :-

कथोपकथन उपन्यास का प्रमुख तत्व है। कथोपकथन से उपन्यास के शिथिल प्रवाह को प्राण मिलते हैं। परिसंवाद से उसमें नाटकीयता आती है। स्वयं बोलते हुए पात्र पाठकों को अधिक आकृष्ट करते हैं और कथा-वस्तु अपने आप आगे बढ़ती है। इससे पात्रों के व्यक्तित्व एवं चरित्र का भी उद्घाटन होता है, भाषा में गति आती है और कथनों के माध्यम से अनेक सूक्तियों की अवधारणा होती है, जिनमें चिरन्तन सत्य के दर्शन होते हैं।

श्री प्रेमचन्द के उपन्यासों में परिसंवाद का पूर्ण विकास है। उनके सभी पात्र परस्पर अकृत्रिम भाव से बातचीत करते हैं। निस्सन्देह उनके कथा साहित्य में परिसंवादों का स्वाभाविक विकास हुआ है। सभी पात्र अपने स्तर के अनुसार भाषा का प्रयोग करते हैं। निरक्षर, अशिक्षित पात्र सामान्य बोलचाल की भाषा

में बार्तालाप करते हैं। जबकि शिक्षित पात्रों की भाषा परिष्कृत एवं परिमार्जित हैं। कहीं-कहीं लम्बे कथन भी हैं, किन्तु वे कथा प्रसंग के अनुकूल हैं, जिससे प्रवाह शिथिल नहीं हो पाता और पाठक ऊबने नहीं पाते। उपन्यासों की कथा को इनसे गति मिलती है और उपन्यासकार को भी कुछ विश्राम मिल जाता है। संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि प्रेमचन्द के उपन्यासों में कथोपकथन उन सभी गुणों से युक्त हैं, जिनकी उनसे अपेक्षा है। उनमें परस्पर संगति, स्वाभाविकता संक्षिप्तता, कथा-सूत्र को अग्रसर करने की क्षमता तथा पात्रों के चरित्र का उद्घाटन करने की पूरी-पूरी शक्ति हैं। हमारी सम्मति में वे परिसंवाद के कुशल शिल्पी हैं।

6. भाषा -शैली :-

प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में भाषा की दृष्टि से हिन्दी भाषा का परिनिष्ठित रूप अपनाया है। अशिक्षित पात्रों की भाषा में जहाँ स्थानीय तथा तद्भव शब्दों का प्रयोग है, शिक्षित पात्रों की भाषा प्रयोग में कृत्रिमता कहीं भी नहीं हैं। बीच-बीच में सूक्तियों का प्रयोग किया है। कहावतों तथा मुहावरों से भाषा को व्यवहारिक रूप मिला है। उपमाओं का सफल प्रयोग किया है। अन्तर्द्वन्द्व के चित्रण में भाषा को विशेष सफलता मिली है। वातावरण की सृष्टि भी भाषा के माध्यम से सजीव हुई है। शिक्षित पात्रों के कथनों एवं उपन्यासकार के अपने निजी विचारों में तत्सम प्रधान भाषा का प्रयोग हुआ है। इससे स्पष्ट है कि प्रेमचन्द की भाषा लोक व्यवहार की भाषा होते हुए भी साहित्यिक, सरल एवं बोधगम्य है। उसमें प्रवाह एवं कोमलता है। उन्होंने प्रसंगानुकूल उर्दू तथा अँग्रेजी के शब्दों का भी प्रयोग किया है, किन्तु इससे भाषा स्तर को कोई व्याघात नहीं पहुँचा। वस्तुतः प्रेमचन्दजी की भाषा सर्वथा कथा-सूत्र के अनुकूल है।

प्रश्न :-

9. प्रेमचन्द के कृतित्व एवं उपन्यासकार के रूप में उनका मूल्यांकन कीजिये।

उत्तर :-

प्रेमचन्द ने अपनी साहित्य-साधना में यद्यपि गद्य-साहित्य की अनेक विधाओं को स्पर्श किया है, किन्तु वास्तव में वे कथा-शिल्पी ही हैं। कहानी तथा उपन्यास के क्षेत्र में उनके कथा-शिल्प का विशेष उन्मेष जगा है। वे अपने इस क्षेत्र के एकमात्र सम्राट हैं। उनके कृतित्व का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

1. सेवासदन :-

प्रेमचन्द ने जीवनी-लेखकों के आधार पर श्री महावीर प्रसाद पोद्दार की प्रेरणा से 'सेवासदन' नामक उपन्यास हिन्दी में लिखा और तब से वे निरन्तर हिन्दी में लिखते चले गये। इसके पश्चात् उन्होंने 'रूठी रानी', 'वरदान' और 'प्रतिज्ञा' आदि उपन्यासों की रचना की। इन्हें 1900 ई. से 1906 ई. के बीच की रचनायें माना गया है। 'सेवासदन' उनकी तीसरी औपन्यासिक रचना है जिसे गोरखपुर में सन् 191 ई. में प्रकाशित किया गया। 'सेवासदन' का उर्दू रूप 'बाजर-हुस्न' लाहौर से सन् 1911 ई. के मध्य में दो किस्तों में प्रकाशित हुआ था।

'सेवासदन' को प्रेमचन्द के उपन्यासों और हिन्दी - उपन्यास-साहित्य में एक गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। इस उपन्यास की मुख्य कथा सुमन की कथा है। उपन्यास की कथा में स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक घटनाओं की अधिकता है। कथा को एक सूत्र में संग्रहीत करने में उपन्यासकार पूर्णतः सफल रहा है। इसमें लगभग 56 पात्र हैं, जिनमें 39 पुरुष करने में उपन्यासकार पूर्णतः सफल रहा है। इसमें लगभग 56 पात्र हैं, जिनमें 39 पुरुष और 17 स्त्री पात्र हैं। डॉ. कमलकिशोर गोयनका के शब्दों में कहा जा सकता है कि, 'सेवासदन' के एक 'बेहतरीन नॉविल' होने का एक कारण यह भी है कि लेखक एक प्रचारात्मक लेखक के रूप में न आकर एक कलाकार के रूप में सामने आता है।

2. प्रेमाश्रय :-

इसका रचनाकाल सन् 1918 ई. है, किन्तु इसका प्रकाशन सन् 1922 ई. में कलकत्ता से हुआ। उपन्यास की सम्पूर्ण कथा ज्ञानशंकर और प्रेमशंकर नाम के दो बिन्दुओं से संचालित होती है। उपन्यास में कथा-विकास की अनेक विधियों का प्रयोग किया गया है। 'सेवासदन' के समान 'प्रेमाश्रम' में भी लेखक की कथा-चेतना काफी समृद्ध है। उपन्यास में पात्रों की संख्या लगभग 80 है। इन पात्रों में प्रमुख पात्रों की संख्या 30 से अधिक नहीं है लेखक ने पात्रों के चरित्रोद्घाटन के लिए पूर्व विधियों का ही

प्रयोग किया है। प्रेमचन्द ने पात्रों की मुद्रा, मन:स्थिति, मन के रहस्यों, पात्र के स्वभाव, विचारधारा आदि में परिवर्तन को भी अपने शब्दों में प्रकट किया है। प्रेमचन्द ने पात्रों की चारित्रिक, वैचारिक आदि विशेषताओं, पात्रों की दृष्टि से एक-दूसरे की चरित्र रेखाओं को अपनी वर्णन शक्ति से उभारने की भी चेष्टा की है। लेखक ने चरित्रांकन के लिए।

'प्रेमाश्रम' को पात्रों के संवादों में देशकाल और चरित्र -चित्रण की प्रवृत्ति आद्योपांत देखी जा सकती है। इसकी भाषा में अँग्रेजी के लगभग 200 शब्दों का प्रयोग हुआ है।'प्रेमाश्रम' की भाषा में अँग्रेजी, अपभ्रंश, देशज, आवृत्तिमूलक आदि शब्दों का महत्वपूर्ण स्थान है। डॉ. कमलकिशोर गोयनका के शब्दों में कह सकते है कि, ''निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि अपनी कुछ दुर्बलताओं के होने पर भी 'प्रेमाश्रम' का प्रकाशन हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक घटना है। युग के सांस्कृतिक बहाव को चित्रित करने वाला उपन्यास, महाकाव्य की गरिमा से मंड़ित है और वह हिन्दी का प्रथम 'महाकाव्यीय उपन्यास' है।''

4. कायाकल्प :-

इसका प्रकाशन सन् 1930 ई. में हुआ। यह प्रेमचन्द का सर्वप्रथम उपन्यास है, जिसकी मूल पाण्डुलिपि हिन्दी में प्राप्त होती है।'कायाकल्प' की कथा दो विभिन्न एवं स्वतन्त्र कथाओं से निर्मित नहीं हुई है, जैसा कि 'कायाकल्प' के आलोचकों ने समझा। उसकी कथाओं का केन्द्र-बिन्दु एक ही है। 'कायाकल्प' उपन्यास की कथा छ: परिवारों की कथा है, जिनमें यशोंदानन्दन और ख्वाजा महमूद के परिवारों को छोड़कर शेष चार परिवारों का मुख्य कथा से सीधा सम्बन्ध है। उपन्यास की मुख्य कथा चक्रधर की कथा है, जो कथा में आद्योपात चलती है। उपन्यास में लगभग 15 प्रमुख पात्र हैं। 'कायाकल्प' में प्रेमचन्द ने पात्रों के अनुभव, मुख-मुद्राओं के चित्रण में कोई विशेष सजगता प्रकट नहीं की है! इसमें प्रेमचन्द ने पतनोन्मुखी सामंती समाज का यथार्थ चित्र खींचा है। नारी समस्या के चित्रण में उपन्यासकार ने बहुविवाह प्रथा और उसके परिणामों पर दृष्टिपात किया है। प्रेमचन्द ने ऐसी स्त्रियों की समस्या भी प्रस्तुत की है, जिनके कुल-शील का पता नहीं है और जो किसी के आश्रय में पलती हैं। इसमें प्रेमचन्द ने धर्मान्धता और साम्प्रदायिकता से उत्पन्न परिस्थितियों का चित्रण किया है। संक्षेप में हम कह सकते है कि 'प्रेमाश्रम' या 'कर्मभूमि' में प्रेमचन्द के 'कायाकल्प' का पूरा आभास मिलता है।

5. निर्मला :-

इसका प्रणयकाल सन् 1923 ई. है। सन् 1927ई. इसका लखनऊ से प्रकाशन हुआ। 'निर्मला' में मध्यवर्गीय समाज का चित्र प्रस्तुत किया गया है। प्रेमचन्द ने समाज-चित्रण के अन्तर्गत समस्या-चित्रण का पूरा ध्यान रखा है। इस उपन्यास में अनमेल विवाह और दहेज की समस्या पर दृष्टिपात किया गया है। दहेज और अनमेल विवाह का पारस्परिक सम्बन्ध दिखालकर उन्होंने उन कुप्रथाओं को व्यापक सामाजिक दुष्प्रभाव के रूप में प्रकट किया है। उपन्यास की समस्या कथा में बड़ी कुशलता से पिरोई गयी है। निर्मला की माँ दहेज न दे सकने के कारण उसका विवाह तोताराम के साथ करती है। तोताराम आयु में निर्मला के पिता के समान है।

6. प्रतिज्ञा :-

'चाँद' पत्रिका में निर्मला के धारावाहिक रूप से प्रकाशित हो चुकने के एक मास पश्चात् ही जनवरी सन् 1927 ई. से प्रतिज्ञा 'उपन्यास' धारावाहिक रूप से वर्णनात्मक विधि के अतिरिक्त मनोवैज्ञानिक विधि तथा नाटकीय विधि का भी प्रयोग किया है। उपन्यास में चरित्रांकन की दृष्टि से पात्रों के अन्तर्विवादों का विशेष महत्व है। प्रेमाश्रम में पात्रों के चरित्रांकन में महत्वपूर्ण योगदान किया है। 'सेवासदन' की भाँति ही प्रेमाश्रम में भी लेखक ने वर्णन की अपेक्षा पात्रों के संवादों को विशेष महत्व दिया है। उपन्यास के संवादों में कथा-विकास देशकाल-चित्रण व चरित्रांकन की विशेषताएँ विद्यमान हैं।

इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने अपने 20 वर्ष पुराने उपन्यास 'प्रेमा' के कथानक को आधार बनाया और उन्हीं पात्रों को लेकर उपन्यास की रचना की। 'प्रतिज्ञा' एक समस्या प्रधान कहानी के ढाँचे में निर्मित हुआ। विधवाओं की समस्या मुख्य कहानी के रूप में प्रस्तुत की गई है। इसी के अन्तर्गत प्रेमा और पूर्णा की कथाएँ आती हैं। प्रेमा की कहानी प्रेम और कर्तव्य की कहानी है। विषय की दृष्टि से पूर्णा की कथा प्रधान कहानी की समस्या के अधिक निकट है। उपन्यासकार के कर्त्तव्य की अभिव्यक्ति भी पूर्णा की कथा द्वारा सम्भव हुई है। प्रेमा और पूर्णा की कथाओं को अनुस्यूत करने के लिए प्रेमचन्द ने जिस कौशल से काम लिया है, यह पर्याप्त सफल है। दोनों कहानियों के सम्बन्ध-सूत्र यथेष्ट दृढ़ हैं।

3. रंग-भूमि :-

इसकी रचना तिथि सन् 1924-25ई. है। इसका प्रकाश-कार्य सर्वप्रथम लखनऊ में सम्पन्न हुआ। 'रंग-भूमि' विषय-वस्तु की दृष्टि से 'प्रेमाश्रम' से जुड़ी और आगे बढ़ी एक कड़ी है। 'रंग-भूमि' की सृजन प्रक्रिया और उसकी आधारभूमि को समझने के लिए लेखक द्वारा अँग्रेजी की व्यावसायिक

सभ्यता, मशीनी युग, औद्योगीकरण, शासन-नीति, देशी राज्य और लिबरल दल, स्वदेशी उद्योग, ग्राम्य जीवन आदि व्यक्त विचारों को देखना आवश्यक है। प्रेमचन्द औद्योगीकरण के पूर्णत: विरोधी नहीं थे। उपन्यास की मुख्य कथा सूरदास की कथा है। सूर की मुख्य कथा अनेक आरोह-अवरोहों एवं मोड़ों से होकर विकसित है। 'रंग-भूमि' के कथा-शिल्प की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि लेखक ने सूर की कथा को भी विकसित किया है। उपन्यास की अधिकांश घटनाएँ यथार्थ और प्रमाणिक हैं। 'रंग-भूमि' में कथा-शिल्प के लिए लेखक ने संकेत विधि का पर्याप्त उपयोग किया है। इसके लिए लेखक ने पात्र के संकल्प, आशंका, भविष्यवाणी आदि से भावी-कथा का संकेत किया है। उपन्यास की कथा-संरचना की कुछ ऐसी भी विशेषताएँ हैं। 'रंग-भूमि' की कथा को सुसम्बद्ध बनाने के लिए लेखक पूर्णत: सचेष्ट है। 'रंग-भूमि' में पात्रों की संख्या 100 से भी अधिक है। इन पात्रों में 45 के लगभग तो नामधारी पात्र हैं और शेष पात्रों को लेखक ने अनाम ही छोड़ दिया है। पात्रों के चरित्र-चित्रण के लिए 'रंग-भूमि' में लेखक ने अपनी पूर्व विधियों का प्रयोग किया है।

उपन्यास में पात्रों के सर्वप्रथम प्रवेश करने पर लेखक ने उनके जो शरीरिक चित्र अंकित किये हैं, उनमें 'रंग-भूमि' के अन्य स्थलों पर किये गये शरीरिक अवयवों के चित्रण से अधिक स्पष्टता है। उपन्यास में पात्रों की स्थिति विशेष की मुखाकृति, स्वर, अनुभव आदि का चित्रण तो अवश्य हुआ है, लेकिन वह 'रंग-भूमि' में यत्र-तत्र ही दृष्टिगत होता है। उपन्यास में लेखक ने पात्रों के चरित्रों को मनोवैज्ञानिक आधार भी प्रदान किया है। इस उपन्यास में पात्रों के अन्तर्विवादों की जिस मात्रा में संयोजना हुई है, उस मात्रा में अन्तर्द्वन्द्व अथवा भावनाओं के संघर्ष की स्थितियाँ विद्यमान नहीं हैं। इस उपन्यास में पात्रों की ग्रन्थियों कुण्ठाओं एवं अवचेतना मन के द्वन्द्वों तथा अन्धे व्यक्ति (भिखारी) की मनोवैज्ञानिक मन:स्थितियों को चित्रित करने में लेखक ने अपेक्षाकृत अधिक रुचि दिखाई है।

7. गबन :-

इसका प्रकाशन सन् 1930 ई. में हुआ। 'गबन' मध्यमवर्गीय समाज का चित्रण करता है इसमें नारी की सामाजिक - आर्थिक स्थिति पर दृष्टिपात किया गया है। इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने भारतीय पुलिस विभाग की कार्य प्रणाली का बड़ी निर्भीकता से पदाफाश किया है। इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने उन नेताओं की आलोचना की है जो देश के हित से अधिक व्यक्तिगत हित साधन में लगे रहते हैं। शोषण का प्रतिकार प्रेमचन्द की आत्मा का स्वर है। 'गबन' में समस्याएँ कथा द्वारा प्रस्तुत की गई हैं। वे कहानी से पृथक् नहीं हैं, इसलिए उपन्यास की कलात्मकता अक्षुण्ण है।

8. कर्म-भूमि :-

इसका प्रकाशन सन् 1932 ई. में हुआ। 'कर्म-भूमि' का प्रणयन गाँधीजी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन और उत्तर प्रदेश के किसानों के लगानबन्दी आन्दोलन की पृष्ठभूमि पर हुआ है। 'कर्मभूमि' की रचना के कुछ ही समय पूर्व 1928 में बारदोली के किसानों का आन्दोलन सफलतापूर्वक समाप्त हो चुका था। इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने हमारे समाज की आर्थिक विषमता का सजीव चित्र प्रस्तुत किया गया है। ये सामाजिक समस्याओं के अन्तर्गत तीन प्रश्नों पर व्यापकता से विचार किया गया है। ये हैं - पारिवारिक जीवन की समस्या, पतित स्त्रियों की समस्या और छुआछूत का प्रश्न। 'कर्मभूमि' की धार्मिक प्रवृत्तियों के मेल में पाखण्ड है। शिक्षा संस्थाओं की अर्थनीति का भी इस उपन्यास में यथार्थ चित्रण किया गया है। जनहित की दृष्टि से बनी म्युनिसिपैलिटी जैसी संस्थाएँ भी समर्थ और सम्पन्न व्यक्तियों के स्वार्थों को अग्रसर करने का साधन बन गई हैं। 'कर्मभूमि' के समाज पर गाँधी-युग की प्रवृत्तियों का व्यापक प्रभाव पड़ा है।

9. गोदान :-

इसका प्रकाशन सन् 1936 ई. में बनारस से हुआ। प्रेमचन्द की उपन्यास कला के सर्वोत्कृष्ट रूप के दर्शन उनके अन्तिम उपन्यास 'गोदान' में हुए थे। 'गोदान' को एक स्वर से हिन्दी का सर्वोत्कृष्ट उपन्यास घोषित कर दिया गया था। प्रेमचन्द सैद्धान्तिक यथार्थवाद के पोषक थे। सैद्धान्तिक स्तर पर सामाजिक यथार्थवाद का प्रतिनिधित्व अपने पूर्ण अर्थों में सर्वप्रथम 'गोदान' में ही हुआ।

'गोदान' प्रेमचन्द का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। जमींदारी पद्धति द्वारा शोषण के अन्तर्गत जमींदार, उसके कारिंदे आते हैं, महाजनी शोषण का भी बड़ा चित्रण 'गोदान' में हुआ है। ब्रिटिश नौकरशाही के 'हाकिम हुक्काम' अमले भी परोक्ष रूप से किसानों का शोषण करते हैं। गाँव के पंचों और बिरादरी का भय भी गरीबों को खा रहा है। प्रेमचन्द ने सम्पत्ति को ही सब प्रकारकी विपत्ति का मूल कारण माना है- वह चाहे सामंतीय सम्पत्ति हो या पूँजीवादी। 'गोदान' तक आते-आते ईश्वर और तथाकथित धर्म के प्रति प्रेमचन्द का मन विशेष रूप से अविश्वासी हो गया था। नगरों में पाश्चात्य प्रभाव के कारण नर-नारियों में स्वच्छन्द विहार और फैंशनपरस्ती की बुराई हद तक बढ़ती जा रही थी। गाँवों में अशिक्षा के कारण किसानों में अंधविश्वास, छुआछूत, जाति-पाँत, विधवा की विडम्बना, सास-बहू, ननद-भौजाई, पति-पत्नी, पिता-पुत्र, देवरानी-जेठानी के पारिवारिक झगड़े आदि बुराइयाँ पाई जाती हैं। प्रेमचन्द का उद्देश्य इन सब बुराइयों के प्रति हमारी घृणा जगाकर समाज की इस कुरूपता को बदलने की प्रेरणा देता है।

10. मंगल-सूत्र :-

प्रेमचन्द का अन्तिम उपन्यास 'मंगल-सूत्र' जिसकी रचना वे 1936 ई. में कर रहे थे। इसके चार परिच्छेद ही लिखे जा सके थे कि उपन्यासकार का देहावसान हो गया। 'मंगल-सूत्र' वर्तमान सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था के प्रति उपन्यासकार का बढ़ता असन्तोष व्यक्त करता है। इनमें नारी समस्या पर भी दृष्टिपात किया गया है। 'मंगल-सूत्र' अपूर्ण उपन्यास है, जिससे इसके लक्ष्य-संधान के सम्बन्ध में अन्तिम मत नहीं दिया जा सकता। ''किन्तु यह नि:संशय है कि इसके प्रत्येक परिच्छेद में आर्थिक सामाजिक अन्याय के विरुद्ध विद्रोह का विधान लोकमंगल के अदम्य विश्वास से अनुप्राणि है।''

संक्षेप में प्रेमचन्द के समस्त उपन्यासों का अध्ययन करने के पश्चात् हम कह सकते हैं कि प्रेमचन्द सुधारवादी थे और इसलिए वे वस्तु का चित्रण यथार्थ में करते हुए भी आदर्श उपस्थित करने का प्रयास करते हैं।

11. मंगलाचरण :-

प्रेमचन्द के कुछ प्रारम्भिक उपन्यास जो अभी तक अनुपलब्ध थे, 'मंगलाचरण' शीर्षक से प्रकाशित हुए। 'मंगलाचरण' में उनके चार प्रारम्भिक उपन्यास 'असरारे मआबिद उर्फ देवस्थान रहस्य', 'हमखुर्मा हमअसवाद', 'प्रेमा' तथा 'रूठी रानी' संकलित हैं। इनमें से दो उपन्यास 'असरारे मआबिद' एवं 'रूठी रानी' हिन्दी के लिए अज्ञात थे। प्रेमचन्द ने उन्हें उर्दू में लिखा और ये दोनों ही उर्दू पत्रिकाओं में क्रमश: छपे थे। 'असरारे मुआबिद' प्रेमचन्द की रचनाओं में सबसे पुरानी है। 'प्रेमा' हिन्दी में प्रकाशित होने वाला प्रेमचन्द का प्रथम उपन्यास है। यह बाबू नवाबराय 'बनारसी' के नाम से प्रकाशित हुआ था।

'किशना' (कृष्णा) का प्रकाशन सन् 1908 ई. में बनारस से हुआ था। 'रूठी रानी' का प्रकाशन उर्दू साप्ताहिक 'जमाना' में अप्रैल 1907 से अगस्त 1907 तक धारावाहिक रूप में हुआ था। 'वरदान' उपन्यास की रचना सन् 1905-06 के बीच में हुई थी। इस उपन्यास की मुख्य कथा प्रतापचन्द के जीवन की कथा है। 'वरदान' उपन्यास में वर्णनात्मक तथा नाटकीय विधियों से ही पात्रों का अधिकांश चरित्रांकन हुआ है। 'वरदान के शिल्प-विधान के आधार पर इसे एक साधारण कथाकार का साधारण उपन्यास ही माना जा सकता है।'

Lesson Writer

डॉ. शेख मौला अली

गोदान - प्रेमचन्द

अनुक्रमणिका :-

1. 'गोदान कृषक जीवन का महाकाव्य' कैसे?

अथवा

'गोदान' उपन्यास की कथावस्तु की व्याख्या कीजिए।

2. 'गोदान' उपन्यास में 'होरी' का चरित्र - चित्रण कीजिए।

अथवा

'गोदान' उपन्यास में होरी का चरित्र - चित्रण भारतीय किसनों के प्रतिनिधि के रूप में किया गया है, चर्चा कीजिए।

3. 'गोदान' उपन्यास में 'धनिया' का चरित्र चित्रण कीजिए।
4. गोबर का चरित्र-चित्रण कीजिए।
5. डॉ. मेहता का चरित्र-चित्रण कीजिए।
6. राय साहब का चरित्र - चित्रण कीजिए।
7. मिस मालती का चरित्र - चित्रण कीजिए।

पुस्तक का नाम 'गोदान'

ा. 1. 'गोदान कृषक जीवन का महाकाव्य है। कैसे?'

अथवा

'गोदान' उपन्यास की कथवास्तु की व्याख्या कीजिए।

अथवा

'गोदान में व्यक्त ग्रामीण जीवन एवं नगर जीवन का विवरण दीजिए।'

रूपरेखा :-

1. *प्रस्तावना*
2. *गाय की लालसा*
3. *गाय की मृत्यु*
4. *आर्थिक विषमता*
5. *संघर्ष और दबाव*
6. *मृत्यु*
7. *प्रासंगिक कथा*
8. *निष्कर्ष*

1. **प्रस्तावना :-**

गोदान प्रेमचन्द का अन्तिम और सब से प्रसिद्ध उपन्यास है। यह कृषक जीवन का महाकाव्य माना जाता है। उनके कुछ अन्य उपन्यासों की भाँति इस उपन्यास में भी दो कथानक हैं।

(1) प्रधान और ग्रामीण जीवन से सम्बन्धित और (2) प्रासंगिक तथा नागरिक जीवन से सम्बद्ध। होरी अवध प्रान्त के बेलारी गाँव में रहनेवाला एक किसान है। उसकी पत्नी. धनिया है, गोबर पुत्र है सोना और रूपा दो पुत्रियाँ हैं। शोभा और हीरा उसके दो भाई हैं। होरी अपने कठिन परिश्रम द्वारा जीविकोपार्जन करता और परिवार की प्रतिष्ठा बनाये रहता है।

2. गाय की लालसा :-

भाइयों में बँटवारा हो जाने के पश्चात घर की आर्थिक परिस्थिति विषम बन जाती है। ऐसी स्थिति में होरी सेमरी गाँव में रहनेवाले राय साहब अमरमाल सिंह जमीन्दार को प्राय: सलाम करने चला जाता है और अपनी व्यावाहारिक कृषक बुद्धि का परिचय देता है। एक बार जमीन्दार के यहाँ जाते समय भोला की गाय देख कर उसके हृदय में भी गाय की लालसा उत्पन्न होती है अपने गौरव, प्रतिष्ठा तथा किसान - जीवन के लिए होरी गाय रखना आवश्यक प्रतीत होता है। भोला को वह दूसरा विवाह करा देने और मुफ्त भूसा देने का लोभ बताता है, पुत्र गोबर को साथ लेकर वह भोला के घर भूसा डाल भी आता है। इसी अवसर पर भोला की विधवा लडकी झुनिया और गोबर परस्पर मुग्ध हो जाते हैं। शाम को गोवर गाय लेकर पहुँचा तो होरी आँगन में बाँध देता हैं। गाँव के सारे लोग गाय को देखने के लिए आते हैं, किन्तु होरी का भाई हीरा और उसकी पत्नी पुनिया न आते हैं।

3. गाय की मृत्यु :-

एक दिन अवसर पाकर हीरा गाय को जहर देता है और घर से भाग जाता है। होरी की पत्नी इस बात पर तूफान मचा देती हैं। गाँव के चौकीदार की सूचना के आधार पर पुलिस थानेदार आकर हीरा के घर की तलाशी लेता है, तो होरी परिवार की प्रतिष्ठा बनाये रखने की दृष्टि से इस बात का विरोध करता है । होरी कर्ज लेकर थानेदार को रिश्वत देने तक तैयार हो जाता है। लेकिन होरी की पत्नी धनिया अपना असली रूप प्रकट कर होरी को कर्ज लेने और रिश्वत देने से बचाती है। थानेदार खाली हाथ ही लौट जाता है।

4. आर्थिक विषमता :-

होरी सब प्रकार के कष्ट सहन करते हुए भी अपनी सज्जनता, सरलता तथा सहृदयता नहीं त्यागता। अपने पुत्र गोबर और झुनिया के गुप्त प्रेम - व्यवहार के कारण गाँववालों के लांछन तक वह सहता है। होरी की दश दिन - ब-दिन बिगडती और गिरती जाती है। खलिहान में अनाज तैयार होने से उत्पन्न होने वाली प्रसन्नता उसे प्राप्त न हो पायी। झुनिया को लेकर पंचायत ने उस पर सौ रुपये नकद और तीस मन अनाज का जुर्माना किया तो उसकी आर्थिक दशा और भी बिगड गयी। उसी दिन रात को झुनिया के लडका हुआ और होरी ने लाचार होकर कुछ अनाज और अस्सी रुपये पर अपना घर झिंगुरी सिंह के हाथ गिरवी रख कर बिरादरी का जुर्माना अदा किया। गोबर घर छोड कर लखनऊ में मजदूरी करने लगता है।

होरी महाजनों के शिकंजों में पूरी तौर से फँस चुका था। ऐसी दुर्दशा में भी वह अपने भाई की पत्नी पुनिया की सहायता करता रहता है। भोला भी अपने रुपयों के लिए बार - बार तकाजा करता है और एक दिन गाँववालों के मना करने पर भी होरी के बैल को खोल ले जाता है। फलतः होरी खेतिहर से मजदूर हो जाता है। विवश होकर होरी दातादीन के साझे में आधी बँटइ पर काम करता है। ईख कटी जाती है तो झिंगुरी सिंह और नोखेराम उसकी सारी कमाई ले लेते हैं। अब होरी दातादीन का नौकर हो जाता है। साथ में धनिया, सोना और रूपा भी मजदूरी करती है। सार घर आर्थिक विषमता के कारण पिस जाता है।

5. संघर्ष और दबाव :-

एकदिन काम करते - करते होरी को लू लग जाती है और वह बीमार पड जाता है। गोबर अचानक आ पहुँचता है। गाँव में वह अपना रोब जमाता है और भोला के यहाँ से अपने बैलों की जोडी भी वापिस ले आता है। वह चाहता है कि होरी अपनी सिधाई छोड दे, जिसके लिए होरी सहमत नहीं होता। अना में गोबर झुनिया और बच्चे को लेकर फिर लखनऊ वापिस चला जाता है। होरी अब महाजनों के चंगुल में पूर्णतः फँस जाता है। दुलारी सहुआ इन और नोहरी से उधार लेकर सोना का विवाह मथुरा के एक किसान के बेटे से कर देता है। साथ ही गाँव की सिलिया चमाइन को भी घर में आश्रय देता है। लेकिन होरी अब ऋण के बोझ से दबा जा रहा है। जीवन के संघर्ष में वह चूर-चूर होता जाता है।

6. मृत्यु :-

गोबर लखनऊ से वापस आता है। अब की बार उसके हृदय में पिता होरी के प्रति सहानुभूति होती है। होरी मजदूरी पर पेट भर लेता रहता है। उसके भाई हीरा और शोभा भी लौट आते हैं। होरी उनका सहृदयतापूर्ण स्वागत करता है। किन्तु अब वह शक्ति हीन हो जाता है। पुत्र, भाई आदि सब लोग होरी की सहृदयता तथा सज्जनता से द्रवीभूत हो जाते हैं। भौतिक रूप से तथा आर्थिक रूप से होरी कुचला जाता है, किन्तु मानसिक स्तर पर वह प्रसन्न रहता है। उसके टूटे - फूटे अस्त्र उसकी विजय-पताकाएँ बनते हैं। मजदूरी करते - करते उसे लू लग जाती है और उसकी मृत्यु के दिन समीप हो जाते हैं। गाय की उसकी लालसा पूर्ण हो न पाई, पत्नी धनिया आँसू बहाने लगती है हीरा रोते हुए कहता है,

''भाभी दिल कडा करो, गोदान करा दो, दादा चले।'' धनिया उस दिन सुतली बेचकर बीस आने लाई थी। पति के ठण्डे हाथ में रखकर सामने खडे दातादीन से कहती है, ''महाराज, घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा। यही पैसे है, यही इनका गोदान है।''

7. **प्रासंगिक कथा :-**

नगर से सम्बन्धित प्रासंगिक कथा के रायसाहब अमर पालसिंह, 'बिजली' पत्र के सम्पादक पण्डित ओंकारनाथ, बीमा कम्पनी के दलाल मि० तनखा, प्रोफेसर मेहता, लेडी डाक्टर मालती, मिल-मालिक खन्ना, उनकी पत्नी गोविन्दी, मिर्जाजी आदि प्रमुख पात्र हैं। रामलीला में धनुष - यज्ञ के अवसर पर सभी एक दूसरे से परिचित हो जाते हैं और वे अपने - अपने सामाजिक एवं राजनीतिक विचार प्रकट करते हैं। सभी अपने - अपने वर्ग के अनुसार विचार रखते हैं। मिर्जाजी के कारण उस मित्र - मण्डली का काफी मनोरंजन होता रहता है। अभिनय, शिकार, कबड्डी आदि से उन लोगों को मन - बहलाव के साधन मिल जाते हैं। शिकार पार्टी में मेहता और मालती के बीच घनिष्टता बढ़ती है। मालती बाहर से तितली और भीतर से मधुमक्खी है। प्रारम्भ में मेहता अपने भावुकता पूर्ण आदर्श के कारण उसे ठीक-ठीक नहीं समझ पाते। खन्ना रसिक व्यक्ति हैं, किन्तु इस काय में उन्हें सफलता नहीं मिलती। वे पूरे व्यवसायी और पूँजी पति हैं, स्वार्थ - साधना उनके जीवन का प्रधान लक्ष्य है। मजदूरों की हड़ताल का सामना करने के बाद उनकी मिल जल जाती है, तो उनका हृदय परिवर्तित हो जाता है और वे अपने पिछले जीवन पर क्षोभ प्रकट करते हैं। उधर मेहता और मालती परस्पर और निकट हो जाते हैं। वे विवाह के द्वारा अपने व्यक्तित्वों को संकीर्ण परिधि में न बाँध कर मित्र भाव से साथ - साथ रह कर समस्त विश्व को अपना ही परिवार मानकर, दीन जनों और पीडितों की सेवा में रत हो जाते हैं।

8. **निष्कर्ष :-**

उपन्यास का अन्त अत्यन्त हृदय द्रवक है। इस में प्रेमचन्द का जीवन संचित अनुभव और उनकी कला का निखरा हुआ रूप मिलता है। उन्होंने चारों ओर के जीर्ण - शीर्ण एवं विशृंखल होते हुए सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। कानून बदलने या थोडे-से सुधारवादी कार्यों द्वारा इस समाज का त्राण नहीं हो सकता। उस में तो आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है। होरी भी बहुत कुछ इस समाज का की उपज है, किन्तु सामन्तों, पूँजीवादियों, धर्म के ठेके दारों आदि से वह कहीं महान है क्यों कि इस समाज में इहलोक और परलोक सभी पैसेवालों का है। इसी कारण होरी संघर्ष की चक्की में पिस जाता है। संसार को चुनौती देकर वह चला जाता है। उसकी चुनौती जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के पीडित एवं दलित व्यक्ति की चुनौती है। प्रेमचन्द ने इसी उपन्यास में जनवाद और सेवा - मार्ग की स्थापना भी की है। उन्होंने अपने समकालीन भारतीय जीवन का 'गोदान' उपन्यास में सुन्दर और विशद चित्रण किया है।

Lesson Writer

डॉ. शेख मौला अली

प्र. 2. 'गोदान' उपन्यास में 'होरी' का चरित्र चित्रण कीजिए।

अथवा

'गोदान' उपन्यास में 'होरी' का चरित्र - चित्रण भारतीय किसानों के प्रतिनिधि के रूप में किया गया है।

रूपरेखा :-

1. प्रस्तावना
2. किसानों का प्रतिनिधि
3. द्वार पर गऊ के दर्शन
4. व्यवहार कुशलता
5. परिवार के प्रति कर्त्तव्य
6. भ्रातृ - प्रेम
7. न्याय तथा धर्मबद्धता
8. सांस्कृतिक चेतना
9. मृत्यु
10. उपसंहार

1. **प्रस्तावना :-**

होरी गोदान उपन्यास का नायक तथा केन्द्र बिन्दु है। सारी कथा, पात्र, वातावरण आदि उसी को आधार बनाकर बढ़ते रहते हैं। उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द ने होरी को भारतीय किसानों के प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत किया है। गोदान उपन्यास में होरी का चरित्र - चित्रण यथार्थ पर खींचा गया है।

2. **किसानों का प्रतिनिधि :-**

होरी साधारण भारतीय किसान है। वह अवध प्रान्त के बेलारी गाँव के पाँच बीधे जमीन का किसान है। किन्तु वह सारे भारत के किसानों के प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत होता है। उसका सारा जीवन आर्थिक विषमताओं में बीतता है। दवा-दारू न करने के कारण उसके तीन बेटे चल बसते हैं। उसका अनाज सब-का-सब खलिहाने में ही तुल जाता है। जमीन्दार और महाजन

अपना – अपना ले लेते हैं। होरी के लिए पाँच सेर अनाज बच जाता है। किसी का व्याज भी न चुकता है। जमीन्दार के भी आधे रुपये बाकी रह जाते हैं। अपनी आर्थिक विडम्बना पर चिन्ताग्रस्त होरी भालें से कहता है – ''हमारा जन्म इसीलिए हुआ है कि अपना रक्त बहाएँ और बडों का घर भरें। मूल का दुगुना सूद भर चुका, पर मूल ज्यों का – त्यों सिर पर सवार है।''

होरी हृदय प्रधान पात्र है। परिवार के प्रति वह अनुरागयुक्त व्यवहार करता है। वह स्वयं कष्ट सह कर दूसरों की सहायता में मग्न होता है। वह नादान, अशिक्षित तथा धर्मभीरु, है। परिवार का आदर रखने के लिए वह सदा – तैयार रहता है, बिरादरी तथा पंचों की बात मानता है। भाग्य पर उसका अटूर विश्वास है। वह गालियाँ सुन कर भी शान्त रहता है। गोबर से वह कहता है, ''हमें तो कोई हवालात नहीं ले जाता। दो-चार गालियाँ – घुडकियाँ ही तो मिल कर रह जाती हैं।''

होरी में किसान सहज दुर्बलताएँ होती हैं। घर में दो – चार रुपये होने पर भी वह महाजन के सामने एक पाई भी नहीं रहने की कसम खाता है। सनको कुछ गीला कर देना और रुई में कुछ बिनौले भर देना किसान सहज दरिद्रता को व्यक्त करते हैं। वह कभी डींग मारने में संकोच भी नहीं करता । किसान होने पर वह कहता है कि खेती में जो मरजादा है वह नौकरी में नहीं हैं।

3. द्वार पर गऊ के दर्शन :-

गाथ भारतीय संस्कृति तथा भाग्य की प्रतीक है। भारतीय किसान के रूप में होरी कहता है। ''गऊ से ही द्वार की शोभा है। सबेरे – सबेरे गऊ के दर्शन हो जाय तो क्या कहना।'' उसकी आशा है कि गाय को द्वारा पर बँधे देख कर कोई पूछे, 'यह किसका घर है?' और लोग कहे, ''होरी मेहता का'' यह होरी के लिए गौरव और गर्व का विषय होगा।

''अगले दिन गाय आनेवाली है।'' भावना में होरी को नींद नहीं लगती।'गाय को कहाँ बाँधे!' इस प्रकार की सोच में वह लगा रहता है। गाय के आने पर उसके आनन्द की सीमा नहीं रहती। फिर गाय के मर जाने पर उसके दु:ख की सीमा नहीं रहती । जीवन के अन्तिम दिनों में भी वह मंगल के लिए गाय लेना चाहता है, किन्तु उसकी इच्छा पूरी नहीं होती ।

4. व्यवहार कुशलता :-

होरी अशिक्षित होने पर भी व्यवहार कुशल है। मालिकों की खुशामद करने में वह प्रयोजन देखता है। स्वयं वह अपने पुत्र गोबर को समझाता है, ''सलामी करने न जाये, तो रहे कहाँ?

भगवान ने जब गुलाम बना दिया है तो अपना क्या बस है? यह इसी सलामी की रत है कि द्वार पर मडैया डाल ली और किसी ने कुछ नहीं कहा। धूरे ने द्वारा पर खूँट गाडा था, जिस पर कारंदों ने दो रुपये डाँड ले लिये थे। तलैया से मिट्‌टी हग ने खोदी, कारिन्दा ने कुछ नहीं कहा। दूसरा खोदे तो नजर देनी पडे!''

पाँच बीघे के किसान की बिसात ही क्या है? ती-तीन, चार-चार हलवाले महतो भी उसके सामने सिर झुकाते हैं। यह सब मालिकों से मिलते - जुलते रहने का ही प्रसाद है कि सब उसका आदर करते हैं। साथ ही होरी लोगों की दुर्बलता को जानने में कुशल है। भोला की बातों से पहचान लेता है कि बुड्‌ढ़े के मन में स्त्री की साघ है। वह सगाई की ऐसी सूचना देता है कि भोला तुरन्त नकद रुपये बिना लिये गाय देने के लिए तैयार होता है।

5. परिवार के प्रति कर्त्तव्य :-

होरी पत्नी धनिया, पुत्र गोबर और लडकियाँ सोना, रूपा के प्रति सदा कर्तव्य रत रहता है। वह पत्नी धनिया के प्रति अतुलित प्रेम तथा सहानुभूति रखता है। धनिया का सारा जीवन संकटमय रहा। इस लिए होरी चिन्ताग्रस्त रहता है। दिन भर वह काम में लगी रहती है। बेचारी अपनी देवरानियों के फटे पुराने कपडे पहन कर दिन काटती है, खुद भूखी रहकर परिवार को खिलाती है, उस की देह पर गहने के नाम का कच्चा धागा भी न रहता है। होरी पत्नी की स्थिति पर तरस खाता है। हाँ दोनों के बीच गालियाँ - मार-पीट भी कभी-कभी चलती रहती है।

होरी अपने पुत्र गोबर का भी बहुत ख्याल रखता है। पुत्र के शहर भाग जाने की बात सुनने पर होरी की प्रतिक्रिया का वर्णन करते हुए प्रेमचन्द लिखते हैं - ''उसे भोग की चिन्ता नथी, पंचायत का भय भी न था। झुनिया घर में कैसे रहेगी, इसकी चिन्ता भी उसे न थी। उसे चिन्ता थी, गोबर की। लडका लज्जाशील है, अनाडी है, आत्माभिमानी है, कहीं कोई नादानी न कर बैठे !''

शहर लौटते समय गोबर माँ-बाप की निन्दा करता है तो धनिया पुत्र से वाद-विवाद करने लगती है। होरी पत्नी को समझाता है, ''जो आदमी नहीं रहना चाहता, क्या उसे बाँध कर रखोगी? माँ-बाप का घरम नहीं है। जो जाता है, असीस दे कर बिदा कर दो।'' इतनी दुविधा में भी उसके मुँह से पुत्र के प्रति एक बुरा शब्द नहीं निकालता है।

अलगौझे के पश्चात, होरी के घर की आर्थिक दशा बिलकुल बिगड जाती है। रास खलिहान में तुलजाती है। वह सोचने लगता है- पुत्री सोना ब्याहने होती है। दो - तीन सौ लडके को देना पडता है। उतना ही ऊपर का खर्च भी होता है। लडकी का ब्याह न होने पर सारी बिरादरी में हँसी होगी।

6. **भ्रातृ - प्रेम :-**

होरी संयुक्त परिवार का समर्थक है। दोनों भाई हीरा और सोभा अलग रहते हैं तो होरी को बडा दु:ख होता है। अलगौझे के बाद भी वह अपने भाइयों के प्रति अनुरक्त रहता है। वह गाय ले आता है तो उसे देखने के लिए सारा गाँव आता है, किन्तु उसके भाई नहीं आते। वह स्वयं जाकर भाइयों को बुलाता है। हीरा की बातें सुनकर वह स्तब्ध रह जाता है।

द्वेष पूरित हीरा गाय को विष देकर मार डालता है। होरी नहीं चाहता कि हीरा के घर की तलाशी हो। वह समझता है कि तलाशी उसके घर की हो उसके भाई के घर की, एक ही बात है। पुलिस की तलाशी को वह सम्मान के विरुद्ध समझता है। अत: वह दारोगा को रिश्वत देकर भी अपने भाई की रक्षा करना चाहता है। हीरा की रक्षा के लिए वह अपने बेटी की कसम खाकर झूठ बताना है।

हीरा पुलिस के डर से घर छोड कर भाग जाता है, तो होरी भाई के घर का निर्वाह भी अपने कंधों पर ले लेता है। वह अनाथा भावज बोआई-जोताई का निर्वाह करता है। जीवन के अन्तिमय समय में भी होरी, भाई हीरा की याद करता है।

7. **न्याथ तथा धर्मबद्धता :-**

होरी किसी से कौडी भी मुफ्त में नहीं लेता। गाय के बदले वह पुत्र गोबर से भोला के घर पहुँचा देता है। होरी की आर्थिक स्थिति और भी बिगड जाती है। गोबर झुनिया के साथ विव्राह कर लेता है। भोला होरी के घर आकर गाय के पैसे मांगता है। वह शर्त लगाता है कि होरी झुनिया को घर से बाहर निकाल दे या अपने दोनों बैल दे दे। भोला होरी के दोनों बैलों को लेकर चलने लगता है। वह झुनिया से कहता है, '' डर मत बेटी, डर मत। तेरा घर है, तेरा द्वार है, तेरे हम हैं। आराम से रह। जैसी तू भोला की बेटी, वैसे ही मेरी बेटी है। जब तक हम जीते हैं, किसी बात की चिन्ता मत कर।''

मातादीन की रखेली सिलया पूर्णतया निराश्रित होती है तो, होरी उसे आश्रय देता है। दातादीन से होरी कभी तीस रुपये लेता है। उसका मूल और सूद मिलाकर दो सौ रुपये हुए

हैं तो होरी दातादीन के चरण पकडकर कहता है, ''महाराज जब तक मैं जीता हूँ, तुम्हारी एक-एक पाई चुकाऊँगा।''

भोला बैलों को लेजाने लगता है, होरी उसके धर्म पर छोड देता है। दातादीन, पटवारी आदि उसका विरोध करते हैं। होरी उनको समझाते हुए कहता है, ''मैं ने इनके धरम पर छोड दिया और इन्होंने बैल खोल लिये।''

होरी भाग्य पर विश्वास रखता है और पूर्व जन्म के कर्मों का फल मानता है। वह गोबर को समझाता है ''रायसाहब ने पूर्वजन्म में जैसे कर्म किये हैं, उनका आनन्द भोग रहे हैं। हम ने कुछ नहीं संचा, तो भोगें क्या? छोटे - बडे भगवान के घर से बन कर आते हैं। संपत्ति बडी तपस्या से मिलती है।''

8. सांस्कृतिक चेतना :-

होरी का जीवन अत्यन्त गरीबी और अव्यवस्था में ही बीतता है। दमडी बँसोर को वह बीस रुपये सैकडे के दाम से बाँस बेचता है। उस पैसे में भाइयों का भी हिस्सा होता है। इस लिए वह भाइयों को पंद्रह रुपये बताने के लिए तैयार होता है। बचे पैसे रायसाहब को नजराने में अदा करना चाहता है। बँसोर कहता है, ''क्या तुम भाइयों के थोडे-से पैसे दबा कर राजा हो जाओगे? ढ़ाई रुपये पर अपना ईमान बिगाड रहे थे और मुझे उपदेश भी देते हो। परदा खोल दूँ तो सिर नीचा हो जाये !'' होरी नीम के नीचे बैठे पछताने लगता है। वह सोचने लगता है कि वह कितना लोभी और स्वार्थी है।

होरी साधारण जीवन का प्रतीक है। रायसाहब से मिलने जाने लगता है। तो धनिया लाठी, मिरजई जूते, पगडी और माखू का बटुआ ला देती है। तब होरी कहता है। ''क्या ससुराल जाना है, कोई पाँचों पोसाक लायी है। ससुराल में भी तो कोई जवान साली सलहज नहीं बैठी है, जिसे जाकर दिखाऊँ।''

मेहता अफगान का वेषधारण कर आते हैं। वे मालती को उठा कर ले जाना चाहते हैं। उन्हें देख कर सब लोग आतंकित हो जाते हैं। किन्तु रायसाहब की आज्ञा पर होरी बन्दूक की भी परवाह न करके उनकी छाती पर चढ़ बैठता है और जोर से दाढ़ी पकड कर खींच देता है। दाढी उस के हाथ में आ जाती है।

दशहरे के अवसर पर रायसाहब की ड्योढ़ी पर धनुष-यज्ञ का प्रदर्शन होता है। होरी भी उस में भाग लेकर वह जनक का माली बनता है। जानकी गौरी पूजा के लिए जाते समय वह एक गुलदस्ता जानकी को भेंट करता है। धनुष - यज्ञ होरी के लिए केवल तमाशा नहीं, भगवान की भी लीला है।

9. **मृत्यु :-**

होरी की दशा दिन-ब-दिन बिगडने लगती है। जीवन के संघर्ष में वह सदा हारता ही रहा। किन्तु उसने कभी हिम्मत नहीं हारी। तीन साल की लगान बाकी रहती है। नोखेराम बेदखली का दावा कर देता है। राम सेवक, एक संपन्न किसान है। उसकी पहली औरत निस्सन्तान मरजाती है। वह होरी से दो-चार साल ही छोटा है। होरी की बेटी रूपा से वह विवाह करना चाहता था। राम सेवक से रुपये लेकर वह रूपा का विवाह करता है। किन्तु वह उसे अपराध मानता है और आत्म - ग्लानि से वह विक्षुब्ध - होता है।

होरी अपने दामाद के रुपये वापस करना चाहता है और वह एक गाय भी खरीदना चाहता है। इसके लिए वह दिन में कंकड खोदता है और रात में सुतली कातता है। एक दिन उसे लू लगती है तो वह बेहोश हो कर गिर पडता है। हीरा और सोभा उसे डोली में ले आते है। धनिया बडी सेवा करती है। पैसा हाथ में न होने के कारण वे डॉक्टर को बुला नहीं पाते। इतने में हीरा बताता है कि भाई की मृत्यु हुई है, गोदान करादो, और लोग भी वही बात उठाते हैं। धनिया बीस पैसे होरी के ठण्डे हाथ में रखकर दातादीन से कहती है। "महाराज, घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा । यही पैसे हैं, यही इनका गो-दान है।"

10. **उपसंहार :-**

होरी सच्चा भारतीय किसान है, भारतीय किसानों का प्रतिनिधि बन कर वह 'गोदान' उपन्यास में आता है। न्याया तथा धर्म का प्रतिनिधि, मर्यादावादी, धर्म - भीर, कर्मठ, व्यवहार कुशल, गो- हृदयी होरी को जीवन में क्या प्राप्त हुआ? क्या वह जीवन में हार गया? क्या वह दण्डित हुआ? इन सब का समाधान एक ही है - होरी भारतीय किसान का सजीव रूप है। जो प्रेमचन्द के हृदय से निकल पडा है। .

होरी उपन्यास के अन्य पात्रों के हृदय को जीत लेता है और पाठकों के हृदय पटल पर उसका मूर्तमान रूप अंकित हो बैठ जाता है। विद्रोही पुत्र गोबर रूपा के विवाह के समय पिता होरी की दशा देख कर, "दादा! अब तुम चिन्ता न करो, सारा भार मुझ पर छोड दो !" कहता

है तो, होरी के रोम - रोम से बेटे के लिए आशीर्वाद निकल आता है। उसकी मृत्यु के पूर्व उस से शत्रुता का व्यवहार करनेवाला भाई हीरा, होरी के चरणों में गिर कर पश्चात्ताप प्रकट करता है।

जीवन-भर आर्थिक संकट झेलते रहने पर भी होरी को आत्मिक शान्ति प्राप्त होती है। जो कुछ है उसी में वह सन्तुष्ट है। पारिवारिक जीवन का पूरा स्वाद उसे प्राप्त है। गाय को द्वार पर सदा रखने की इच्छा पूरी न होने पर भी उसका जीवन सच्चा है। आद्यन्त होरी का चरित्र स्वाभाविक, सजीव तथा करुणाप्रद है। वह भारत के दीन - हीन किसान का प्रतीक है। उसका सारा जीवन संघर्षमय होने पर भी वह शान्तियुक्त है। परिवार की मर्यादा की रक्षा के निमित्त वह अपने भाई हीरा को पुलिस से बचाने का प्रयत्न करता है।

संक्षेप में होरी सच्चा मानव है और उसका हृदय स्वच्छ है। उसका जीवन सरल तथा कलंक रहित है। जीवन- भर शोषण की चक्की में पिसते रह कर भी उसके हृदय में मानव मात्र के लिए सच्ची सहानुभूति है।

'होरी' पात्र की परिकल्पना करनेवाले उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द धन्य हैं। जब तक हिन्दी साहित्य रहेगा तब तक गोदान, होरी और प्रेमचन्द विश्वसाहित्य में अमर रहेंगे।

Lesson Writer

डॉ. शेख मौला अली

प्र. 3. 'गोदान' उपन्यास में 'धनिया' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

रूपरेखा :-

1. *प्रस्तावना*
2. *आदर्श गृहिणी*
3. *ग्रामीण सहज नारी*
4. *सत्यवादिता तथा धर्मबद्धता*
5. *पंचायत का धिक्कार*
6. *न्याय बद्धता तथा अटल आत्म विश्वास*
7. *चरमसीमा*
8. *उपसंहार*

1. **प्रस्तावना :-**

धनिया 'गोदान' उपन्यास की नायिका है और वह नायक होरी की पत्नी है। भारतीय किसान की पत्नी के रूप में, सम्मिलित परिवार की गृहिणी के रूप में, सच्ची माता और समझदार सास के रूप में, सरल हृदय के रूप में, निर्भीक तथा आत्मविश्वास पूर्ण नारी के रूप में प्रशंसा की मूर्ति धनिया 'गोदान' उपन्यास में प्रस्तुत होती है। ग्रामीण किसान जीवन की सारी घटनाएँ होरी और धनिया को आधार बनाकर चलती है। आर्थिक शोषण को झेलती हुई वह परिवार का पहिया बन कर चलती है।

2. **आदर्श गृहिणी :-**

धनिया विवाह होते ही सामूहिक परिवार का निर्वाह सिर पर लेती है। डोली से उतरते ही वह सारा काम अपने ऊपर ले लेती है। वह सदैव देवरानियों के सुख का ख्याल रखती है। वह घर की देखभाल करती है। लेना - देना, धरना-उठना, संभालना, झाड़ू- बुहार, रसोई, चौका-बरतन, लडकों की देखभाल आदि सब कुछ करती रहती है। वह देवरानियों के फटे - पुराने कपडे पहन कर दिन काटती है, खुद भूखी सोकर बहुओं के लिए जलपान तक का ख्याल रखती है। अपनी देह पर गहने के नाम कच्चा धागा भी न रहा, देवरानियों के दो-दो, चार-चार गहने बनवा दिये। इतना करने पर भी देवरानियाँ धनिया के मालिकपन पर जलती रहती हैं और वे उस से झगडती रहती हैं। देवर हीरा और सोभा अपनी पत्नियों के बस में आकर अपना -- अपना अलग घर बसा लेते हैं।

दरिद्रता के कारण धनिया जवानी में ही बूढ़ी हो जाती है। घर में इतनी दरिद्रत रहती है किधछत्तीसवें साल में ही धनिया के सारे बाल पक जाते हैं और चेहरे पर झुर्रियाँ पड जाती हैं। सारी देह ढ़ल जाती है। उसका सुन्दर गेहुआँ रंग साँवला हो जाता है। पति की दशा पर वह तरस खाती है। दवा-दारु न करने के कारण उस के तीन बेटे मरजाते हैं। बुढ़ापे की उसे बडी चिन्ता होती है।

पति की मर्यादावादिता पर, भाइयों के लिए चिन्ता पर और उसके सीधेपन पर धनिया खोज उठती है, व्यंग्य करती है, फटकारती है, लडती-झगडती है और ऐसे बुद्धू होरी से ब्याह होने पर अपने भाग्य को कोसती है। हीरा द्वारा गाय की मृत्यु होने पर वह होरी को गाली तक देती है और उस से पीटी भी जाती है। इतना होते हुए भी उसके हृदय में पति के प्रति प्रेम, अनुराग तथा ममता हैं। वह सदा पति की मंगल - कामना करती रहती है। भारतीय नारी होने के नाते उसकी सबसे बडी कामना रहती है कि उसका सुहाग सदा बना रहे।

धनिया पति होरी के साथ जीवन भर कन्धे से कन्धा लगा कर परिश्रम करती है। वह पति से पीटी जाने पर भी, उसके खान- पान का ध्यान रखती है। पति को लू लगने पर वह यंत्रवत दौड-दौड कर उसकी सेवा में संलग्न रहती है। वह पुत्र गोबर से बहुत प्यार करती है।

3. **ग्रामीण सहज नारी :-**

धनिया ग्रामीण सहज नारी है। कभी भोली दिखाई देती है और कभी व्यवहार कुशल। दूकान से समान लाने के लिए पैसे होते तो वह बेटी रूपा को भेजती है। कभी उधार लाना हो तो वह स्वयं जाती है। भोला को वह पहले भूसा देना नहीं चाहती है। भोला की प्रशंसा की बात होरी के मुँह सुनकर प्रसन्न हो भोला को भूसा देने के लिए तैयार होती है।

सम्मिलित परिवार के टूट कर अलग्योझा के पश्चात धानिया को देवरों और देवरानियों से चिढ़ होती है और वह उन से दूर रहती है। वह अपनी बेटियों को उनके घर जाने से मना करती है। उसे डर है कि वे उसके बच्चों को कुछ कर देंगे। होरी का भाइयों के प्रति स्नेह-भाव रखना वह नहीं चाहती। वह पति से कहती है, ''तुम्हें भाइयों का डर हो, तो जाकर उनके पैरों पर गिरो। मैं किसी से नहीं डरती। हमारी बढ़ती देख कर अगर किसी की छाती फटती है, तो फट जाय, मुझे परवाह नहीं है।''

देवर और देवरानियों के व्यवहार पर धनिया चिढ़ती है। हीरा के घर जाकर वह झगडती है। परस्पर गालियाँ होती है। हीरा गाली देकर भाभी को उसके घर से चली जाने के

लिए कहता है। जूता चलाने के लिए और झोंटा पकड कर उखाडने के लिए वह तैयार होता है। धनिया अभिमान प्रदर्शित करती हुई सिंहनी की भाँति झपट कर हीरा को जोर से धक्का देती है।

सत्यवादिता तथा धर्मबद्धता :-

धनिया सत्य पर डटी रहती है। सत्य कहने में वह कोई संकोच नहीं करती। लोक-लाज, कुल-मर्यादा आदि उसके सत्य-वचन पर ठहर न सकती। उसकी वाणी तेज, सत्य और निर्भीक है। हीरा उसको राच्छसिन कहता है वह क्रोध से भभकती है। वह कहती है, ''जबान सँभाल, नहीं जीभ खींच लूँगी। राच्छसि तेरी औरत होगी।'' पुत्र गोबर माँ की अवहेलना करता है'', ''पालने में तुम्हारा क्या लगा? जब तक बच्चा था, दूध पिला दिया। फिर लावारिस की तरह छोड दिया। जो सबने खाया, वही मैं ने खाया। मेरे लिए दूध नहीं आता था। मक्खन नहीं बंधा था।'' धनिया बेटे की बातों पर क्रोध नहीं करती। वह जानती है कि उसका बेटा इतना स्वार्थी नहीं है। बहू के कारण वह वैसा व्यवहार करने लगा है।

पति होरी का रायसाहब की खुशामदी करने के लिए जाना धनिया को अखरता है। वह पति से कहती है, ''हम ने जमींदार के खेत जोते हैं तो वह अपना लगान ही तो लेगा। उसकी खुशामद क्यों करें, उसके तलवे क्यों सहलायें।''

पुत्र गोबर झुनिया के साथ विवाह कर लेता है। नव वधू झुनिया घर में आती है तो धनिया उसे आश्रय देकर धीरज करती है। वह कहती, ''बेटी, तू चल कर घर में बैठ। मैं तेरे काका और भाइयों को देख लूँगी। जब तक हम जीते हैं, किसी बात की चिन्ता नहीं है। हमारे रहते कोई तुझे तिरछी आँखों देख भी न सकेगा।''

गर्भवती झुनिया को घर तक पहुँचा कर गोबर शहर चला जाता है। क्रोध के आवेश में धनिया बहू को कुलटा, कलंकिनी और चुडेल कहती है। परन्तु, जब होरी उसे घर के बाहर कर देने की बात कहता है तो धनिया के हृदय में नारी-सहज संवेदना जाग पडती है। होरी से वह कहती हैं, ''देखो, तुम्हें मेरी सौंह, उस पर हाथ न उठाना।''

दातादीन बदनामी, जगहँसाई, कुल- प्रतिष्ठा, बिरादरी के भोज-भात आदि की बातें उठाता है तो धनिया डट कर कहती है, '' हम को कुल-प्रतिष्ठा इतनी प्यारी नहीं है महाराज कि उसके पीछे एक जीव की हत्या कर डालते । ब्याहता न सही, पर उसकी बाँह तो पकडी है मेरे बेटे ने ही। किस मुँह से निकाल देती। वही काम बडे - बडे करते हैं, मुदा

उन से कोई नहीं बोलता, उन्हें कलंक ही नहीं लगता। वह काम छोटे आदमी करते हैं, तो उनकी मरजाद बिगड जाती है, नाक कट जाती है। बडे आदमियों को अपनी नाक दूसरों की जान से प्यारी होगी, हमें तो अपनी नाक इतना प्यारी नहीं।''

होरी भोला को गाय के रुपये दे नहीं सकता तो भोला शर्त लगाता है। ''या तो झुनिया को घर के बाहर कर दे या बैलों की जोडी दे दे।'' धनिया डट कर समाधान देती है, ''तो भहतो मेरी भी सुन लो। जो बात तुम चाहते हो वह न होगी, सौ जनम न होगी। झुनिया हमारी जान के साथ है। तुम बैल ही तो ले जाने को कहते हो, ले जाओ। अगर इस से तुम्हारी कटी हुई नाक जुडती हो तो जोड लो, पुरखों की आबरु बचती हो तो बचा लो।''

सिलिया प्रियतम मातादीन द्वारा तिरस्कृत होकर असहाय छोड दी जाती है और वह माँ - बाप द्वारा बेदरदी से पीटी जाती है। तब धनिया सिलिया को आश्रय देती है और धर्मबद्धता व्यक्त करती है, ''इसे मतई ने बेधरम किया, तब तो किसी को बुरा न लगा। अब जो मतई बेधरम हो गये तो, क्यों बुरा लगता है? क्या सिलिया का धरम, धरम ही नहीं? रखी तो चमारिन, उस पर नेकी - धर्मी बन ते हैं। बडा अच्छा किया हरखू चौधरी ने। ऐसे गुण्डों की यह सजा है। तू चल सिलिया मेरे घर। न जाने कैसे बेदरद माँ-बाप हैं कि बेचारी की सारी पीठ लहू- लुहान कर दी।''

5. पंचायत का धिक्कार :-

झुनिया को आश्रम देने के अपराध में बिरादरी होरी को जाति के बाहर कर देती है। तब पंचायत उसे डाँड लगाती है। डाँड भरने के लिए होरी सारा अनाज ढ़ोता है। धनिया इसका विरोध करती है, ''मेरे सामने बडे बुद्धिमान बनते हो, बाहर तुम्हारा मुँह क्यों बन्द हो जाता है? .... मैं पूछती हूँ तुम्हारे मुँह में जीभ न थी कि इन पंचों से पूछते कि तुम कहाँ के बडे- बडे आदमी हो, जो दूसरों पर डाँड लगाते फिरते हो। तुम्हारा तो मुँह देखना भी पाप है।''

धनिया का विचार है कि कोई अपराध ही नहीं किया गया तो पंचों की बात की परवाह क्यों करें? होरी से वह कहती है, ''कौन - सा पाप किया है, जिसके लिए बिरादरी से डरें! किसी की चोरी की है किसी का मात काटा है। मेहरिया रखलेना पाप नहीं है। हाँ! रख कर छोड देना पाप है।''

धनिया पंचों को भी फटकारते हुए कहती है, ''यह पंच नहीं, राक्षस हैं, डाँड तो बहाना है। समझाती जाती हूँ पर तुम्हारी आँखें नहीं खुलती! तुम इन पिशाचों से दया की आशा करते हो। सोचते हो दस - पाँच मन निकाल कर दे देंगे। मुँह धो रखो।''

न्याय बद्धता तथा अटल आत्म विश्वास :-

धनिया न्यायाबद्ध, असीम साहसी और अटल आत्म-विश्वास पूर्ण नारी है। हीरा विष देकर गाय को मार डालता है। धनिया हीरा के विरुद्ध थाने में सूचना देना चाहती है। होरी कुल-मर्यादा के नाम पर हीरा की रक्षा करना चाहता है। वह रुपये उधार लेकर दारोगा जी को देना चाहती है। तब धनिया पति पर नागिन की तरह फुफकार कर बोलती है- ''घर की रानी रात - दिन में और दाने - दाने को तरसें, ऊँजुली भर रुपये लेकर चला है इज्जत बचाने। ऐसी बडी है तेरी इज्जत जिसके घर में चूहे लोटें वह भी इज्जतवाला है। दारोगा तलासी ही तो लेगा। लेले जहाँ चाहे तलासी। एक तो सौ रुपये की गाय गई, उस पर पलेथन। वाह री तेरी इज्जत।''

धनिया पंचों को भी फटकर कर कहती है, ''ये हत्यारे गाँव के मुखिया हैं, गरीबों का खून चूसने वाले। सूद - ब्याज, डेढ़ी - सवाई, नजर-नजराना, घूस- घास जैसे भी हों गरीबों को लूटो। उस पर सुराज चाहिए। जेहल जाने से सुराज न मिलेगा। सुराज मिलगा धरम से, न्याय से।''

धनिया के इस प्रकार की तेज आलोचना करने दारोगा उसे 'दिलेर' कहता है और पंच 'कर्कश' कहते है। आसपास के गाँवों में धनिया 'भवानी का प्रतिरूप' मानी जाती है और गाँव में उसका उमदर बढ़ता है।

दातादीन धनिया को जल्दी काम करने के लिए डाँट बताता है। तुरन्त धनिया जवाब देती हैं। ''तुम्हार द्वार पर भीख माँगने नहीं जाती।'' साथ ही दातादीन तीखे स्वर में कहता है, ''अगर यही हाल है तो भीख भी माँगेगी।'' धनिया भभक कर कहती है, ''भीख माँगो तुम ! हम तो मजदूर ठहरे, जहाँ काम करेंगे वहीं चार पैसे पायेंगे।''

यहाँ धनिया का आत्म विश्वास तथा आत्म - गौरव प्रकट होते हैं।

चरमसीमा :-

गाँव में बुआई शुरू होती है, किन्तु होरी के खेतों में बोआई नहीं होती है। धनिया, रूपा, सोना सभी दूसरें की बोआई में लगी रहती है, मजदूरी मिलना भी कठिन हो जाता है। होरी के घर

में फार्क होने लगते हैं। इस प्रकार घर दरिद्रता में होरी – धनिया का परिवार चलता रहता है।

कालगति रोके, न सकती है।

कंकड खोदते हुए होरी को लू लग जाती है। उसके हाथ-- पैर ठण्डे होने लगते हैं। धनिया यंत्रवत दोड-- दौड कर पति को बचाने के लिए सारे प्रयत्न करती है। किसी डाक्टर को बुलाने के लिए उसके पास पैसे नहीं रहते हैं। होरी के प्राण – पखेरु देह को त्याग कर आकाश गमन करते हैं।

कई आवाजें आती हैं – ''गोदान करादो, अब यही समय है।'' धनिया सुतली बेचती है तो, उसके बीस पैसे मिलते हैं। बीस पैसे पति होरी के ठण्डे हाथ में रख कर सामने खडे दातादीन से धनिया कहती है, ''महाराज, घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा। यही पैसे हैं, यही इनका गो -दान है।'' यह कह कर धनिया पछाड खा कर गिर पडती है।

8. **उपसंहार :-**

धनिया 'गोदान' उपन्यास की नायिका है, नायक होरी से भी बढ़कर कभी - कभी उसका चरित्र उभरता है। वह एक ग्रामीण गरीब किसान की पत्नी है। जीवन में किसी भी दिन सिर का तेल, शरीर भर नया कपडा और पेट भर खाना वह नहीं जानती। घोर दरिद्रता में सारा जीवन बीतता है। कभी -- कभी मजदूरी भी नहीं मिलती। भारतीय किसान प्रतिनिधि होरी की वह सहभागिनी और पति – परायण पत्नी है। सन्तान पर प्रेमानुराग की वर्षा करनेवाली माँ, निस्सहायों की सहायिका, स्वाभिमानिनी तथा कर्मण भारतीय ग्रामीण आदर्श गृहणी के रूप में धनिया गोदान उपन्यास में प्रस्तुत होती है।

कुचाल पंच का धिक्कार, कृतघ्नता की प्रतिक्रिया, न्याय तथा धर्म की रक्षा, पति के गौरव की रक्षा आदि के समय धनिया कटुता का व्यवहार करती है और निर्भीकता से संघर्ष कर 'सिंहिनी' या 'भवानी' बनती है। कटु संघर्षों के भीषण लपटों में पति को शीतल तथा अनुरागपूर्ण छाया प्रदान करनेवाली सहृदय – सहज भारतीय नारी है 'धनिया'।

Lesson Writer

डॉ. शेख मौला अली

प्र. 4. गोदान उपन्यास में गोबर का चरित्र चित्रण कीजिए।

रूपरेखा :-

1. *प्रस्तावना*
2. *जमीन्दारों के प्रति असंतुष्ट*
3. *होरी की सज्जनता का दुष्परिणाम*
4. *भाग्यवाद पर अविश्वास*
5. *झुनिया के साथ न्याय*
6. *लखनऊ में मजदूरी*
7. *व्यवहार कुशल*
8. *प्रगतिशील विचारधारा:*
9. *उतार - चढ़ाव*
10. *उपसंहार*

1. **प्रस्तावना :-**

गोबर होरी का पुत्र है। वह साँवला, लम्बा और इकहरा युवक है। किसान के घर में जन्म लेकर भी वह कभी संतुष्ट नहीं रहता । खेत में वह ऊख गोडता है। परन्तु उसे उस काम में रुचि न मालूम होती। प्रसन्नता की जगह मुख पर असंतोष और विद्रोह दिखाई देते हैं। वह नई पीढ़ी के असंतोष का प्रतीक है। वह जमीन्दारों और महाजनों के चंगुल से गाँव को छुडाने की बात सोचता है। उसका यह असंतोष और आन्तरिक विद्रोह उसे गाँव से नगर की ओर खींच ले जाता है।

2. **जमीन्दारों के प्रति असंतुष्ट :-**

गोबर के मन में जमीन्दारों के प्रति असंतोष है। रायसाहब की खुशामदी करने के लिए पित होरी का जाना उसे अच्छा नहीं लगता। होरी से वह पूछता है, ''यह तुम रोज-रोज मालिकों की खुशामदी करने क्यों जाते हो? बाकी न चुकाने पर ज्यादा आकर गालियाँ सुनाता है, बेगार देनी ही पडती है। नजर - नजराना सब तो हम से भराया जाता है। फिर किसी की क्यों सलामी करो।''

होरी समझाता है कि राय साहब हम से भी ज्यादा दुखी है। तब गोबर पिता से पूछता है,''तो फिर अपना इलाका हमें क्यों नहीं दे देते! हम अपने खेत, बैल, हल,कुदाल सब उन्हें देने को तैयार है। करेंगे बदला? यह सब धूर्तता है, निरीमोटमरदी। जिसे दु:ख होता है, वह दरजनों मोटरें नहीं रखता, महलों में नहीं रहता, हलवा-पूरी नहीं खाता और न नाच - रंग में लिप्त रहता है।''

गोबर के अनुसार जमीन्दार और किसान में आकाश और पाताल का अन्तर है। होरी से वह कहता है, ''हम लोग दाने-दाने को मुहताज हैं, देह पर साबित कपडे नहीं होता हैं, चोटी पर पसीना एडी तक आता है, तब भी गुजार नहीं। उन्हें क्या, मजे से गद्दे मसनद लगाए बैठे हैं, सैकडों नौकर - चाकर हैं, हजारों आदमियों पर हुकूमत है। रुपये न जमा होते हों, पर सुख तो सभी तरह का भोगते हैं।'' वह यह देख कर अप्रसन्न होता है। कि गाँवों के साहूकार, कारिंदा, जमींदार एवं ब्राह्मण किसानों के खून - पसीने की कमई पर गुलछर्रे उडा रहे हैं और देश के लोगों को अन्न देनेवाला किसान भर-पेट भोजन नहीं कर पर रहा है।

गोबर का विश्वास है कि बलवान का ही राज्य होता है। वह कहता है, ''यहाँ जिसके हाथ में लाठी है, वह गरीबों को कुचल कर बडा आदमी बन जाता है,'' गोबर का विचार है कि पाप का धन पचने के लिए भजन करते हैं, ''यह पाप का धन पचे कैसे? इसलिए दान - धर्म करना पडता है। भगवान का भजन भी इसीलिए होता है।''

3. **होरी की सज्जनता का दुष्परिणाम :-**

गोबर अपने परिवार की दुर्गति का कारण होरी की सज्जनता मानता है। होरी गोबर को बताता है कि वह भूस भोला के घर पहुँचाये। तब वह सीधी बताता है, ''तुम्हारा यह धर्मात्मापन तो तुम्हारी दुर्गति कर रहा है।'' माँ धनिया भी भूसा लेजाने के लिए कहती है तो वह कहता है, ''यह तो अच्छी दिल्लगी है कि अपना माल भी दो और उसे घर तक पहुँचा भी दो।''

4. **भाग्यवाद पर अविश्वास :-**

गोबर भाग्यवाद पर कोई विश्वास नहीं रखता इसी कारण वह पिता के भाग्यवादी सिद्धान्त का विरोध करता है। उसकी दृष्टि में भाग्यवाद केवल लों [illegible] मानसिक तृप्ति है। वह अपना भाग्य स्वयं बनाना चाहता है। वह अपनी शक्ति और साहस से कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करना चाहता है।

पूजा और भजन को भी गोबर नहीं मानता। वह यह सब ढकोसला मानता है। उसके अनुसार जमीन्दार और पूँजीपति धर्म और पूजा - भजन सब को ढकोसला बनाते हैं।

5. **झुनिया के साथ न्याय :-**

झुनिया भोला की बेटी है। उसका पति मुंबई में दूध की दूकान करता था। वहाँ हिन्दू - मुसलमानों के दंगे में किसी ने उसके पेट में छुरा मारा तो उसका घर चौपट हो जाता है। भोला उसे घर ले आता है।

गोबर भूसे का खाँचा पहुँचाने के लिए भोला के घर जाता है तो वहाँ वह झुनिया को देखता है। गोबर गाय लेकर लौटने लगता है तो झुनिया बहुत दूर तक उसे पहुँचाने जाती है। दोनों में प्रेम की चर्चा होती है और दोनों जीवन भर साथ रहने का संकल्प कर लेते हैं। उस प्रेम में बडी निश्चलता एवं स्वाभाविकता है। झुनिया कहती हैं, ''मेरा होकर रहना पडेगा।'' गोबर के मन में एक विचित्र अनुभूति और आनन्द भर आते हैं।

गोबार के मन में अन्तर्द्वन्द्व चलता है। वह सोचता है, झुनिया को रखले, तो घर में रखेली को कैसे रखेगा? बिरादरी का झंझट तो है ही। सारे गाँव में हलचल मच जायेगा। माँ तो झुनिया को घर में आने ही नहीं देगी। अगर लोग उसे अलग कर देंगे तो वह अलग ही रहेगा। इस प्रकार सोच कर वह झुनिया का हाथ पकडता हैं तो वह चेतावनी देती है, ''आज तुमने मेरा हाथ पकडा है, याद रखना।'' गोबर अपना निश्चय प्रकट करता है, ''खूब याद रखूँगा झुनिया, मरते दम तक निबाहूँगा।''

झुनिया का पाँच महीने का पेट हो जाता है। गोबर एक रात के समय झुनिया को लेकर अपने घर के लिए निकलता है। चाहे गाँव भर कुहराम मच जाये और चाहे माँ जहर भी खाये वह झुनिया का हाथ नहीं छोडेगा। माँ तो क्रोध में दो-चार गालियाँ देगी ही। लेकिन झुनिया के पाँव पकडकर रोने पर वह दया करेगी ।

गोबर झुनिया को अपने घर लेजाता है। पहले होरी और धनिया झुनिया को घर के अन्दर आने नहीं देते। तत्पश्चात उस की दशा देख कर अन्दर आने देते हैं।

6. **लखनऊ में मजदूरी :-**

गोबर अब निश्चिन्त होकर धन कमाने की धुन में लखनऊ जाता है। वहाँ वह मजदूरी करता हैं, खोमचा लगाता है और बचे हुए पैसे ब्याज पर उधार देता है। फिर पैसे के लोभ में

वह स्वार्थी बन जाता है। लखनऊ जाते समय मार्ग में कोदई के यहाँ वह आतिथ्य पाता है। उसके व्यवाहर से कोई और उसकी माँ मुग्ध होते हैं।

7. व्यवहार कुशल :-

झुनिया को लेजाने के कारण भोला गोबर से नाराज होता है। शहर से लौटने के पश्चात गोबर भोला के पास जा कर प्रार्थना करता है, ''काका मुझ से जो कुछ भूल हुई, क्षमा करो।'' गोबर के व्यवाहार पर संतुष्ट हो भोला होरी के बैलों की जोडी को वापस करता है।

गोबर नोखेराम की चौपाल में जाकर सही रसीद देने को कहता है। वह दोनों चाचाओं के घर जाकर राम-राम कर आता है। गाँव के मित्र भी उसका अच्छा आदर करते हैं। युवक तो उसे अपना हीरो बना लेते हैं। झिंगुरीसिंह के अभिमान का वह हटकर समाधान देता है। दातादीन गोबर से मातादीन को लखनऊ में कहीं नौकरी में लगादेने की बात कहता है तो गोबर इसे सहसा जवाब देता है, ''तुम्हारे घर में किस बात की कमी है महाराज, जिस जजमान के द्वारा पर जाकर खडे हो जाओ। कुछ मार ही लाओगे। जनम में लो; मरने में लो; सरदी में लो; गर्मी में लो; खेती करते हो; लेन-देन करते हो; दलाली करते हो; किसी से कुछ भूल-चूक हो जाय, तो डाँड लगा कर उसका घर लूट लेते हो। इतनी कमाई से पेट नहीं भरता? क्या करोगे बहुत-सा धन बटोर कर साथ ले जाने की कोई जुगुत निकाल ली है?'' गोबर हेकडी उसके युवक उसके युवक मित्रों को रोब में डाल देती है।

• गोबर मित्रों का प्रोत्साहन पाकर होली के अवसर पर स्वंग निकाल कर पंचों की भद्द उडानों का कार्यक्रम बनाता है। भंग, रंग नकल करने के सामान आदि का प्रबन्ध किया जाता है। गाँव में इतनी चर्चा फैल जाती है कि साँज से ही तमाशा देखनेवाले जमा हो जाते हैं। आसपास के गाँवों से दर्शकों की टोलियाँ आने लगती हैं। झिंगुली सिंह, नोखेराम, दातादीन आदि की बारी - बारी से खबर ली जाती है। इस से पंच लोग तमाशा बन जाते हैं और इस कारण वे होरी से और गोबर से बदला लेना चाहते हैं।

8. प्रगतिशील विचारधाराः :-

गोबर सदा पूजा एवं भजन आदि परंपरागत विचारों का खण्डन करता है। वह दातादीन की चाकिरी से ऊबकर कहता है ''तुम्हारी चाकिरी से मैं कब इनकार करता हूँ महाराज? लेकिन हमारी ऊख भी तो बोने की पडी है।'' वह पिता को डाँट कर कहता हैं, ''कैसी चाकरी और किसकी चाकरी? यहाँ तो कोई किसी का चाकर नहीं । सभी बराबर हैं।''

महाजनों की निन्दा करते हुए गोबर कहता है। ''अच्छी दिल्लगी है। किसी को सौ रुपये उधार दे दिए और उस से सूद में जिन्दगी भर काम लेते हैं। मूल ज्यों का त्यों। यह महाजनी नहीं है खून चूसना है।''

गोबर की बातों में निर्भीकता और साहस हैं। पंचों के कार्यकलापों का वह डटकर निंदा करता है। उसकी वाणी में सत्य का बल है।

लखनऊ जाने के बाद गोबर का लोक- ज्ञान बढ़ता है। कानूनी बातों की जानकारी भी वह प्राप्त करता है! होरी के लगान चुकाने पर भी कारिन्दा नोखेराम और दो वर्ष का लगान चुकाने को कहता है। तब गोबर पिता से रसीद जरूर लेने के लिए कहता है। वह बताता है, ''यों रसीद नहीं देते, तो डाक से रुपया भेजो।'' वह और कहता है, ''मैं उनके हाथ में गंगाजली रखकर कसम खिलाऊँ। मैं इस के पीछे जान लडा दूँगा। मैं किसीका एक पैसा दबाना नहीं चाहता, न अपना एक खोना चाहता हूँ।''

9. उतार - चढ़ाव :-

झुनिया के साथ गोबर शहर लौटता है। वहाँ वह खोंचा लेकर बैठता है। किंन्तु ग्राहक दूसरे खोंचेवाले से माल खरीदने लगते हैं। वह पडोस के मजदूर और इक्केवानों से ताश और जुआ खेलने लगता है। वह पत्नी झुनिया के साथ हास - विलास में समय बिताना चाहता हैं। लेकिन झुनिया ऐसा व्यवहार पसन्द नहीं करती। फिर वह शक्कर के मिल में नौकरी कर लेता है।

बजट में शक्कर पर ड्यूटी लगायी जाती है। फलत: मिल के मालिक मजदूरी घटाते हैं। मजदूल हडताल करते हैं। तो गोबर सब से आगे रहता है। मिल के मालिक नये मजदूरों को भर्ती करते हैं। नये मजदूर और पुराने मजदूरों के बीच फौजदारी हुई तो गोबर पूर्णतया घायल होता है। अस्पताल भर्ती होकर स्वस्थ होने के बाद वह मालती के यहाँ माली का काम करने लगता है।

10. उपसंहार :-

हडताल के घर्षण में गोबर आहत होता है तो झुनिया उसकी सेवा करती है। घास बेच कर वह घर का निर्वाह करती है। स्वस्थ होने पर गोबर में परिवर्तन होता है। वह मृदु तथा नम्र स्वभाव का होता है।

रूपा के विवाह के समय गोबर गाँव लौटता है। पिता की दशा पर वह पसीज उठता है। होरी से वह कहता है। ''दादा, अब तुम चिन्ता न करो। सारा भार मुझ पर छोड दो।'' पुत्र के अनुरागपूर्ण वचनों पर होरी रोम - रोम से आर्शीर्वाद देता है।

गोबर विद्रोह युवक के प्रतिनिधि के रूप में उपन्यास के आरम्भ में दिखाई देता है। पूँजीवादी शोषक व्यवस्था के विरुद्ध वह आक्रोश प्रकट करता है। धन के लालच में लखनऊ शहर जाकर वहाँ के कलुषित वातावरण का शिकार बन जाता है। फिर सज्जनों के सांगत्य में आकर सुधर जाता है।

गोबर का चरित्र उपन्यास के साथ विकसित होता जाता है। वर्तमान पूँजीवादी शोषक समाज-व्यवस्था के लिए वह सदा आक्रोश करता रहता हैं।

गोबर नयी पीढ़ी के युवकों का प्रतीक है।

Lesson Writer

डॉ. शेख्र मौला अली

प्र. 5. गोदान उपन्यास के डॉ. मेहता का चरित्र चित्रण कीजिए।

रूपरेखा :-

1. *प्रस्तावना*
2. *स्पष्टवादिता*
3. *परिश्रमी तथा सहृदयी*
4. *आदर्श*
5. *असफल प्रेम*
6. *उपसंहार*

1. प्रस्तावना :-

डॉ. मेहता 'गोदान' उपन्यास का एक विलक्षण पात्र है। वे यूनिवर्शिटी में दर्शन-शास्त्र के अध्यापक है। वे अचकन और पाजामा पहनते हैं। वे राय साहब के सहपाठी हैं। स्पष्टवादी, लेखक, परिश्रमी, सहृदयी, संवेदनशील, व्यवहार कुशल और संवेदनशील सज्जन हैं।

मेहता अविवाहित हैं। पुरुषों की मंडली में वे खूब चमकते हैं। नवयुग की रमणियों से वे पनाह माँगते हैं। उन्होंने एक पुस्तक भी लिखी थी। वे बुद्धि जीवी हैं।

2. स्पष्टवादिता :-

डॉ. मेहता बडे स्पष्टवादी हैं। सच्चीबात कहने में वे कोई संकोच नहीं करते। दूसरों को प्रसन्न करने के लिए वे कोई खुशामदी नहीं करते। छोटे - बडे का अन्तर वे व्यवहार से देखते हैं, न कि धन से, मालती किसी काली-कलूटी औरत पर ईर्ष्या प्रकट करती है तो मेहता उसे समझाते हुए कहते हैं, ''कुछ बातें तो उस में ऐसी हैं कि अगर तुम में होती, तो तुम सचमुच देवी हो जाती। रायसाहब अपने लडके के विवाह के विषय में डॉ. मेहता सारी जिम्मेदार छोड देने को कहते हैं। डॉ. मेहता के वचन और कर्म एक रूप में होते हैं। रायसाहब से वे कहते हैं,'' अगर मांस खाना अच्छा समझते हो, तो खुल कर खाओ। बुरा समझते हो, तो मत खाओ। छिपकर खाना कायरता है। वे ऐसे लोगों से नफरत करते हैं जो कम्यूनिष्टों की भाँति बातें करते, बल्कि रईसों की तरह विलासमय जीवन बिताते। धन के सम्बन्ध में उनकी धारणा है, ''धन कोई फूलने-फलनेवाली चीज नहीं, केवल साधन है।''

उनकी दृष्टि में समाता अप्राकृतिक है। संसार में छोटे - बडे रहेंगे ही। इसे मिटाने की चेष्टा करना मानव - जाति के सर्वनाश का कारण होगा।

3. **परिश्रमी तथा सहृदयी :-**

डॉ. मेहता बडे परिश्रमी हैं। आधी रात को वे सोते हैं और घडी रात रहे उठ जाते हैं। हर काम के लिए समय निकाल लेते हैं। हॉकी खेलना हो या यूनिवर्शिटी डिबेट, ग्राम्य संगठन हो या किसी शादी का नैवेद्य - सभी कर्मों के लिए वे समय और लगन के साथ काम करते हैं। कभी कबड्डी खेलने जाते हैं। कभी मजदूर आंदोलन में भाग लेते हैं और कभी भाषण देने लगते हैं। शिकार खेलने में उनको बेहद शौक है।

डॉ. मेहता के अनुसार जहाँ जीवन है, क्रीडा है, चहक है, प्रेम है, वहाँ ईश्वर है और जीवन सुखी बनाना ही उपासना है और मोक्ष है।

मेहता भावुक, संवेदनशील और सहृदयी है। वे कभी मजदूरों के साथ कबड्डी खेलते हैं; कभी काली - कलूटी जंगली औरत का आतिथ्य स्वीकार कर उसके घडे भर लाते हैं। कभी वे किसानों की झोंपडियों में रात बिताते हैं। शक्कर मिल की हडताल में वे मजदूरों का समर्थन करते हैं। वे गोविन्दी देवी के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हैं। उसकी कष्ट-गाथा सुनकर वे कहते हैं, ''मुझे न मालूम था आप इतनी दुखी हैं।'' वे अपने को गोविन्दी देवी का सेवक मानते हुए भावुकता के साथ कहते हैं, ''आप मुझे लज्जित कर रही हैं देवीजी ! मैं कह चुका आप का सेवक हूँ। आप के हित में मेरे प्राण भी निकल जायें. तो मैं अपना सौभाग्य मानूँगा।''

4. आदर्श :-

डॉ. मेहता जीवन को आनन्दमय क्रीडा, स्वच्छ और सरल मानते हैं जहाँ ईर्ष्या और जलन के लिए कोई स्थान नहीं। वे भूत की चिन्ता नहीं करते और भविष्य की परवाह नहीं करते। उनके लिए वर्तमान ही सबकुछ है। वे कहते हैं। ''भविष्य की चिन्ता हमें कायर बना देती है और भूत का भार हमारी कमर तोड देता है।''

मेहता आत्मवाद और अनात्मवाद का विचार कर प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों की बीच सेवा - मार्ग चुन लेते हैं। वे मालती के साथ गाँव में जाते हैं। मालती स्त्रियों को चिकित्सा सम्बन्धी सलाहें देती है और मेहता ग्रामीणों की कुश्ती का मनोरंजन लेते हैं। व्यायामशाला के

लिए चन्दा वसूल करने में वे मालती की मदद करते हैं। हजार रुपये से अधिक महीने में कमा लेने पर भी वे पैसा बचा न पाते। किताबें खरीदने में, चन्दों में, गरीब छात्रों की परवरिश में और अपने बाग की सजावट में पूरा पैसा खर्च हो जाता है। अत्यधिक संकोची होने के कारण वे किसी से हिसाब नहीं माँगते हैं। फलतः उनकी आर्थिक स्थिति बिगड जाती है। मकान का किराया भी महीनों बाकी पडा रहता है। ठीक से कपडे तक न सिलवा पाते हैं। उनकी परिस्थिति देख कर मालती उन्हें अपने बंगले में आश्रय देती है।

5. असफल प्रेम :-

डॉ. मेहता अविवाहित रहते हैं। उनके स्वस्थ और सुगठित शरीर, उनकी वाक्पटुता, उनका सहज संकोच, अभिनय कुशलता, विनोद वृत्ति आदि गुणों को देखकर मालती उनकी ओर आकर्षित होते हैं। शिकार के अवसर पर मालती मेहता के निकट आती है। किन्तु मेहता काली - कलूटी जंगली औरत की प्रशंसा करते हैं।

कबड्डी के अवसर पर मालती मेहता की विजय के लिए उद्विग्नता प्रकट करती है। मिर्जा खुर्शेद अनुमान लगाते हैं कि उन दोनों का विवाह पक्का हो गया है। लेकिन मेहता कहते हैं, ''ऐसी स्त्रियों से में केवल मनोरंजन कर सकता हूँ, ब्याह नहीं। ब्याह तो आत्मसमर्पण है।'' मालती की सेवा और त्याग से मेहता मुग्ध होते हैं। मालती के प्रति उनके मन में प्रेम उत्पन्न होता है। एक दिन वे होरी के गाँव जाते हैं। संध्या समय दोनों नदी की ओर जाते हैं। मेहता झूकी टहनियों की नाव बनाते हैं। खुली चाँदनी में दोनों उस पर बैठ कर नदी में आगे बढ़ते हैं। मेहता प्रेम के सम्बन्ध में कहते हैं, ''प्रेम सीधी- सादी गऊ नहीं, खूँकार शेर है, जो अपने शिकार पर किसी की आँख भी नहीं पडने देगा।'' मालती को इस से धक्का लगता है। वह अन्य मनस्क हो जाती है।

गोबर के लडके मंगल को चेचक होती है तो मालती उसकी मातृवत् सेवा करती है। मेहता मालती के इस रूप पर मुग्ध होते हैं। मालती को पाने के लिए वे व्यग्र हो जाते हैं। मालती उन्हें चाहते हुए भी प्रेम को एक ऊँचे धरातल पर रखना चाहती है। वह कहती है कि मोह के बन्धन में पडने से मानवता का क्षेत्र सिकुड जायेगा। मित्र बन कर रहना स्त्री-पुरुष बनकर रहने से कहीं सुखकर है। मालती के ऊँचे आदर्शों के कारण उसके चरणों में गिरते हैं और कहते हैं - ''तुम्हारा आदर्श स्वीकार है मालती।'' दोनों एकात्म होकर प्रगाढ़ आलिंगन में बंध जाते हैं। दोनों की आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगती है।

मेहता अन्धी नकल को मानसिक दुर्बलता का लक्षण मानते हैं। वे पश्चिम सभ्यता की अच्छी चीजों को लेने के लिए कहते हैं। पश्चिम की स्त्रियों की आलोचना करते हुए वे कहते हैं, ''पश्चिम की स्त्री आज गृहस्वामिनी रहना नहीं चाहती। भोग की विदग्ध लालसा ने उसे उच्छृंखल बना दिया है। वह अपनी लज्जा और गरिमा को जो उसकी सब से बडी विभूति थी, चंचलता और आमोद - प्रमोद पर होम कर रही है।'' प्रेम के बारे में उनका कथन है, ''प्रेम जब आत्मसमर्पण का रूप लेता है, तभी ब्याह है।'' फिर वे कहते हैं, ''मुक्त - भोग आत्मा के विकास में बाधक नहीं होता, विवाह तो आत्मा को और जीवन को पिंजरे में बन्द कर देता है। विवाह को मैं सामाजिक समझौता मानता हूँ और उसे तोडने का अधिकार न पुरुष को है, न स्त्री को।''

6. उपसंहार :-

संक्षेप में मेहता प्रेमचन्द के सिद्धान्तों, आदर्शों और विचारों का मूर्तमान रूप हैं। प्रारम्भिक उपन्यासों में प्रेमचन्द अधिक आदर्शवादी रहे हैं। 'गोदान' तक आते-आते वे अधिक यथार्थवादी बन जाते हैं। डॉ. मेहता आरम्भ में प्रेम सम्बन्धी अत्यन्त आदर्शवादी विचार प्रकट करते हैं। आगे चल कर प्रेम की तुलना वे हिंसक शेर से करते हैं। प्रेमचन्द ने मेहता के चरित्र के द्वारा एक ऐसे व्यक्तित्व के जीवन को हमारे सामने प्रस्तुत किया है - जिसके ऊँचे - ऊँचे आदर्श होते हैं, किन्तु उसका व्यावहारिक ज्ञान शून्य होता है।

Lesson Writer

डॉ. शेख मौला अली

प्र. 6. रायसाहब का चरित्र-चित्रण कीजिए।

रूपरेखा :-

1. *प्रस्तावना*
2. *लाचारी*
3. *बन्धुजनों की प्रवृत्ति की निन्दा*
4. *रंगे सियार का स्वभाव*
5. *व्यवहार कुशलता*
6. *उपसंहार*

1. प्रस्तावना :-

रायसाहब अमरपाल सिंह जमीन्दार हैं। सेमरी गाँव उनका वासस्थान हैं। गाँव में रहते हुए भी वे शहरी जीवन बिताते हैं। उनका रहन - सहंन, आमोद-प्रमोद आदि सब शहरी विधान में रहते हैं। साधारणतया जमीन्दार शोषण के प्रतीक मानेजाते हैं। लेकिन रायसाहब के चरित्र को प्रेमचन्द ने इतनी सावधानी एवं कुशलता से चित्रण किया है कि वे हमारी घृणा के पात्र नहीं बनते। पाठक उनकी मजबूरियों के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हैं।

रायसाहब में कुछ व्यक्तिगत विशेषताएँ है। वे सामाजिक प्रथाओं में भाग लेते हैं। साहित्य और संगीत के वे प्रेमी हैं। वे सफल वक्ता हैं। अपमान और आधात को धैर्य और उदारता से वे सहन करते हैं। नाटक के वे शौकीन हैं। वे एक सफल नाटककार हैं। धनुष - यज्ञ के अवसर पर प्रदर्शन के लिए वे एक नाटक की रचना भी करते हैं। वे अचूक (Sneersful) निशाने बाज हैं। पत्नी के स्वर्गवास हुए दस वर्ष हो चुकन पर भी उन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया। घण्टों वे भजन में बिताते हैं। प्रतिवर्ष दशहरे के समय वे धनुष - यज्ञ का आयोजन करते हैं। उस समय वे हजारों रुपये खर्च करते हैं।

2. लाचारी :-

रायसाहब जमीन्दारी के शोषण - विधान से लाचार हो जाते हैं। वे उस वातावरण में पले जाते हैं जहाँ राजा ईश्वर माना जाता है और जमीन्दार उसका मन्त्री है। लेकिन वे जमीन्दारों की प्रतिष्ठा (बडप्पन) पर असंतुष्ट होकर वे होरी से कहते हैं - ''बडे आदिमयों की ईर्ष्या और वैर केवल आनन्द के लिए हैं। .... बडे आदिमयों के रोग भी बडे होते हैं .... मामूली ज्वर

भी आ जाए, तो हमें सरझाम की दवा दी जाती है; मामूली फुन्सी भी निकल आए तो वह जहरबाद बन जाती है। वैद्य और डॉक्टर तक ताक में रहते हैं कि कब सिर में दर्द हो और कब उस के घर में सोने की वर्षा हो। और ये रुपये तुम से और तुम्हारे भाइयों से वसूल किये जाते हैं, भाले (Spear) की नोक पर। मुझे तो यही आश्चर्य होता हैं कि क्यों तुम्हारी आहों का दावानल हमें भस्म नहीं कर डालता।.... जो भोग - विलास के नशे में अपने को बिलकुल भूल गया हो, जो हक्काम के तलवे चाहता हो और अपने अधीनों का खून चूसता हो, उसे मैं सुखी नहीं कहता ।....... केवल अफसरों के सामने दुम हिला-हिला कर किसी तरह उनके कृपा-पात्र बने रहना और उनकी सहायता से अपनी प्रज्ञा पर आतंक्र जमाना ही हमारा उद्यम है।.... लक्षण कह रहे हैं कि बहुत जल्द हमारे वर्ग की हस्ती मिट जानेवाली है।''

रायसाहब किसानों का शोषण करना नहीं चाहते। उनका कथन है, ''मुझे किसानों के साथ ही जलना और मरना है। मुझ से बढ़ कर दूसरा कोई उनका हितैषी नहीं हो सकता। लेकिन, मेरी गुजर कैसी हो? अफसरों को दावत कहाँ से दूँ? सरकारी चन्दे कहाँ से हूँ? खानदान के सैकडों लोगों की जरूरतें कहाँ से पूरी? मेरी घर का खर्च क्या है, यह शायद आप जानते हैं, तो क्या मेरे घर में रुपये फैलते हैं? .... यह लाखों रुपये साल का खर्च कहाँ से आए?''

3. **बन्धुजनों की प्रवृत्ति की निन्दाः :-**

रायसाहब अपने मित्रों और रिश्तेदारों की प्रवृत्ति की निन्दा करते हैं। फुफेरे, चचेरे, ममेरे, मौसेरे भाई रियासत की बदौलत मौज उडाते रहते हैं, कविा करते रहते हैं, जुए खेलते रहते हैं, शराब पीते रहते हैं और ऐयाशी करते रहते है और फिर रायसाहब से जलते रहते हैं। वे सब रायसाहब को लूट लेना चाहते हैं। अफसर और नियोजक की व्यवस्था के कांरण जमीन्दारों में विलासिता बढ़ा रही हैं।

4. **रंगे सियार का स्वभाव :-**

रायसाहब नीति और धर्म की बडी-बडी बातें कहते हैं, किन्तु बहुत बार पूरे तौर विरुद्ध आचरण करते हैं। मजदूरों को वे रोजगार ठीक देते नहीं। सत्याग्रह संग्राम में वे कौन्सिल की मेंबरी छोडकर जेल जाते हैं। इस पर असामियों को उन पर बडी श्रद्धा होती है। किन्तु असामियों के साथ कोई रियायत होती नहीं। आमदनी और अधिकार की मात्रा चलती ही रही। प्रेमचन्द यहाँ रायसाहब की चुनौती में कहते हैं, ''सिंह का काम तो शिकार करना है।

अगर, वह गरजने और गुर्राने के बदले मीठी बोल सकता है, तो उसे घर बैठे मनमाना शिकार मिल जाता, शिकार की खोज में उसे जंगल में भटकना न पडता।''

रामविलास शर्मा ने राय साहब के चरित्र का मूल्यांकन करते हुए लिखा है - ''रायसाहब उन हिंसक पशुओं में से हैं, जो गरज ने और गुर्राने के बदले मीठी बोली बोलना सीख गये हैं। शिकार तो अपनी जान से हाथ धोता ही है, लेकिन मीठी बोली सुनता हुआ अपाहिज हो कर गरजने और गुर्राने से सावधान होकर उस जंगली पशु से लडता हुआ नहीं।'' रायसाहब राष्ट्रवादी होते हुए भी हुक्काम से मेल-ज़ोल बनाये रखते हैं और उन्हें नजरें, डालियाँ आदि पहुँचाते। इस से रायसाहब के रंगे सियार का स्वभाव स्पष्ट होता है।

5. **व्यवहार कुशलता :-**

राय साहब बडे कामचालू और व्यवहार कुशल है। अपना काम निकालने के लिए वे खुशामद करते हैं, रिश्वत देते हैं और आवश्यकता पडने पर किसी को बाजार में पिटवा भी सकते हैं। वे जुरमाना वसूल करने में शंकालू नहीं होते। होरी का जुरमाना वसूल करने में शंकालू नहीं होते। होरी का जुरमाना वसूल करने में वे हिचकते नहीं। वे ओंकारनाथ के यहाँ पहुँच कर जुरामाना वसूल करने के मामले में उन्हें समझाते हैं और लालच दिखाते हैं।

रायसाहब में कीर्तिकामुकता, अधिकार मोह, प्रतिष्ठा की इच्छा आदि कमजोरियाँ भी है। कन्या का विवाह, ससुराल की जायदाद के लिए मुकद्दमा लडना और राजा सूर्यप्रतापसिंह के विरुद्ध चुनाव लडना आदि के कारण आर्थिक विषमता में फँस जाते है। लेकिन धीरे-धीरे सब में जीतकर होरा मेम्बर बनते हैं और राजत्व भी प्राप्त होता है।

6. **उपसंहार :-**

रायसाहब जमीन्दारी व्यवस्था के आदर प्राय हैं। वे जमीन को जानवरों की चराई के लिए छोडते हैं और किसी दाम पर भी उस जमीन को नहीं बेचते, वे सदा किसानों का ख्याल रखते हैं और पुरानी मर्यादा निभाते हैं।

होरी रायसाबह की पुरानी मर्यादा का आदर करता है। होरी के पुत्र गोबर की दृष्टि में रायसाहब किसानों के शोषक और धूर्तता का व्यवहार करते हैं। वह अपने पिता से कहता है, ''तो अपना इलाका हमें क्यों नहीं दे देते? हम अपने खेत, बैल, हल, कुदाल सब उन्हें देने को तैयार हैं। करेंगे बदला? यह सब धूर्तता है।''

मेहता रायसाहब के कार्यकलापों की निन्दा करते हैं। उनका कथन है – ''मुझे उने लोगों से जरा भी हमदर्दी नहीं है, जो बातें तो करते हैं कम्यूनिष्टों की सी, मगर जीवन है रईसों का सा, उतना ही विलासमय, उतना ही स्वार्थ से भरा हुआ।''

कुछ आलोचकों के अनुसार रायसाहब रंगे सियार अथवा हिंसक पशु है। किन्तु 'गोदान' उपन्यास के गहन अध्ययन से एवं प्रेमचन्द की लेखिनी का पूर्ण अनुशीलन करने से हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते है कि रायसाहब में जो दोष दिखाई दे रहे हैं, वे व्यक्ति के नहीं, बल्कि व्यवस्थागत हैं, ऐश – आराम एवं शोषण की निन्दा करते हैं।

अन्ततोगत्वा रायसाहब को अन्तर्मुखी होकर देखने से पाठकगण रायसाहब के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हैं। राय साहब के चरित्र के द्वारा जमीन्दारी जीवन का खोखला पन प्रकट होता है।

Lesson Writer

डॉ. शेख मौला अली

प्र. 7. 'गोदान' उपन्यास में 'मिस मालती' का चरित्र - चित्रण कीजिए।

रूपरेखा :-

1. *प्रस्तावना*
2. *बाहर से तितली और भीतर से मधुमक्खी*
3. *उच्छृंखलता और वाग्विदग्धता*
4. *दुनिया की दृष्टि में*
5. *नारीत्व की सुरक्षा*
6. *मालती और मेहता*
7. *उपसंहार*

1. प्रस्तावना :-

'गोदान' उपन्यास में 'मालती' अत्यन्त विशिष्ट तथा आकर्षक पात्र है। आद्यन्त वह कुतूहल और जिज्ञासा उत्पन्न करती है। भोग से त्याग की ओर और भौतिकता से आत्मैकता की ओर उसका चरित्र विकसित होता है। मालती पात्र के द्वारा उपन्यासकार प्रेमचन्द ने पाश्चात्य सभ्यता से बढ़कर भारतीय सभ्यता की महानता बताई है।

2. बाहर से तितली और भीतर से मधुमक्खी :-

मुंशीप्रेमचन्द ने मालती के बारे में लिखा है - ''मालती बाहर से तितली और भीतर से मधुमक्खी '' मालती इंगलैंड में डाक्टरी पढ़ कर आई है। नवयुग की वह साक्षात प्रतिमा है। कोमल गात पर चपलता कूट-कूट कर भरी हुई है। मेकअप में प्रवीण, चल की हाजिर जवाब, पुरुष मनोविज्ञान की अच्छी जानकार, आमोद-प्रमोद को जीवन का तत्त्व समझनेवाली, लुभाने और रिझाने की कला में निपुण। जहाँ आत्मा का स्थान है, वहाँ प्रदर्शन, जहाँ हृदय का स्थान है, वहाँ हाव - भाव, मनोद्गारों पर कठोर निग्रह जिनमें इच्छा या अभिलाष का लोप-सा होगा।

मालती के इंग्लैंड में पढ़ते समय समय पिता मिस्टर कौल बीमार होते हैं। कई साल से उनकी आर्थिक परिस्थिति बिगड जाती है। भारत लौटने पर सारे घर का भार मालती पर पडता है। सुबह से पहर रात तक वह दौडती है और चार - पाँच सौ रूपये कमाती है। उसी में दो बहनों की शिक्षा का प्रबन्ध करती है। साथ ही पिता के शराब और कबाब का भी रखती

है कहीं से कुछ न मिलने पर वह अपने बंगले पर प्रोनोट लिख कर एक महाराज से एक-दो हजार रुपये लेती है। मालती का बाह्य रूप तितली का है तो आन्तरिक रूप मधुमक्खी का है।

3. **उच्छृंखलता और वाग्विदग्धता :-**

इंग्लैंड में पढ़ने के कारण मालती पर पाश्चात्य सभ्यता का ज्यादा प्रभाव दिखाई देता है। वह अपने रूपाकर्षण, हाव-भाव, बनाव - सिंगार, श्रृंगार आदि से पुरुषों का ध्यान आकृष्ट करती है । नर-पुंगवों के बीच रह कर उनके बर्बर प्रेम का आनन्द उठाने के लिए उसका हृदय ललचा रहता है। उसके चारों ओर रसिकों का जमघट लगा रहता है। वह शराब और सिगरेट पीती है। मित्र - मंडली के मनोरंजन के लिए वह अपने रूपाकर्षण से, वाग्विदग्धता से संपादक ओंकारनाथ को शराब पिलाकर उसे मूर्ख बना देती है और एक हजार रुपये जीत लेती हैं पत्रकारों और संपादकों से उसे डर है और सिद्धान्तवादी पत्रों को देख कर वह भभक उठती है।

4. **दुनिया की दृष्टि में :-**

अपने रूपाकर्षण, हाव-भाव, बनाव-सिंगार, श्रृंगार आदि के कारण मालती दुनिया की दृष्टि में हल्की हो जाती है। संपादक ओंकारनाथ की दृष्टि में मालती के जीवन का पूरा विकास नहीं होता। मेहता मालती की उपमा नशीली शराब से देते हैं। वे कहते हैं - ''ऐसी औरत से मैं केवल मनोरंजन कर सकता हूँ, विवाह नहीं, गोविन्दी हुई परदे की आड से शिकार खेलनेवाली तथा रूप का बा[illegible] लगाकर रसिक पुरुषों को अपना गुलाम बनाकर रखनेवाली स्त्री समझती है।''

5. **नारीत्व की सुरक्षा :-**

बाह्य प्रदर्शन के भीतर मालती अपना नारीत्व सुरक्षित रखती है। अपने कर्त्तव्य भार को कुछ हल्का करने के लिए ही वह चहकती है और चमकती है। प्रेमचन्द के शब्दों में - ''उसका चहकना और चमकना इस लिए नहीं है कि वह चहकने और चमकने को ही जीवन समझती है, या उसने निजत्व अपनी आंखों में इतना बढ़ा लिया है कि वह चहकने और [illegible]कने को ही जीवन समझती है, या उसने निजत्व अपनी आँखों में इतना बढ़ लिया है कि जो कुछ करे, अपने लिए ही करे। नहीं, वह इसलिए चहकती और विनोद करती है कि इस से उसके कर्त्तव्य का भार कुछ हल्का हो जाता है।''

मालती के पिता की जबान बंद है और दूसरों की सहायत के बिना वे खडे नहीं हो सकते। उन्हें शराब और कबाब का प्रबन्ध करना है। बुद्ध माता है। विश्व विद्यालय में पढ़नेवाली बहनें हैं। उन सब की आवश्यकताओं को पूरा करना है और घर को निभाना है। साथ ही अपनी जरूरतें भी होती है। इसलिए उसे अधिक से अधिक धनार्जन की आवश्यकता है। इसी कारण धन कमाने के लिए वह अपनी डाक्टरी योग्यता के साथ - साथ अपने रूपाकर्ष और हावभाव का सहारा भी लेती है।

बाह्य विलासिता एवं स्वतन्त्रता के भीतर मालती का नारीत्व सुरक्षित है। खन्ना से वह स्पष्ट कहती.है, ''यह पुरुष प्रकृति का अपवाद नहीं, मगर यह समझ लो कि धन से आज तक किसी नारी के हृदय पर विजय नहीं पाई और न कभी पाएगी।''

6. **मालती और मेहता :-**

खन्ना मालती को पाना चाहता है। मालती मेहता की ओर आकृष्ट होती है। फिलासफर के सम्बन्ध में मालती की भावना है कि वे नारी को देख कर घर में छिप जाते हैं। फिर भी वह मन - ही - मन मेहता के व्यक्तित्व से प्रभावित होती है। शिकार में भी खन्ना को छोड कर मेहता के साथ जाना पसन्द करती है। मेहता नदी की तेज धार में बढ़ने लगते हैं। उन्हें देख कर मालती का हृदय आशंका से अधीर हो उठता है। वह स्वयं पानी में घंस पडती हैं। मेहता उसे अपने कंधे पर बैठा लेते हैं तो मालती पुलकित हो जाती है। वह यह जानना चाहती है कि उसके प्रति मेहता के मन में कौन - सी भावना है।

मालती धीरे - धीरे मेहता के योग्य एवं अनुकूल बनने लगती है। दुनिया क्या समझे, उसकी उसे कोई चिन्ता नहीं। किन्तु मेहता उसके बारे में क्या समझते हैं, उसकी चिन्ता है। वह उनके प्रेम और विश्वास को प्राप्त करने और उनके मनोराज्य की राणी बनने का प्रयत्न करने लगती है। मेहता की बातों का इस पर बडा प्रभाव पडता है। वह मेहता के मनोनुकूल चलना चाहती है। मेहता गोविन्दी के आद्रर्श पत्नीत्व की प्रशंसा करते हैं। तो मालती भी उसी तरह सेवा करना चाहती है। वह गाँवों में जाकर स्त्रियों को स्वास्थ्य सम्बन्धी सुझाव देती है।

मेहता भी मालती के साथ गाँवों में जाते रहते हैं। उन में प्रेम का भाव नहीं रहता है, केवल पुरुषत्व का भाव रहता है। यह जानकर मालती कहती है, ''तुमने सदैव मेरी परीक्षा ली, आँखों से देखा, कभी प्रेम की आँखों से नहीं। क्या तुम इतना भी नहीं जानते कि परीक्षा नहीं, प्रेम चाहता है। परीक्षा गुणों को अवगुण सुन्दर को असुन्दर बनाती है। प्रेम अवगुणों को

गुण बनाता है और असुन्दर को सुन्दर। मैं ने तुम से प्रेम किया है, तुम मुझे अस्थिर चंचल और न जाने क्या - क्या समझ कर मुझ से हमेशा दूर भागते रहे।'' मेहता कहते हैं, ''प्रेम सीधी - सादी गऊ नहीं खूँख्वार शेर है, जो अपने शिकार पर किसी की आँख भी नहीं पडने देता।''

मेहता के मुख प्रेम की उपर्युक्त व्याख्या सुनकर मालती को बडा धक्का लगता है और वह अन्य मनस्क हो जाती है।

7. **उपसंहार :-**

मेहता की आर्थिक स्थिति बहुत बिगड जाती है। वे मकान का किराया भी चुका न पाते। मालती उन्हें अपने बंगले में लाती है और उनका बजट संतुलित करती है। इतने पास रहते हुए भी मालती मेहता से दूर रहती है। मालती को समीप पाकर और उसके परिवर्तित रूप को देख कर मेहता का उसके प्रति आकर्षण बढ़ जाता है। गोबर के बेटे को चेचक होने पर मालती उसकी मातृवत् सेवा करती है। महेता उसकी सेवा से प्रसन्न होते हैं।

एक दिन मेहता मालती के सामने विवाह का प्रस्ताव रखते हैं तो मालती कहती है, ''मोह के बन्धन में पडने से मानवता का क्षेत्र सिकुड जायेगा। मित्र बन कर रहना स्त्री-पुरुष बनकर रहने से कहीं सुखकर है।''

मालती के इस उच्च विचार सुनकर मेहता आप्रतिभ हो उसके चरणों पर गिर पडते है और कहते हैं, ''तुम्हारा आदेश स्वीकार है मालती!''

मेहता और मालती दोनों एकात्मा होकर प्रगाढ़ आलिंगन में बंध जाते हैं। दोनों के नेत्रों से आँसुओं की धारा बहने लगती है।

Lesson Writer

डॉ. शेख मौला अली

(105HN21)

M.A. DEGREE EXAMINATION,
APRIL 2022.

First Semester

Hindi Paper V — SPECIAL STUDY OF AN AUTHOR –
PREMCHAND

Time : Three hours Maximum : 70 marks

विशेष अध्ययन – प्रेमचंद

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

($5 \times 14 = 70$)

1. (a) हिन्दी उपन्यास के उद्भव और विकास को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

(b) औपन्यासिक तत्वों के आधार पर "गोदान" की समीक्षा कीजिए।

2. (a) "गोदान" उपन्यास में प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

(b) "गोदान" उपन्यास की प्रमुख सामाजिक समस्या पर प्रकाश डालिये।

3. (a) हिन्दी उपन्यास के विकास में प्रेमचंद की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

(b) "सेवासदन" उपन्यास की कथा वस्तु पर प्रकाश डालिये।

4. (a) रंग भूमि उपन्यास में व्यंजित प्रमुख समस्यों का परिचय दीजिए।

अथवा

(b) रंग भूमि उपन्यास के प्रमुख पात्रों का चरित्र चित्रण कीजिए।

5. (a) किसी एक कहानी का तात्विक विवेचना कीजिए।

(i) गिल्ली डंडा

(ii) ईदगाह

(iii) स्वामिनी

(iv) बेटों वाली विधवा।

(b) किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिये।

(i) होरी

(ii) गोबर

(iii) सुमन

(iv) सूरदास

105HN21

ORIGINALITY REPORT

21%	21%	9%	5%
SIMILARITY INDEX	INTERNET SOURCES	PUBLICATIONS	STUDENT PAPERS

PRIMARY SOURCES

1	ia801201.us.archive.org Internet Source	10%
2	www.dailypioneer.com Internet Source	9%
3	Submitted to Pacific University Student Paper	1%
4	John Granger Cook. "Empty Tomb, Resurrection, Apotheosis", Mohr Siebeck, 2018 Publication	<1%
5	Lösch, Richard. "Entwicklung von Verfahren zur Eliminierung von Cluttersignalkomponenten bei einem Nahbereichsradarnetz", KLUEDO, 2011. Publication	<1%
6	Cohen, Yuval. "Fortunate Misfortune: A Discussion of the Moral Paradox", University of Haifa (Israel), 2021 Publication	<1%

7	F Tito Arecchi. "The physics of mental acts: coherence and creativity", Journal of Physics Conference Series, 06/01/2009 Publication	<1 %
8	Submitted to Ho Chi Minh City University of Transport Student Paper	<1 %
9	Ertuğrul, Ali. "Anadolu Selçukluları devrinde yazılan bir kaynak: Niğdeli Kadı Ahmed'ın el-Veledü'ş-şefîk ve'l-hâfidü'l-halîk'ı (Cilt I)", Dokuz Eylul Universitesi (Turkey), 2024 Publication	<1 %
10	B. Turker Ozalp. "Slider-bearing design with micro-machined wavy-cavity: Parametric Characterization of thermohydrodynamic-operation-scheme", Journal of Mechanical Science and Technology, 10/2006 Publication	<1 %
11	Hanoi Pedagogical University 2 Publication	<1 %
12	Koch, Manuel. "Integration of Graph Transformation and Temporal Logic for the Specification of Distributed Systems", Technische Universität Berlin, 2000. Publication	<1 %

13	Leonidas, Zampetakis. "Μεθοδολογία για την ανάπτυξη της επιχειρηματικότητας στο δημόσιο τομέα", Technical University of Crete (Greece) Publication	<1%
14	Chul-Ho Bae. "A study on the development of a web based urban transit reliability evaluation system", Journal of Mechanical Science and Technology, 01/2007 Publication	<1%

Exclude quotes	Off	Exclude matches	Off
Exclude bibliography	Off		